

**THE BOOK WAS
DRENCHED**

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_180727

UNIVERSAL
LIBRARY



कबीर सागर—
चतुर्थ खण्ड ।
बोध सागर

—
प्रथम भाग

जिसमें

ज्ञान प्रकाश, अमरसिंहबोध और
वीरसिंहबोध है ।

भारतपाथिक कबीरपंथी—

स्वामी श्रीयुगलानन्द (विहारी) द्वारा संशोधित ।

जिसको

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बम्बई

निज “ श्रीवेंकटेश्वर ” स्टीम् प्रेसमें
मुद्रितकर प्रकाशित किया ।

—
सन् १९७८ शके १८४३

सर्वाधिकार रक्षित हैं.

यह पुस्तक खेमराज श्रीकृष्णदासने बंबई खेतवाडी ७ वीं गली खंबाटा लैन निज
“ब्रीचकटेवर”स्टीम्-प्रेसमें अपने लिये छापकर यहीं प्रकाशित किया ।

बोधसागर प्रथमभागकी अनुक्रमणिका ।



इसमें तीन तरंग हैं जिनमेंसे प्रथम तरंग ज्ञानप्रकाश पृष्ठ ३६५ से आरम्भ होकर पृष्ठ ४५० पर समाप्त हुआ है ।

दूसरा तरंग अमरसिंह बोध है जो पृष्ठ ४५१ से आरंभ होकर पृष्ठ ४७६ पर समाप्त हुआ है ।

तीसरा तरंग वीरसिंह बोध है जो पृष्ठ ४५७ से आरम्भ होकर पृष्ठ ५१२ पर समाप्त हुआ है ।

अब तीनों तरंगकी विषयानुक्रमणिका नीचे देते हैं ।

ज्ञानप्रकाशकी अनुक्रमणिका ।

विषय.	पृष्ठ.	विषय.	पृष्ठ.
कबीर साहबका जिन्दा रूपसे मथुरामें धर्मदास साहबको प्रथमवार मिलना	५	लिखे भण्डारा करना और चौथीवार सद्गुरुका मिलना	... २७
कबीर साहबका गुप्त होजाना (धर्मदासजीका विरह)	... ९	वेष भत्ता वर्णन	... २७
छठे दिन कबीर साहबका धर्मदास साहबसे दूसरीवार मिलना	... १०	धर्मदासजीका सद्गुरुसे दीक्षा देनेकी प्रार्थना करना तथा रतनासे मिलना	२५
धर्मदासजीका गुरु रूपदासजीके निकट जाकर ज्ञान पूछना	... १६	धर्मदाससाहबका चौका आरती कराके गुरुमंत्र लेना	... ३०
धर्मदासजीका साहबसे मिलनेकी चिन्ता करना और सद्गुरुका जिन्दा रूपसे तीसरीवार दर्शन देना और धर्मदास साहबका रसोई बनाते हुए चौ-टीके जलनेसे दुखी होना और साहबको पहचानना	... १७	धर्मदास साहबका प्रतिमाके विषयमें प्रश्नकरना और सद्गुरुका रहनीबतलाना	३१
त्रिगुण जालका वर्णन	... १९	धर्मदासजीका अपने पिछले जन्मका हाल पूछना और सद्गुरुका बतलाना ।	३२
सत्यनामकी महिमा	... २३	सर्वानन्दकी कथा	... ३४
धर्मदाससाहबको सद्गुरुसे शिष्य करनेके लिये प्रार्थना और उत्तर	२५	आरती विधि	... ४६
कबीर साहबका तीसरीवार गुप्त होजाना और धर्मदास साहबका व्याकुल होना	२७	कबीर साहबका चौथीवार अन्तर्धान होना और धर्मदास साहबका व्याकुल होना और पांचवीवार फिर मिलना	... ५१
धर्मदास साहबका सद्गुरुसे मिलनेके		धर्मदासजीको सत्यलोकदिखाना	... ५३
		हंसरहनीवर्णन	... ५६
		पठित मूर्खका वर्णन	... ५९
		कलिजर देशका वृत्तांत	... ५९
		साधन वर्णन	... ६०
		समाप्ति	... ६१
		इति ।	

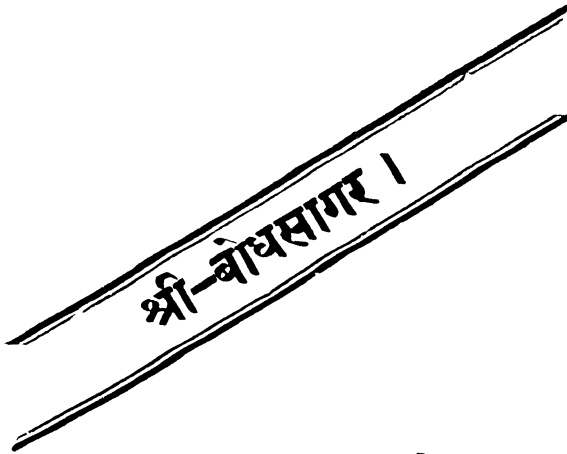
(४) बोधसागर प्रथमभागकी अनुक्रमणिका ।

विषय.	पृष्ठ.	विषय.	पृष्ठ.
अथ वमर्गसिंहबोधकी अनुक्रमणिका ।		राजाका रानीसे कबीर साहबको गुरुब- नानेकी बात चलाना और रानीका राजाको नीति समझाना ... ११	
धर्मदास साहबका सद्गुरुसे युगकमोदका वृत्तान्त पूछना और सद्गुरुका उत्तर ।		नामदेव आदि भक्तोंका कबीर साहबकी ईर्ष्या करना और उनका समाधान १२	
राजा अमर सिंहकी कथा आरम्भ ... ३		राजाका शिकार खेलने जाना । पानी न मिलनेसे व्याकुल होना और कबीर साहबका बाग प्रगट करके राजाका सेनासहित प्राण वचाना ... १३	
कबीर साहबका अमर पुरीमें जाना और अमर सिंहका मिलना । और कबीर साहबका गुप्तहोजाना फिर राजाकी बिकलताका वर्णन ... ५		राजाका कबीर साहबका शिष्य होना.... १८	
पांचदिन पीछे फिर कबीर साहबका राजा अमर अमरसिंहको मिलना ... ६		राजा वीरसिंहका गुरुस्तुति करना ... २१	
राजाका रानीको गुरुउपदेश लेनेको कहना । राजा रानीकी वार्तालाप ७		राजाका सत्यलोक डेजानेके लिये सत्य गुरुसे विन्ती करना ... २२	
रानीका साहबकी शरणमें आना ... ८		कबीर साहबका परलोकके मार्गका इत्तान्त राजासे कहना ... २३	
राजाको सत्यलोक देखना ... ९		राजाका अजर नाम चौका करानेके लिये ब्राह्मणीके घर वस्त्र लेने जाना उसका वस्त्र न देकर जगन्नाथको चढ़ाने जाना फिर वहांसे दर्शन न होनेके कारण कबीर साहबके पास आना २४	
नरकका वर्णन ... ११		अजर चौका वर्णन २७	
चित्र गुप्तसे वार्तालाप ... १८		कबीर साहबका मगहरमें बिजुली खांके घर शरीर छोड़ना और राजा बीर सिंहका फौज लेकर बिजुली खांसे युद्धको जाना ... २८	
बकुण्ठका वर्णन ... १९		पान देकर रानियोंको परलोक ले जानेके समयके मार्गका वर्णन । ... ३१	
राजाका कबीर साहबकी आज्ञासे चौका भारती करना २२		नाम महात्म ... २४	
राजारानीका सत्यलोक जाना ... २४		समाप्त ... ३५	
इति ।		इति बोधसागर प्रथमभागकी अनुक्रमणिका :	
अथ विरसिंहबोधकी अनुक्रमणिका ।			
कबीर साहबका काशीमें जाना और भक्तों के साथ वार्तालाप करना ... ५			
कबीर साहबका वेष स्वरूप देखकर वीर- सिंहका कबीर साहबके पास आना ... ७			
राजावीरसिंह और कबीर साहबकी वार्तालाप ... १०			

इति ।



भारतपयिक कबीरपंथी-
स्वामी युगलानन्दद्वारा संशोधित ।



खेमराज श्रीकृष्णदासने
बम्बई

निज "श्रीवेकटेश्वर" स्टीम प्रेसमें
छापकर प्रकाशित किया ।

संवत् १९७८ शके १८४३.

सर्वाधिकार रक्षित है.

सत्य नाम ।



श्री कवीर साहिव ।



सत्यसुकृत, आदि अदली, अजर, अचिन्त, पुरुष,
मुनीन्द्र, करुणामय, कवीर, सुरतियोगसंतायन,
धनीधर्मदास, चूरामणिनाम, सुदर्शन नाम, कु-
लपति नाम, प्रमोध गुरुबालापीर, केवल नाम,
अमोल नाम, सुरतिसनेही नाम, हक्क नाम,
पाकनाम, प्रकट नाम, धीरजनाम, उग्र
नाम, दया नाम की, दया वंश-
व्यालीसकी दया ।

श्री बोधसागर ।

अथ प्रथमस्तरंगः ।

धर्मदासबोध-ज्ञान प्रकाश ।

सत्यसुकृत सतगुरु सतनामा । सत्य पुरुष सन्तन्न सुखधामा ॥
सत्य पुरुष सतलोक निवासी । दुखनाशक अविचल सुखरासी ॥
अभी अमान सो सत्य कहाये । अभै विद्यमान कहि गाये ॥
अविगति अलख अनाम सरूपा । अगह अडोल अबोल अनूपा ॥
अजर अजावन सो निःस्वादी । निःकामी निरमोह अनादी ॥
निःक्रोधी निरवैर निशङ्का । गुणातीत निर्द्वन्द्व निकलङ्का ॥

धर्मराय सिर अञ्जन सोई । आपुहि तात मातु नहिं कोई ॥
 नहीं तीनि पाँच तनुधारे । रहैं अमान नरकसो न्यारे ॥
 ताके निशि दिन शिर नाऊँ । गुप्त प्रकट वाको गुण गाऊँ ॥
 उनके ढिग सो हम चलि आये । जिव निस्तारन हमहिं पठाये ॥
 सत्यपुरुष सत्यगुरु सो आहीं । गुरुगम सत्यगुरु नाम समाहीं ॥
 सत्यगुरु ध्यान जाहि पढ़ैं होई । सो हंसा नहिं जाहिं बिगोई ॥
 सत्यगुरु शब्द गहै सो हंसा । भेटे जन्म मरण भौ संसा ॥
 छंद—सत्यनाम सतगुरु ध्यान सतपद वासी हंस हो ॥
 सत्यलोक अशोक निमोह पहुँचे गहै अविचल कन्त हो ॥
 जीव लहै सुमिरण सत्य बीरा अंक अविचल जो गहै ॥
 सत्यनाम सुमिरण काल डरपै मुर्छित यम न्यारा रहै ॥
 साखी—कहों सँदेश सत्य पुरुषको, समझत रंक नरेश ॥
 कहैं कबीर सो अमर हो, जो गह मम उपदेश ॥
 सोरठा—चीन्हहु कितिम आदि, सत्य असत्य विचारहु ॥
 छांडि देहु बकवादि, खोजहु अविचल पुरुष कहँ ॥
 चौपाई ।

यहि जग देखैं अनकठ रीती । तजहीं साँच झूठ सो प्रीती ॥
 जो धोखा तेहि साँचकै मानै । सत्य सार तेहि नहिं पहिचानै ॥
 आदि ब्रह्म कहँ खोजहि नाही । कृत्रिम कला जो सेवहिं ताहीं ॥
 निज स्वामीके मत ना गहहीं । जरा मरण घर संकट सहहीं ॥
 जो रक्षक तेहि गहै न कोई । जो भक्षक तेहि धावहिं लोई ॥
 कर्मभर्म वसि तीर्थ नहाहीं । पुण्य पाप वसि आवहिं जाहीं ॥
 दयाहीन नर पढहि पुराना । पढिगुणिके अरथावहिं ज्ञाना ॥
 अन्धा अगुवा तिहुँपुर माहीं । बहु अन्धा तेहि पाछे जाहीं ॥
 अगुआ सहित कूप महाँहीं । कासो कहँ कोइ बूझै नाही ॥

छन्द-गुरुज्ञान हीन मलीन पण्डित शब्द शास्त्र पढ़ै घनो ॥
 अगम निगम विरञ्चि प्रमोर्धे सकल जग यहि सखा बनो ॥
 जो काल जीवनको सतावै तासु भक्ति दढ़ावहीं ॥
 विष्णु आदिक शिवसनकादिअजसुरकालकेगुणगावहीं ॥
 साखी-बिन बूझै करुआइ अस, लगिहै वचन हमार ॥
 जब बूझै तब मीठि हो, कहै कबीर पुकार ॥
 सोरठा-जस नीम जग माहिं, नासि व्याधि करु दूरि प्रथम ॥
 तेहि दुख चम्पै नाहिं, जो चाखै मूरि अमर ॥
 धर्मदास वचन-चौपाई ।

अहो साधु तुम को धौं अहहू । अनकट बात बहुत तुम्हकहहू ॥
 ताते तब नहिं बोल बढ़ायो । जाते हरि सेवा चित लायो ॥
 विष्णु इष्ट देवन्ह के देवा । तुम्ह तेहि कहहु करहिं यम सेवा ॥
 विष्णु ते अधिक और कोई नहीं । जमरा विष्णु के चेरा आहीं ॥
 सतगुरु वचन ।

अहो धर्मनि जो ऐसन कहहू । तोहम कहै सो चित महँ धरहू ॥
 विष्णु कथा तोहिं कही सुनाओं । अगम अगोचर ज्ञान चिन्हाओं ॥
 तुम्ह भाषो यह वचन सँजोई । विष्णु ते अधिक और नहिं कोई ॥
 हमसँ शब्द कहँ देखहु साहू । अपनो हृदया जनि कदराहू ॥
 आपुहि विष्णु धनी जो रहेऊ । तो किमि योनि जठरदुख सहेऊ ॥
 जो यम होत विष्णु के दासा । तो नहिं करते विष्णु गरासा ॥
 सेवक हाथ न स्वामिहि घालै । जो विगरेँ तौ होइ तेहि कालै ॥
 ब्रह्मा विष्णु शिव सनकादिक । मुनि मुनीश नारद शेषादिक ॥
 सब कहँ यम धरि करहि अहारा । लूटहि सबहि काल बरियारा ॥
 तीनिलोक जेते कोई आहे । काल निरञ्जन सब कहँ डाहे ॥
 तुम खोजहु अब सो घर भाई । जेहि घर यम सो बाचहु जाई ॥
 अहो साहु के सूत सयाना । एती कहेऊ सब सुनेहु पुराना ॥
 पढि पुराण नहिं समझेहु भेता । बिनु जाने भर्महु आचेता ॥

ब्रह्मा गये असंख सिराई । विष्णु कोटि यमरा धरि खाई ॥
चाँद औ सूर्य तारागण लोई । कहै कबीर फिर रहे न कोई ॥

धर्मदासवचन—चौपाई ।

अहो माधु अचरज तव वाता । कहे न बने तुमहिं विख्याता ॥
गीता भागवतपुस्तकबहुताना । निसिदिन सुनो जपों भगवाना ॥
विप्र भेष औ छव दर्शन कै । महिमा सबें कहैं विभुवनकै ॥
सबै विष्णुकै भक्ति दृढ़ावैं । त्रय देव सब श्रेष्ठ बतावैं ॥
तुम खण्डहु हरि और न कोई । अहो साधु यह अचरज होई ॥

सतगुरु वचन ।

छन्द—सुनु सन्त सुबुद्ध सयान सुनि ज्ञान हृदय विचारहू ॥
गहि शब्द परख करि हिये मम बानि निरुआरहू ॥
सो कहत वेद बहु विविधि पुराण त्रिगुण तेरा पार धनी ॥
यह मायाजाल है जगत फन्दा त्रिविधि काल कला बनी ॥
साखी—त्रिगुण ध्यान ते रहित नहीं; सुनहु सन्त चित लाय ॥
अस्थिर घर तब पावई, चौथे पदहिं समाय ॥
सोरठा—चौथापद निरबान, पुण्य भाग ते पाइये ॥
कहैं कबीर प्रमान, सत्य शब्द बिनुनहि तरै ॥

धर्मदास वचन—चौपाई ।

हेसाहेब हमसे भल कहहू । तिहुँ पुर प्रलय कहां तव रहहू ॥
तीन देव सब परलय तर आई । तुम कौने विधि बाँचहु भाई ॥

सतगुरु वचन ।

अहो सन्त हम तहाँ रहाहीं । यम प्रवेश जहँ सपनेहुँ नाहीं ॥
जाके डर कम्पत यमराई । अहोसन्त हम ताको गुण गाई ॥
तीनि लोक यह परलय होई । चौथा लोक सुख सदा समोई ॥
तीन देवके पिता निरञ्जन । ते यम दारुण वंशके अञ्जन ॥

सवालाख जिव नित सो खाहीं।सुरनर मुनि कोइ छाडैंनाहीं॥
 सत्यपुरुष सत्य लोक निवासी।सकलजीवकेपीवअविनासी॥
 तिन्ह पुनि षोडश सुत निर्माया । षोडशमें एक कालसुभाया॥
 पुनि तेहिमहँ एक कालकहाया।ज्योति स्वरूपनिगअनराया॥
 जाकहँ नाहि सोइ यम जाना।धूर्तमता तिनिलोकमहँआना॥
 एक अण्ड दीन्हा तिनलोका । निरंकारहै निष्कामअशोका॥
 निरंकार तीनि सुत उपराजू । आपु गुप्त पुत्रन दियराजू ॥
 तीनिहुँ तीनिलोक ठगिराखा। आपनआपन महिमाभाखा॥
 अरुझिरहा जिवतिरगुन फाँसा। भूलि परानिज घर तबनासा॥
 जीवन्ह काल बहुत सन्तावै । बार बार यम जीव नचावै ॥
 सत्य पुरुष तब मोहि पठाये।जिवमुक्तावनहमहिंचलिआये॥

धर्मदास वचन ।

हे साहेब कछु पृछौ तोही । जो पृछहुँ सो भाषहु मोही ॥
 निरङ्कार निरंजन राई । धूर्तमता तिन्ह काकिय भाई ॥
 जाते इन उहां रहै ना पाई । सो चरित्र मोहिं वरणि सुनाई ॥

सतगुरु वचन ।

अहो सन्त जो पृछहु मोहीं । समुझहु चरित्र बुझावों तोहीं॥
 सत्य पुरुष सुत षोडशकीन्हा।अष्टंगीनएककन्यारचिलीन्हा॥
 सो कन्या इन्ह कीन्ह गरासा । ताते भौ यहि लोक निकास॥
 पुरुष दरश इन्ह बहुरि न पावा।तीनि लोक महँ आनि रहावा॥
 एक अण्डसत्यपुरुषतेहिदीन्हा।अशंखअण्डलोकमहँकीन्हा ॥
 पुरुष रूप का वरणौ भाई । मोसो वरणत वरणि न जाई॥
 तेहि साहेब काहौं शठिहारा । जीव सुकाजको करोंपुकारा॥
 जो समुझे सुनि हेली मोरी । काटौं ताकी कर्मकी डोरी ॥

धर्मदासका विरह ।

यहि कहिगुप्त भये प्रभु राई । धर्मदास महि खसेमुझाई ॥

विकल भये आवे नहिं स्वासा । हम हिछाँडि कहँगयेउदासा ॥
जो मैं जनतेउँ होइ विछोही । पलकनलइतों निरखततोही ॥
छन्द-भोहिं काह जानि दरश दिये प्रभु जुदा पुनि काहे भये ॥

छिन पलक देन विलम्ब नहिं कौन दिशा गवननकिये ॥
बहुछोभ होत न जात विरह मन विकल धीरज नाधरे ॥
जमुनातटखड़े झखहिं जिमि पिया वियोगीभवनमुछितपरे
माखी-शोच हृदया रैनदिन, भोजन भवन न भाव ॥
बडे भाग्य सो मिले प्रभु, बिछुरे कबहुँ भेटाव ॥
मोरठा-करत मोच मन भाव, सुख सम्पत न सोहावई ॥
मोहिं चैन नहिं आव, जौं लगि चरण न देखिहौं ॥
छठें दिन कबीर साहेबका फिर मिलना-चौपाई ॥

दिवस पाँचजवएसहिबीता । निपटविकलहियव्यापेउचिन्ता ॥
छठ्यें दिन अस्नानकहँ गयऊ । करिअस्नानचितवनकियऊ ॥
पुहुपवाटिका प्रेम सोहावन । बहुशोभा सुन्दर शुठिपावन ॥
तहाँ जाय पूजा अनुसार । प्रतिमा देव सेव विस्तार ॥
खोलि पेटारी मूर्ति निकारी । ठाँव ठाँवधरि प्रगट पसारी ॥
आनेउ तोरि पुहुप बहु भाँती । चौकाविस्तारकान्हीयहि भाँती
भेष छिपाय तहाँ प्रभु आये । चौका निकटहिं आसन लाये ॥
धर्मदास पूजा मन लाये । निपट प्रीतिअधिकचितचाये ॥
मनअनुहारि ध्यान लौलावई । कहि कहि मंत्र पुहुपचटावई ॥
चन्दनपुष्पअच्छतकर लेहीं । निमित होय प्रतिमा परदेहीं ॥
चवर डोलावहिं घण्ट बजायी । स्तुति देवकी पढेंचित लायी ॥
करि पूजा प्रतिमद्विशिरनावा । डारि पेटारी मूर्ति छिपावा ॥

सतगुरु वचन ।

अहो सन्तयह का तुम करहूँ । पौवा सेर छटंकी धरहूँ ॥
केहिकारण तुम प्रगट खिडायहु । डारि पेटारी काहे छिपायेहु ॥

धर्मदास बचन ।

बुद्धि तुम्हार जानि नहि जाई । कस अज्ञानता बोलहु भाई ॥
हम ठाकुर कर सेवा कीन्हा । हमकहँ गुरुसिखावन दीन्हा ॥
ताकहँ सेर छटंकी कहूँ । पाहन रूप ना देव अनुसरहूँ ॥
सतगुरु बचन ।

अहो संत तुम नीक सिखावा । हमरे चित यक संशय आवा ॥
एक देव सम सुनेउ पुराना । विप्रन कहे ज्ञान सुनिधाना ॥
वेद वाणि तिन्ह मोहि सुनावा । प्रभुकै लीलासुनि मनभावा ॥
कहे प्रभू वह अगम अपारा । अगह गहे नहि आव अकारा ॥
सुनेउँ शीश प्रभुकेर अकाशा । पगपताल तेहि अपर निवाशा ॥
एकै पुरुष जगतकै ईसा । अमितरूपवह लोचनअमीसा ॥
सो कितपौ तिन्हमाहि समाहीं । अहो सन्त यह अचरज आहीं ॥
औ गुरुगम्य में सुना रे भाई । अहैं सङ्ग प्रभु लखौ न जाई ॥
अहो सन्त मैं पूँछहुँ तोहीं । बात एक जो भाषो मोहीं ॥
यहि घटमहँको बोलत आही । ज्ञानदृष्टि नहिसन्त चिन्हाही ॥
जौ लगि ताहि न चीन्हहुँ भाई । पाहन पूजि मुक्ति नहि पाई ॥
कोटि कोटि जो तीर्थ नहाओ । सत्यनाम विनुमुक्ति न पाओ ॥
को तुल्य को तव को घट माही । सन्तो चीन्ह वेगि तुम ताही ॥
सर्व मई औ सबते न्यारा । सोखेलै यह खेल रिसाला ॥
जो घरवा में बोलै भाई । काहि नाम तेहि कहहु बुझाई ॥
किन सुन्दर यह साज बनाया । नाना रंग रूप उपजाया ॥
ताहि न खोजहु साहु के पूता । का पाहन पूजहु अजगूता ॥
धर्मदास सुनि चकित भयउ । पूजापाति बिसरि सबगयउ ॥
एक टक मुख जो चितै रहाई । पलको सुरति ना आनौ जाई ॥
प्रिय लागै सुनि ब्रह्मका ज्ञाना । विनयकीन्ह बहुप्रीतिप्रमाना ॥

धर्मदास वचन ।

अहो साहब तब बात पियारी । चरण टेकि बहु विनय उचारी॥
 अहो साहब जस तुल्य उपदेशा । ब्रह्मज्ञान गुरु अगम सँदेशा ॥
 छठ्यें दिवस साधु एक आये । प्रीय बात पुनि उनहु सुनाये ॥
 अगम अगाधिवात उन भाखा । कृत्रिम कला एकनहि राखा ॥
 नीरथ व्रत त्रिगुण कर सेवा । पाप पुण्य वह करम करेवा ॥
 सो सब उन्हहि एक नहिं भावै । सबते श्रेष्ठ जो तेहि गुण गावै ॥
 जस तुम कहेहु विलोइ विलोई । अस उनहूँ मोहिं कहा सँजोई ॥
 गुप्त भये पुनि हम कहँ त्यागी । तिन्ह दरशनके हम वैरागी ॥
 मोरे चित अस परचै आवा । तुम्ह वै एक कीन्ह दुइ भावा ॥
 तुम कहाँ रहो कहो सो बाता । उन्ह साहब कहँ जानहु ताता ॥
 केहि प्रभुकै तुम सुमिरण करहु । कहहु विलोइ गोइ जनि धरहु ॥

सतगुरु वचन ।

अहो धर्मदास तुम सन्त सयाना । देखौं तोहि मैं निरमल ज्ञाना ॥
 धर्मदास मैं उनकर सेवक । जहँहि सो भव सार पद देवका ॥
 जिन कहा तुमहिं अस ज्ञाना । तिन साहेबकै मोहिंसहि दाना ॥
 वे प्रभु सत्यलोकके वासी । आये यहि जग रहहि उदासी ॥
 नहिं वो भग दुवार होइ आये । नहिं वो भगमाहिं समाये ॥
 उनके पाँच तत्व तन नाहिं । इच्छा रूप सो देह नहि आहिं ॥
 निःइच्छा सदा रहँहीं सोई । गुप्तरहहिं जग लखै न कोई ॥
 नाम कबीर सन्त कहलाये । रामानन्द सो जान सुनाये ॥
 हिन्दू तूँक दोउ उपदेशें । मेटैं जीवन केर काल कलेशें ॥
 माया ठगन आइ बहु बारी । रहैं अजीत माया गइ हारी ॥
 तिनहि पठावा तोहि पाही । निश्चय उन्हसेवक हम आही ॥
 अहो सन्त जो कारज चहहु । तो हमार सिखावन गहहु ॥
 उन कर सुमिरण जो तुम करिहौ । एकोतरसौ पुरुषा लै तरिहौ ॥

वो प्रभु अविगत अविनाशी । दास कहाय प्रगट भे काशी ॥
 भाषिन निरगुण ज्ञान निनारा । वेद कितेब कोइ पाव न पारा ॥
 तीनलोक महँ महतो काला । जीवन कहँ यम करै जँजाला ॥
 वे यमके सिर मर्दन हारे । उनहि गहै सो उतरै पारे ॥
 जहाँ वो रहि कालतहँ नाहीं । हंसन सुखद एक यह आहीं ॥

धर्मदासवचन ।

अहो साहब बलिबलि जाऊँ । मोहिं उनके सँदेश सुनाऊँ ॥
 मोरे तुम उनहीं सम भाई । तुम वै एक नाहिं विगराई ॥
 नाम तुम्हार काह है स्वामी । सो भापहु प्रभु अन्तर्यामी ॥

सतगुरु बचन ।

धर्मनिनाम साधु मम आही । सन्तन माँह हम सदा रहाही ॥
 साधूसंगतिनिशिदिनमनभावै । सतगुरु ज्ञान साधु मिलिगावै ॥
 जोजिव करै साधु सेवकाई । सोजिव अति प्रिय लागेभाई ॥
 हमरे साहिबकी ऐसन रीती । सदा करहिं साधुनसोप्रीती ॥
 जो जिव उन्हकर दिखालेहीं । साधू सेव सिखावन देहीं ॥
 जीव दया पर आतम पूजा । सद्गुरु भक्ति देव नहिं दूजा ॥
 सद्गुरु सङ्कट मोचक आहीं । निरगुण भक्ति छुवै यम नाहीं ॥
 छन्द—है आपु सत्य कबीर सद्गुरु प्रगट कहु तुम सना ॥

सत्यनाम भक्ति दृढावहिं दया क्षेम निश्चल मना ॥

मन कर्म भर्म अबाट परिहरि बाट घरको देतहैं ॥

जो शीश अरपे भव तरे सार यह जेहि लेतहैं ॥

साखी—सुनहु सँत मति धीर, हृदया करहु विवेख ॥

हो ज्ञाता परखहु हिये, संत असंतकी रेख ॥

सोरठा—जीवन यम धरि खाय, सत्यनाम जाने बिना ॥

वाँचै एक उपाय, सत्य कबीर कहि भव तरे ॥

धर्मदासवचन—चौपाई ।

अहोसाहबतुम्हअविगतिअहहू।अमृतवचनतुमनिश्चयकहहू॥
हे प्रभु पूछेउ बात दुइ चारी । अब में परिचय भेद विचारी॥
मो तो हम नहिंजानहिं स्वामी। तुम्ह कहहु प्रभु अंतरयामी॥

सतगुरु वचन ।

अहो धर्मदासतुम्हभल यहभाखो।कहोसोजोप्रतीतितुमराखो॥
अहहु निगुरा किगुरुकिहुँभाई । तौन बात मोहि कहहु बुझायी॥

धर्मदास वचन ।

हे सामर्थ्य गुरु हमतौ कीन्हा । यह परिचे गुरु मोहिन दीन्हा॥
रूपदास विठलेश्वर रहहीं । तिनकर शिष्यसुनहुँहमअहहीं॥
उन मोहिं इहे भेद समुझावा । पूजहु शालिग्राम मन भावा ॥
गया गोमती काशि परागा । होइ पुण्य शुद्धजनमअनुरागा॥
लक्ष्मीनारायणशिलाकैदीन्हा।विष्णुपंजरपुनि गीताचीन्हा ॥
जगन्नाथ बलभद्र सहोद्रा । पञ्चदेव औरो योगीन्द्रा ॥
बहुतैं कही प्रमोद दृढाई । विष्णुहिंसुमिरिमुक्तिहोइभाई॥
गुरुके वचन शीश पर राखा । बहुतक दिन पूजा अभिलाखा॥
तुम्हरी भेष मिले प्रभु जबते । तुव बानी प्रिय लागी तबते ॥
वे गुरु तुम्हहीं सतगुरु अहहू । सारभेद मोहीं प्रभु कहहू ॥
तोहरै दास कहाउब स्वामी । यमते छोडावहु अन्तरयामी॥
उनहुँ कर नाहीं निन्द करावै । अस विश्वास मोरे मन आवै॥
वह गुरु सर्गुण त्रिगुण पसारा । तुमहौ यमते छोडावनद्वारा ॥

सतगुरु वचन ।

सुनु धर्मनि जो तव मन इच्छा । तौ तोहिं देउँसार पद दिच्छा॥
तुमअब निज भवन चलि जाऊ । गुरु परीक्षा जाइ कराऊ ॥
जो गुरु तुम्हें न कहैं सँदेशा । तब हम तुम्हकहँ देबउपदेशा॥
हमहुँ जाहिं सतगुरु पहुँ भाई । तुम्हरीप्रीतिअबउनहिंसुनाई॥

धर्मदास वचन ।

हे साहेब एक आज्ञा पावों । दया करो कछु प्रसादलै आवों ॥

मतगुरु वचन ।

हे धर्मदास मोहिइच्छा नाही । क्षुधा न व्यापै सहज रहाहीं ॥

सत्यनाम है मोर अधारा । भक्ति भजन सतसंग सहारा ॥

धर्मदास वचन ।

अहो साहेब जो अन्न न खाहू । तो मोरे चितकर मिटे नदाहू ॥

सतगुरु वचन ।

तुम्हें इच्छा तो ल्यावहु भाई । अन्ते लेइ पाइब हमजाई ॥

धर्मदास उठि हाट सिधाये । बतासा पेडा रुचि लेआये ॥

आनि धरेउ आगे प्रभुकेरा । विनय भाव कीन्ह बहुतेरा ॥

अहो माहु अब अज्ञा देहू । गुरु पहुँ जाब आशिप लेहू ॥

धर्मदास वचन ।

करिदण्डवत धर्मनि करजोरी । अबधौं सुदिन होइ कब मोरी ॥

तेहि दिनसुदिन लेखबप्रभुराई । जेहिदिन तुव पगुदरशन पाई ॥

हम कहँ निज चेगकरिजानो । सत्य कहौं निश्चयकरिमानो ॥

आशिप देप्रभु चले तुरन्ता । अबिगतिलीलालखेकोअन्ता ॥

धर्मदास चितवहिं मगु ठाढो । उपजा प्रेम हृदय अति गाढो ॥

छंद-विलखिलोचनजबप्रभुअन्तरभयेतबहींचितअतिखरभरे ॥

चक्षुवारिधि प्रबल प्रवाहभूव हियधीरज तनिको ना धरे ॥

धरि स्वास आसविश्वास मिलनबहुरिजोभवनसिधायऊ ॥

गिरहिं सेजविथा विकलहोइउर विरह अतिदुखछायऊ ॥

साखी-भोजन क्षेम मलीन तन, बसन विभेष बनाइ ॥

रैन दिवस छिन कल नहीं, जहँतहँ बैठें जाइ ॥

सोरठा-मिलहिं जो भेष अनेक, पूछहिं तेहि संदेश पुनि ॥
 होय न चित महुँ एक, यक सम बचन न भावई ॥

धर्मदासका गुरुरूपदासजीके निकट जाकर ज्ञान पूछना ॥

धर्मदासवचन-चौपाई ।

धर्मदास चलि भो गुरुपाहाँ । रूपदास कर आश्रम जाहाँ ॥
 पहुँचे जाइ गुरुके धामा । होइ आर्धनतबकीन्हप्रणामा ॥
 तुम गुरु देव शिष्यहमआहीं । परचे ज्ञान कहहु मोहि पाहीं ॥
 जीव मुक्त कौन विधि होई । तन छूटे कहँ जाय समोई ॥
 (जिवकर मुक्ति कैसे होइभाई । पारब्रह्म सो कहाँ रहाई ? ॥)
 आदि ब्रह्म सो कहँवा रहाही । घट महुँ बोले कौन सो आही ॥
 ताकर नाम कहो हम पाही । घट में बोले सो कस आही ॥
 हम को हैं घट को होई । जग करता प्रभु कहाँ समोई ॥

गुरुरूपदासवचन ।

धर्मदास तुम भयो अजाना । को सिखयो तोहि अस ज्ञाना ॥
 सुमिरहु रामकृष्ण भगवाना । ठाकुर सेवा कर बुधिवाना ॥
 विष्णुपंजरओ लक्ष्मिनरायन । प्रतिमा पूजन मुक्ति परायन ॥
 मन वच सुमिरहु कुञ्जविहारी । रहै वैकुण्ठ सोइ वनवारी ॥
 पुरुषोत्तम पुरि वेगि सिधाओ । जगन्नाथ परसो घर आओ ॥
 गया गोमती काशीथाना । तीरथ नहाय पुण्य परधाना ॥
 निराकार निर्गुण अविनाशी । ज्योति स्वरूप शून्यका वासी ॥
 ताहि पुरुषकर सुमिरहु नामा । तन छूटे पहुँचहु हरिधामा ॥

धर्मदास वचन ।

हो गुरुदेव पूछो यक बाता । क्रोध करि कहहु जनि ताता ॥
 जीव रक्षक सो कहाँ रहाही । निराकार जिव भक्षक आही ॥
 लक्षजीव नित खाय निरंजन । तिया सुत ताहि करैबहुगजन ॥
 तीनोदेव पडे मुख काला । सुरनरमुनि सबकरै विहाला ॥

नर बपुराकी कौन चलावै । कौनी ठोर जीव सचुपावै ॥
 तीनि लोक वैकुण्ठ नशायी । अस्थिरघरमोहिं देहु बतायी ॥
 पापपुण्य भ्रम जाल पसारा । कर्मबन्ध भरमे संसारा ॥
 किरतम भजि जोइन नहिं छूटै । सत्यनाम बिनुयम धरि लूटै ॥

रूपदास वचन ।

अहो धर्मदासहम चक्रितहोहीं । यहकछुसमुझिपरैनहिंमोहीं ॥
 तीनि लोकके कर्ता जोहै । तेहि भाषत हौ जमरा सोहै ॥
 ब्रह्मा विष्णु महेश गोसाई । तुम्हतेहि कहहुकालधरिखाई ॥
 तीनि लोकमें वैकुण्ठहिं श्रेष्ठा । सोसब तुम्ह मानहु निःकृष्ठा ॥
 तीरथ व्रत अरु पुण्य कमाई । तुम यमजाल ताहि ठहराई ॥
 और अधिक मैं कहा बताऊँ । जो जानों सो नहीं दुराऊँ ॥
 जिन्हतोहिअसबुद्धिदियोभाई । तिनहीं कहँ तुम सेवहु जाई ॥

धर्मदास वचन ।

धर्मदास विनवैं कर जोरी । चूक छिठाई बक्सहु मोरी ॥
 हम तेही पद अब सेवैं जायी । जिन्हयहअगममोहिबतायी ॥
 तुम हो गुरु उन सतगुरुमोरा । उन हमरे मन मैगल तोरा ॥
 तुम्हहैगुरु वो सतगुरु मोरा । उन हमार यमफन्दा तोरा ॥
 तुम्हैगुणकीन्हअभक्ष्यछुडावा । उनमोहिअलखअगम्यलखावा ॥
 धर्मदास तब करी प्रणामा । मथुरा नगर पहुँचे निजधामा ॥
 केतिकदिन यहिभाँती गयऊ । धर्मदास मन चिन्ता भयऊ ॥
 केतिक दिवसयहिविधिबीता । धर्मदास चित बाढी प्रीता ॥
 बहुत दिवसभो प्रभु नहिं आये । कीधौं केहि सेवकविलमाये ॥
 एक दिवस प्रभु ध्यान लगाय । क्षोभित चित प्रसाद बनाय ॥
 बढी प्रीति मन बहु बिरहावा । सुरति सनेह प्रसाद बनावा ॥
 जिन्दारूप धरी प्रभु आये । वृक्ष एक तर आसन लाये ॥
 आसन अधर देह नहिं छाया । अविगति लीला गुप्त रहाया ॥

इत चौका महँ अस भो भाई । बहु चिउँटी चूल्हे झरकाई ॥
हरि हरिकरि धर्मनि अकुलाने । महापाप लखिमनहिं भुलाने ॥
ततक्षण धर्मनि जिन्दहि हेरा । आये प्रसाद लेहु यहि बेरा ॥
जिन्दा आय ठाढ़ पुनि भयऊ । कर प्रसाद ले चिन्तवन कियऊ ॥
धर्मदास दीन्हेउ परसादा । तब जिन्दा पुनि कीन्ह समादा ॥

जिन्दा वचन ।

घात कियउ तुम जीव अनेका । सो प्रसाद ले मम शिरटेका ॥
धर्मदास वचन ।

जीव घातसुनि अचरज माना । हो जिन्दा तुम्ह कैसे जाना ॥
कवन जीव हम कीन्ही वाता । सो समुझाइ कहो मोहिं बाता ॥
जिन्दा वचन ।

अहो साहु कस धरहु छिपायी । चिउँटी चूल्हा बहुत जरायी ॥
सुनि धर्मनि चित संशय आने । यहको आहि हृदय अनुमाने ॥
अगुन सगुन चित करें बडाई । मनही मन बहु अचरज पाई ॥
भात सबै चिउँटी तब भयऊ । बहु संशय धर्मनि मनठयऊ ॥
सबै भात चिउँटी होइ बीता । बहुत संदेह धर्मनि हिय कीता ॥
धर्मदास वचन ।

हो जिन्दा में अचरज भयऊँ । लीला देखि थकित होय गयऊँ ॥
हो जिन्दा में पुछत सकाऊँ । दया करि तृष्णामोरि बुझाऊँ ॥
चिउँटी सही जरी प्रभु हमते । सो अदृष्टि बहु अन्तर तुमते ॥
सो कैसे जानेहु तुम ताता । औ प्रसाद चिउँटी होइ जाता ॥
कौतुक देखि अचरज मुहि आवा । यह लीला तै जानि न पावा ॥
जिन्दा वचन ।

धर्मनि यह सतगुरु की लीला । धन्य सतगुरु जिन्ह रूयाल करीला ॥
जानहु सतगुरु नाम प्रतापा । भयो पपील सरजिवगत पापा ॥
सतगुरु नाम सुनत सुखमाना । धर्मदास हिय हरष समाना ॥

धर्मदास वचन ।

जोरि पानि में पूछौं स्वामी । कहो कृपा करि अन्तरयामी॥
अहो साहेब नाम क आहीं । परचै नाम कहो मोहिं पाहीं॥
अरु सतगुरु तुमका कहँ कहूँ । हे प्रभु कौन देश तुम रहूँ ॥
जिन्दा वचन ।

हो धर्मनि जो पूछेहु मोहीं । सुनहुँ सुरति धरि कहों मैं तोहीं॥
जिन्दा नाम अहै सुनु मोरा । जिन्दा भेष खोज किहँ तोरा॥
हम सतगुरु कर सेवक आहीं । सतगुरु संग हम सदा रहाहीं॥
सत्य पुरुष वह सत्यगुरु आहीं । सत्य लोक वह सदा रहाहीं॥
सकल जीवके रक्षक सोई । सतगुरु भक्ति काज जिव दोई॥
सतगुरु सत्यकबीर सो आहीं । गुप्त प्रगट कोइ चीन्है नाहीं ॥
सतगुरु आ जगत तन धारी । दासातन धरि शब्द पुकारी॥
काशी रहिं परखि हमपावा । सत्यनाम उन मोहिं दढावा॥
जमराजाकर सब छल चीन्हा । निरखि परखि भै यम सो भीना॥
तीन लोक जो काल सितावे । ताको सब जग ध्यान लगावे॥
निराकार जेहि वेद बखानै । सोई काल कोइ मरमन जानै॥
तिन्ह कर सुत आहि त्रिदेवा । सब जग करै जो उनकी सेवा॥
त्रिगुण जाल यह जग फन्दा ना । गहै न अविचल पुरुष पुराना॥
जाकर ई जग भक्ति कराई । अन्तकाल जिव सो धरिखाई॥
सभै जीव सतपुरुषके आहीं । यम दै धोख फन्दा इस ताहीं॥
प्रथमहि भये असुर यमराई । बहुत कष्ट जीवन कहँ लाई॥
दूसरि कला काल पुनि धारा । धरि अवतार असुर सँघारा॥
जीवन बहु विधिकीन्ह पुकारा । रक्षा करन बहु करै पुकारा॥
जिव जानै यह धनी हमारा । देविश्वास पुनि धरै अवतारा॥
प्रभुता देखि कीन्ह विश्वासा । अन्तकाल पुनि करै निरासा॥

काले भेष दयाल बनावा । दया दृढाय पुनि घात करावा ॥
 द्वापर देखहु कृष्णकी रीती । धर्मनि परिखहु नीति अनीती ॥
 अर्जुन कहँ तिन्ह दया दृढावा । दया दृढाय पुनि घात करावा ॥
 गीता पाठकै अर्थ बतलावा । पुनि पाछे बहु पाप लगावा ॥
 बन्धु घातकर दोष लगावा । पाण्डो कहँ बहु काल सतावा ॥
 भेजि हिमालय तेहि गलाये । छल अनेक कीन्ह यमराये ॥
 बहु गंजन जीवन कहँ कीन्हा । ताको कहे मुक्ति हरि दीन्हा ॥
 पतिव्रता वृन्दा व्रत टारा । ताके पाप पहन औतारा ॥
 बलिते सो छल कीन्ह बहूता । पुण्य नसाय कीन्ह अजगूता ॥
 छल बुद्धि दीन्हे ताहि पताला । कोई न लखै प्रपञ्ची काला ॥
 लघु सरूप होय प्रथम देखाये । पृथिवीलीन्ह पुनि स्वस्तिकराये ॥
 स्वस्तिक कराइ तबै प्रगटाना । दीर्घरूप देखि बलि भयमाना ॥
 तीनि परग तीनों पुर भयऊ । आधा पाँव नृप दान न दियऊ ॥
 देहु नृप पुराय आधा पाऊँ । तोनहिं तव पुण्य प्रभाव न साऊँ ॥
 तेहि कारण पतालहिं दीन्हा । अन्धा जीव जस प्रगट न चीन्हा ॥
 तब लै पीठ नपाय तेहि दीन्हा । हरिले ताहि पतालै कीन्हा ॥
 यहि चर जीव देखि नहि चीन्हा । कहै मुक्त हरि हमको कीन्हा ॥
 जाकर वचन थिर होवें नाहीं । औ पुनि जीव दया नहि ताहीं ॥
 तासो कहहु लाभ किमि होई । तेहि सेवै सो जाय विगोई ॥
 औ हरिचन्द केर कस लेखा । धर्मदास चित करो विवेखा ॥
 यती सती त्यागी भयऊ । सब कहँ काल विगुरचन लयऊ ॥
 काहुकै व्रत दृढ नहिं राखा । ता कहँ मुक्तिदाता जग भाखा ॥
 स्वर्गहिं धोखा नर कहि जाहीं । जीव अचेत छल चीन्है नाहीं ॥
 पण्डो सम जगको व्रतधारी । नरक बास ता कहँ लैडारी ॥
 करण मोरध्वज सत्य व्रत धारी । लै कसनी ताहि दीन्ह विडारी ॥
 भक्त अनेक जगत महुँ भयेऊ । काहु कहँ वैकुण्ठ न दयेऊ ॥

नरक वास नहिं छूटै भाई । महा नरक भग जठरकहाई ॥
 नरकते विष्णु छुटे नहिं पाये । जनम जनमजठरै भग आये ॥
 जग अंधा हियगम्य न कीन्हा । सबै आस ताहीकर लीन्हा ॥
 जिव अचेत हियगम्य न करई । सभै आस वैकुण्ठहिं धरई ॥
 विष्णु सरीखे को जग आही । बहुभगता किमि वरणौ ताही ॥
 तिन्हवैकुण्ठ वास नहिं पाया । कर्महिंसि पुनिनर्कभोगाया ॥
 सो वैकुण्ठ चाहत नर प्राणी । यहयम छलबिरलेपहिचानी ॥
 जस जो कर्म करै संसारा । तस भुगतै चौरासी धारा ॥
 मानुष जन्म बडे तप होई । सो मानुष तन जात विगोई ॥
 नाम विना नहिं छूटे कालू । बार बार यम नर्कहिं घालू ॥
 नरक निवारण नामजोआहीं । सुरनरमुनि लखतकोइनाहीं ॥
 ताते यम फिरि फिरि भटकावै । नाना जोइनि काल सतावै ॥
 विरलै सारशब्द पहिचाने । सतगुरुमिलैसतनामसमाने ॥
 छंद-सुनु धर्मदास सुजान शब्द प्रमान सतगुरु जानहूँ ॥

सुरति निरति गहि ठाम चीन्हो अनृप अलञ्छन मानहूँ ॥
 सत्यनाम अराधहु मनहीं साधहू चतुर चोर जो मनअहैं ॥
 मनै अहै निरञ्जन कोइ न चीन्है सुत्रवासी सब कहैं ॥
 साखी-सुन्य सरूपी मन सोई, धर्म दास लेहु जानि ॥

रेख रूप वाको नहीं, जिन्दा शब्द प्रमान ॥
 सोरठा-निरंकार निःरूप, परिचय वेद प्रकास इमि ॥

तिहुँपुरके सोइ भूप, नेति निगम यश गावहीं ॥

धर्मदास वचन ।

हे साहेब तुमको शिर नावा । तुमतो मोहिं अलख लखावा ॥
 समरथ नव चरनन बलि जावैं । तुम्ह ते बहु परचै हम पावैं ॥
 उन साहेब सम तुमहू अहहू । वैसिहि बात तुमहु प्रभुकहहू ॥

भेष तीनि दरशन दिय मोहीं । तीनो भेष में जानौं तोहीं ॥
 सतगुरु प्रथमदरस मोहि दीन्हा । हम कहँ आयकृतारथकीन्हा ॥
 भेष छिपाय बहुरि ओहि आये । सारबात बहु मोहि सुनाये ॥
 तिसरे तुम्ह आयउ तनधारी । हम हैं तोहरे दरश भिखारी ॥
 तुम्हमोहि आयपरमसुखदीन्हा । हम कहँ आय कृतारथकीन्हा ॥
 तुमतो प्रभुबहु सुख दीन्हा । तुम ते प्रभु परिचयहमचीन्हा ॥
 एक बात प्रभु कहहु बिलोई । कहहु दया करि धरहु न गोई ॥
 चिउँटी बहुत जरीमम पाहीं । तुम प्रताप अघ पायो नाही ॥
 औरो कबहिं होइ जो ऐसी । हे प्रभु कहहु बने तब कैसी ॥
 चेत अचेत पावँ तर परई । हे प्रभु दास कौने विधितरई ॥
 जिन्दा वचन ।

धर्मदास निःसंशय रहहू । सद्गुरु ध्यानअस्थिर चितगहहू ॥
 जानिकेजीव कबहिं नहिं मारो । भरोसा और दया उरधारो ॥
 भरसक चूको नाहीं कबहू । सबजीवनकी रक्षा करहू ॥
 साधू सेवा पर सरवस वारो । सेवासन्त प्रीति चित धारो ॥
 सन्त चरण कर अस परतापा । मेंटें दोष दुख करमज दापा ॥
 साधू सेव जीव जन धारो । नाम ध्यान धरि काज सँवारो ॥
 साधू सेवा चित देइ करई । जीवत मुक्ति सो भव जल तरई ॥
 तीरथ व्रत बहु करम कराहीं । सत्यभक्ति विनुतरै जिवनाहीं ॥
 कोटि तीर्थ सन्तन्हपद वासा । अंधा जीवहि नहिं विश्वासा ॥
 सन्त जाहि घर चरण पखारा । भूत पिशाच होये सब न्यारा ॥
 नौग्रह कर वसि नहि चलई । सब बिघ्न सदा सो टलई ॥
 जेहि घर सन्तचरण परछालैं । संत उछिष्ट जाहि घर डालैं ॥
 ताकरफलकटु वरणिनजाई । जाहिगहि विश्वास करै सेवकाई ॥
 गुरु चरणोदकनित प्रीतिलेई । निहचै लोक पयान देई ॥
 गुरुमुख कणिक प्रीतिसे पावै । ऊँच नीचकै भरम मिटावै ॥

गुरुमुख सती महा परसादा । पावत मेंटे करम कर फाँदा ॥
 गुरु हैं ब्रह्म अणखड अमानै । गुरु कहँ नहिं मानुषकरजानै ॥
 गुरुते द्रोह तजै विष बादा । गुरु निन्दा नहिं पावै स्वादा ॥
 नाम पान चरणोदक सीते । कहै कबीर भक्ति दृढ रीते ॥
 गुरु सेवा सन्तन सनमाना । दया धर्म ले मोक्ष अमाना ॥
 जग महँ जीव घात बहु तेरे । जीव घात शिर पाप घनेरे ॥
 दया न गुणै करै जिवघाता । खेलि शिकार मगनमद माता ॥
 मारि मारि तन करै अहारा । जीव दया नहिं करै गवाँरा ॥
 जिवघातिक बहुते दुख पावै । जनम जनम तेहि काल सतावै ॥
 कागदेह धरि निरघिन खाहीं । जनम अमित तेहिविष्टामाहीं ॥
 शूकर स्वानजनम पुनि पावै । मीन मांस मद जाकहँ भावै ॥
 साधु देव भक्ष अंकुरआहीं । मीन मांस मद राक्षस खाहीं ॥
 कोटिक जप तप पुण्यकमावै । दया विना नर मुक्तिन पावै ॥
 छन्द-जप योग दान विधान बहु विधि करै कर्म अनेकहो ॥

सतकोटि तीरथ भूमि परिकरमा करि न पावै थैक हो ॥

जौ लैं दया नहिं जीवको तोसबहि कर्म असार हो ॥

कोई लखे सज्जन जोहरि में कद्यो शब्द पुकारिहो ॥

साखी-जीव दया चित्त में धरै, तजै अभक्ष्य अहार ॥

हंस दया धरि नाम गहि, उतरे भवजल पार ॥

सोरठा-सत्यनाम गुण गाय, गहीसाधु सेवा करै ॥

सहज परमपद पाय, सो सतगुरुपद विश्वास धरि ॥

चौपाई ।

जहाँ फूल तहँ आवै बासा । जहाँ साधु तहँ प्रभु कर वासा ॥

एकतत्त्वमन गुनिनामसमावै । दया क्षेम सत्य मन भावै ॥

गुरु औसाधु सेवा चितलावै । सत्यनाम गहि लोक सिधावै ॥

सत्यनाम सो विनसै नाहीं । त्रिगुण जाल ते न्यार रहाहीं ॥

त्रिगुण त्यागिचौथा पद भेटे । तव जरामरणकी संशय मेंटे ॥
 चौथापद सत्यनाम अमाना । विरला पाइ करै पद ध्याना ॥
 सत्यनाम है सार अनूपा । प्रेम प्रीति गुरु दरस सरूपा ॥
 काह भये यह अंगुरीके देखे । जो नहिं शीश दरशप्रभु पेखे ॥
 काह भये ठठिया के भेटै । शीश दरश विनुभरम नमेटै ॥
 नखसिखसत्पददरशहिजबहीं । सो जिव जठर नआवै कबहीं ॥
 निश्चै सत्यपर रहै समाई । कर्म भर्म तजिजिव दुचिताई ॥
 सत्यपदजिनएकहिमनलाया । शीश दरश निज निश्चै पाया ॥
 सुरतिनिरतिसत्यगुरुपदपरसै । षोडश भानु चन्द्र छवि दरशै ॥
 सुधापान सिंघासन मारा । हंसन्हमिलिसुखबडा अपारा ॥
 पुरुषदरशलोचनछकिजायी । पुरुषवचन शुभ व्रानअघायी ॥
 अन्यकार तहवाँ नहिं होई । सदा अंजोर अमर पुर सोई ॥
 दीप असंख्यतहँ गणि नसिराहीं । हंसा निश्चल राज कगहीं ॥
 निराकार यम तहाँ न जाई । तिरदेवनकी कौन चलाई ॥
 सत गुरु शरणगहहिंजोकोई । ताहि देसको पहुँचे सोई ॥
 जब राजा सो तिनका मूटै । पाप पुण्य के आशा छूटै ॥
 तबहीं सत्यगुरुशब्दमन जूटै । जन्म मरणका संशय छूटै ॥
 असुर भक्ष सो रहै निनारा । तजि असंगसत्संग विचारा ॥
 विरलै हंस निःसंशय होई । दृढ़ प्रतीति नाम गहे सोई ॥
 गुरु कहँ सत्य पुरुष सम जानै । सन्तकहँ गुरुसम करि मानै ॥
 होइ निःकपट चरणगुरु आसा । सद्गुरु नाम गहै विश्वासा ॥
 निराधार सतनाम अधारा । शब्द सुरति जगबन्ध विचारा ॥
 कर्म भर्म सो न्यारा होई । गुरु पद राखै सुरति समोई ॥
 बहु विधि ज्ञान गुरुते पावै । यम का फन्दन सोई कटावै ॥
 यमके फन्द कटे सुख होई । पशुआ हो नहिं पावै सोई ॥
 गुरुका शब्द सुनै जो काना । करै विचार बहुत परमाना ॥

काल रूप धरि गुरू कहावै । करि पारख तासो हटिजावै ॥
 अन्धविश्वास जगतसो सोवै । जाय नरक पुनि मूलहु खोवै ॥
 निरखि परखिकै शरणै जावै । अगम निगम सब सोइ जनावै ॥
 रहै अजाचक नामलौ लाई । जीव दया सन्तन सेवकाई ॥
 निज आतम सम सबही जानौ । प्रेम प्रीतिसे सेवा ठानौ ॥
 परमारथकी भिक्षा करिये । गुरु साधुन आज्ञा अनुसरिये ॥
 अभ्यागत आतम सम जानें । साधुनाम सद्गुरु सहिदाने ॥
 छंद—गुरुसाधु महिमा अमित अगम अपार पारनहि कोऊलहै ॥

त्रीदेव दश औतार हरि गुरु साधु पद रज तेऊ चहैं ॥
 सनकादिक सुरनरमुनि सिद्ध ज्ञानीसाधु गुरू आश्रित रहै
 हरि आपु मुख महिमा प्रकाशैं निगम अस्तुति नित कहैं ॥
 साखी—अस नरपाँवर अन्धमति, हृदय न करहि बिचार ॥
 गुरु सन्तन्ह पद सारतजि, विष वेली प्रतिपार ॥
 सोरठा—सुत नारी हित प्रान, गुरु सन्तन्ह सो चातुरी ॥
 जब यम बाँधै तान, तब पछितावहि मुग्ध नर ॥

धर्मदास बचन—चौपाई ।

धन सतगुरु धन तुमरी बानी । मोहि अस अधम दीन्ह गतिजानी ॥
 अब साइब मोहि आपन करहू । ममशिरचरण सरोरुह धरहू ॥
 मैं आपन दिन शुभ करि जाना । तोहरे दरश मोक्ष परमाना ॥
 अब अस दया करहु दुखभञ्जन । कबहुँ मोहिन धरि पावनिरञ्जन
 जिन्दा बचन ।

अहो धर्मदास दरश तुम पावो । शब्द गहेहोय जिवमुक्तावो ॥
 यमफन्दा तब निश्चै छूटे । जब यमरासो तिनका टूटे ॥
 अमीअंक परवाना पावे । सुमिरण नामध्यान चितलावे ॥
 हियते और आस सब छाडे । सद्गुरु चरण नेह चित माडे ॥

नामकबीर जपो दिन राती । तजहुकर्म भ्रमअरु कुलजाती ॥
 प्रतिमा धोखा दूगि बहाओ । आतम पूजा नाम चितलाओ ॥
 पीतर पाथर दूरि बहाउ । सद्गुरु सन्त सेवा चित लाउ ॥
 तब जमरा तोहीं नहिं पाई । नाम प्रनाप काल मुरझाई ॥
 होइहैं जीव काज तब तोरा । निश्चै बचन मानु दिठ मोरा ॥

धर्मदास बचन ।

हे साहेब मैं तब पग धरऊँ । तुम्हते कछु दुबिधानहिंकरऊँ ।
 अबमोहिचीन्हिपरायमबाजी । तुम्हते भयउ मोरमन राजी ॥
 मोरे हृदय प्रीति अस आई । तुम्हते होइहै जिव मुक्ताई ॥
 तुमहीं सत्यकबीर हौ स्वामी । कृपा करहु प्रभु अन्तर्यामी ॥
 हे प्रभु देहु प्रवाना मोहीं । यम तृण तोरि भजौमैं तोहीं ॥
 मोरे नहीं अवर सो कामा । निसिदिनसुमिरोंसद्गुरुनामा ॥
 पीतर पाथर देव बहायी । सद्गुरु भक्ति करब चितलायी ॥
 अरपौं शीस सर्वस सब तोहीं । हे प्रभु यमते छोडावहु मोहीं ॥
 सन्तन्ह सेवाप्रीतिसोंकरिहौं । बचनशिखापननिश्चयधरिहौं ॥
 जो तुम्ह कहहुकरब हमसोई । हेप्रभुदुतिया कबहुँ नहिंदोई ॥

जिन्दा बचन ।

सुनुधर्मनिअबतोहीं मुक्ताओं । निश्चै यमसा तोहिं बचाओं ॥
 देइ परवाना हंस उबारो । जनम मरण दुख दारुण टारो ॥
 ले प्रवाना जो करै प्रतीती । जिन्दा कहै चले यम जीती ॥
 अबमोहिआज्ञादेहुधर्मदासा । हम गवनहि सद्गुरुके पासा ॥
 सद्गुरु संग आइबतव पाहीं । तब परवाना तोहि मिलाहीं ॥

धर्मदास बचन ।

हे प्रभु अब तोहिं जाने न दैहौं । नहिं आवोतोमैं पछितैहौं ॥
 पछताइ पछताइ बहु दुख पैहौं । नहिं आवहुतो प्राण गवैहौं ॥
 हाथके गन खोइ कोइ डारै । सो मूरख निजकाज विगारै ॥

मोरे प्राण पियारै तुम्ह हो । केहि कारण अनत लैजै हो ॥
 कबीर साबहका तीसरीबार गुन होजाना और धर्मदास साहब की व्याकुलता
 यह कहि धर्मदास पल लाऊँ । जिन्दा गुप्त भये तेहिं ठाऊँ ॥
 धर्मदास पुहुमी परु हारी । सद्गुरु कहँ बहु कीन्ह गोहारी ॥
 मोहिं समको जग आहि अभागा । छुटे नदेह ठगौरी लागा ॥
 जिमो भुअँग मणि जाइ हेराई । विकल फिरहिं जिततित बिललाई
 उहै हाल सद्गुरु विनु मोरा । कत पल दियेउ मन्द मति मोरा
 काह करौं कित दर्शन पाऊँ । विनु दर्शन में प्राण गवाऊँ ॥
 कीन्ह विवेक मन धीरज दीन्हा । मन महुँ पकर एक पुनि कीन्हा
 करौं महोत्सव संत अवराधी । तब दर्शन देहिं पुरुष अनादी ॥
 साहेब सन्त सनेही आहीं । सन्तन तजि वह अंत न जाहीं ॥
 असहियठानि भवन चलि गयऊ । सन्त प्रसाद को चितवन कियऊ
 संत धाम जहुँ लगि गम पावा । तहां तहां विनती नेवति पठावा ॥
 छन्द-दिन अवधि वाही जुरन लागे बहु भेष पहुँचे आयहो ॥
 दीहुँ जुथ्यहिं सेज आश्रम कीन्ह विनती जाइ हो ॥
 दै भाव भोजन गम निरश्वहिं सकल भेष अलेखही ॥
 सबहिं निरखहिं सुरति परखहिं हृदय समाह विवेकही ॥
 दोहा-पान सुपारी हाथलै, करहिं दण्डवत जाय ॥
 भेषन सो चित विलखिके, पूछहिं मन परिचाय ॥
 सोरठा-तुम्ह हो सन्त सुजान, निजदासन्ह सुख देतुहौ ॥
 सत्य पुरुष सहिदान, सत्य लोक महिमा कहो ॥

वेष मता वर्णन ।

चौपाई ।

कोई कहै त्रिदेव अवराधी । कोई कहै व्रत करि तन साधी ॥
 कोई कहै करु प्रतिमा सेवा । कोई तीरथ कोइ जपतप भेवा ॥

कृत्रिमभक्ति जो सबे दृढावे । सत्यसारपद नाहि बतावे ॥
 तब अकुलायसंसाधरिजोये । प्रगट नहीं गुप्तहिं हिय रोये ॥
 प्रतिआश्रमगम्यउठीनिरासा ॥ जिततितचितवहिं धर्मनिदासा ॥
 पुनि चितवनउत्तरदिशिकीन्हा ॥ मूरति एक भिन्न तहँ चीन्हा ॥
 धर्मदास तहँ बेगि सिधाये । प्रथम रूपको दरशन पाये ॥
 धायचरणगहिअतिअनुरागा ॥ बुन्दपायचात्रिकजिमिपागा ॥
 गुरुपद पाय प्रीति चित जागा ॥ हो सतगुरुमोहिंकीन्हसुभागा ॥
 धायेचरणनगहिअतिअनुरागा ॥ युगपदगहेउप्रीतिचितलागा ॥
 करगहि दास उठायेउ स्वामी । सुधा वचन कह अन्तर्यामी ॥

सतगुरु वचन ।

धर्मदास तुम्ह इंस सुहेला । मोहिं दरश कह कीन्हेउ मेला ॥
 इच्छा सुफल भई सुन तोरा । अब तुम्ह दरशनपायउ मोरा ॥

धर्मदास वचन ।

हे प्रभु जौं दर्शन नहिं पावत । तौ हम निश्चै प्राण गवाँवत ॥
 अब प्रभु कीजे कृपा तुरंता । दीजे बीरा अविचल संता ॥
 यमसे तिनुका बेगि तोराओ । वन्दीछोरि मोहिं मुकताओ ॥

सतगुरु वचन ।

सुनुधर्मनि जो कहोसो मानो । तजि संशय धीरज चित आनो ॥
 करहु जाय सन्तनसनमाना । ता पीछे देहों परवाना ॥

धर्मदास वचन ।

हे प्रभु कहो सोई हम माने । करब जाइ सन्तन्ह सनमाने ॥
 हे प्रभु जो कतहुँ अब जाहू । तौ जीवित नहिं पइहौ साहू ॥

सतगुरु वचन ।

हे धर्मनि सुनुहु मम वानी । कतहुँ न जाब सत्य हिय जानी ॥
 करि प्रनाम चितवत चलु पाछे । जौं नटनिरत सुघरता काछे ॥
 जाय कीन्ह सन्तन सनमाना । यथा शक्ति पूजा परधाना ॥

विदा कीन्ह सन्तन्ह करजोरी । वरुशहु जो हमरी भइ खोरी॥
सब सन्तन निज धाम सिधाये । धर्मदास सद्गुरु पहुँ आये ॥

धर्मदास वचन ।

कहै धर्मनि सुनु दीनदयाला । आतुर छोड़हु बन्ध कृपाला॥
सतगुरु वचन ।

धर्मनि जो चाहहु परवाना । आनहु आरति साज सुजाना॥
धर्मदास वचन ।

अहो साहब कस आरतिसाजा । सोभाषहु आतुर जिवकाजा॥
सतगुरु वचन ।

धर्मनि चहिये नारियर पाना । मेवा सो अष्ट अरु मिष्टाना॥
चन्दन चौकसुगन्धि कराओ । कलशा पल्लौ पञ्च धराओ ॥
गौघृत वसन सकल शुभ चारु । साजि थारपुनि आरतिबारु॥
सिंघासन पुनि सेत बनाओ । झारी दल कपूर मेराओ ॥
श्वेत पुहुप केदली पनवारा । आनि वेगि जनि लावहुवारा॥
रतना कंदइनिनगर महँ आहीं। गुड़ मिष्टान्न तिनहिं कर चाहिँ॥
धावहु वेगि तुरति लै आवहु। आनहु वेगि वार जनि लावहु॥
धर्मदासजीका रतनासे मिलना ।

छन्द—पदकंज टेक्यों चले विचारत कहाँधौं रतना अहै ॥
कहँ पूँछि लीजे भवन उनके निज हिये गुनता रहै ॥
तहँ आय रतना ठाढ़ि भयी मिष्टान्न लै कर जौरि कै ॥
भो साहु येहु प्रसाद लीजै नाम रतना मोर है ॥
दोहा—धर्मदास रह सकुचि चित, यह तो अचरज बात ॥
हो माता किमि जानेउ, कहहु सोइ विख्यात ॥
रतना वचन ।

सोरठा—सुनु धर्मनि हम नाहिं, यह लीला सद्गुरु कियो ॥
हम उन सेवक आहि, जिन्ह तोहिं शब्द चेताइया॥

धर्मदास वचन—चौपाई ।

लेहु दाम धन्य हो तुम माता । एक प्राण देखिये दुइ गाता ॥

रतना वचन ।

अहो धर्मदास कस मोलबताओ।उन्हको तन मनवेगि सिधाओ
औरौ बस्तु लेहु अतुराई । गवनहु वेगि सुनहु गुरु भाई ॥
चलिभै धर्मदास पुनि तबहीं। रतना आकर भाष्यो जबहीं ॥
लीन्हवस्तु पुनि सकल सम्हारी।धनी पहुँ सब जाय सवाँरी ॥
ले साहेबके सनमुख राखे । साजु थार अस आयसु भाखे॥

सतगुरुवचन ।

चौका सवाँरि थार रचि धरेऊ।सब विधान आज्ञा सम करेऊ ॥
साहेबके पुनि चरण पखारा । चरण पखारि आसन बैठारा॥
आसन बैठिके सुमिरनकीन्हा।नारियर मोरिअंशगहिलीन्हा॥
सत्य सुकृत कहँ मालुम कीन्हा ।तब त्रिन तोरिपरवानादीन्हा॥
लै नारियर प्रसाद सुख माना । धर्मदास चित हर्ष समाना ॥
प्रेम सहित चरणोदक लीन्हा । मुख महँ डारि मिठाई दीन्हा॥
सात दण्डवत ततक्षण कीन्हा ।हृदयमाहिंगुरु रूप गहिलीन्हा
दण्डवत सात धनीकहँ कीन्हा।शब्दसुरतिपुनिचितगहिलीन्हा
सात दण्डवत कीन्हा जबहीं । माथे हाथ दियौ प्रभु तबहीं ॥
धर्मदास चित हर्ष समाना । उपज्यो हिरदै निरभै ज्ञाना ॥
सद्गुरुकी जब सुरति समानी । विनश्योकरम भरमयमखानी॥
सद्गुरु पद जबहीं अस्थापा । उदित ज्ञान पद रज परतापा॥

धर्मदास वचन ।

हे साहेब जो आज्ञा कीजे । प्रतिमा मूर्ति काहू कहँ दीजे॥
गुरुते अधिक कौन है देवा । अब हम करब तुम्हारी सेवा॥

सद्गुरु सम नहिं देखौं आना । पूजिशिलामम जन्मसिराना ॥
कबहुँ न कहेसि मुक्तिउपदेशा । तुम्ह मेटेउ मम कालकलेशा ॥

सतगुरु वचन ।

धर्मदास यह चित गहि धरहू । प्रीति सो साधु सेवाअनुसरहू ॥
पीतर पाथर पूजहिं अन्धा । जो गुरुज्ञानहीन मतिमन्दा ॥
प्रभु कहँ शिलारूपकरि देखै । ताकर जीवन जन्म अलेखै ॥
शिला माहि जो सुरति लगावै । तन धन शिलारूप सो पावै ॥
जहाँ आशा तहँ बासा होई । ताकहँ मेटि सकै नहिं कोई ॥
चक्रित वृषभ ज्ञान विनुप्राणी । जित जित भेटेनहिं पहिचानी ॥
ज्यों कन्या रह पिताअवासा । कौतुककरहिं पूजहिंमनआसा ॥
भयेउ वर कन्या कर व्याहा । तब सब तेजेउमिलेउजबनाहा ॥
बिना खसमकसआसबुझायी । अस प्रतिमाकी पूजा भाई ॥
जबलौं ज्ञान न हिये समायी । तबलगिधोखाभरमरहेछायी ॥
जब गुरु पूरा मिले मतिसारा । उदैज्ञानरविछपितहोयतारा ॥
जब उजियार होय घर भाई । धोखा भरमतबसहजनसाई ॥
ताते गुरुपद सुरति समाओ । सतगुरुध्यान अभैपदपाओ ॥
गुरु ते अधिक नकोइठहरायी । मोक्षपथ नहिं गुरुबिनुपाई ॥
रामकृष्ण बड तिहुँ पुरराजा । तिनगुरुबन्दि कीन्हनिजकाजा ॥
देवँऋषी मुनिवर शुक शेषा । सबहीं बन्दै गुरु चरणसुरेशा ॥
तन धरि करहु न गुरु कहँमेटा । गुरु गमि सबै साहुपद भेटा ॥
मूर्ख जीव कर गुरुहिं अकेला । विनु गुरु जगत कालकोचेला ॥
गुरु विनु सार ज्ञान नहिंपायी । ज्ञान विनानहिं आपुचिन्हायी ॥
जौं हिय आपु आपगमिनाहीं । तौं लगि जीवभवभटकाखाहीं ॥
सो गुरु सत्य जोसारचिन्हावै । यम बन्धन तेजिवमुकतावै ॥
धर्मनितुम्ह मम शब्दबिचारो । सरवमई यक ब्रह्म निहारो ॥

बोलत घट मई ब्रह्म अखण्डा । रोमहिरोम गरजै ब्रह्मण्डा ॥
 जो बोले सो कबहिं न मरई । गन्दा तननरसरिगलिजरई ॥
 ब्रह्म देह धरि जीव कहावै । पाँच स्वाद रति सोदुखपावै ॥
 निज घर डोरी छूटै भाई । जीव रहे यमफन्द अरुझाई ॥
 सद्गुरु मिले डोरि घर पावै । पाँचन्ह कर परपञ्च नसावै ॥
 आपुहि जीव ब्रह्म है भाई । गुरुपरिचय विनलखोनजाई ॥
 निः अक्षर लख तत्व विदेही । सत्यनामगहिमिलैसुखतेही ॥
 जौ लहि तन मई ब्रह्म सुरंगा । तब लगि रहैतनमनबहुरंगा ॥
 यंत्री ब्रह्म यंत्र तन आही । यंत्री विनु नहीं यंत्र बजाही ॥
 परिचै ब्रह्म दया चित लावै । सद्गुरु सेइ परम पद पावै ॥
 पूजहु सरजिव साधु अमोला । लहहुअभयपदनिश्चयलोला ॥
 छन्द-परखि देखहु श्रेष्ठ वानी शास्त्र सुस्मृति मत घना ॥

जिन्ह साधु सेवा कीन्हतिन्हलीन्हअभैपद सुखसना ॥

योग यज्ञ अरम्भ कीन्हों ते गये पुनि हारि हो ॥

गुरु भक्ति अरु सतसंग कीन्हो ते चलेकुलतारि हो ॥

दोहा-महिमा अनित साधुगुरु, समुझहु सन्त सुजान ॥

पाहन सेवत भरम वश, बूडे सकल जहान ॥

सोरठा-साहब सन्तन पाहिं, जो सेवै सो भव तरै ॥

करम भरमके माहिं, जाय विगुरचे जीव बहु ॥

धर्मदास वचन-चौपाई ।

हो साहब तव पद शिर नाऊँ । तव पद परसिपरमपदपाऊँ ॥

केहि विधि आपनभागसराही । तुमबरतगहैभाग पुनिताही ॥

कोधो मैं शुभ कर्म कमाया । जो सद्गुरुपद दरशन पाया ॥

सतगुरु वचन ।

धर्मनि सुनो आपनी करनी । तुम सुकृत आये जिवतरनी ॥

पुरुष पठाये जीवन काजा । तुमपरकला कीन्ह यमराजा ॥

तबसत्यपुरुषआज्ञामोहि कीन्हा। ततक्षणआयपृथ्वीपग दीन्हा
 बार अनेक कीन्हा मिलापू । धरम दास नहिं चेतहु आपू॥
 पाहन पूजि ध्यान मनलाये । सद्गुरु शब्द चीन्हा नहि पाये॥
 तीरथव्रत कीन्हा बहु करनी । रूपदास गुरुकी गहि शरनी॥
 तासु प्रीति तोहि आन जगावा । नाम प्रताप यह परभावा ॥
 जो जिव नाम तुम्हारा लैहें । ताहि जीवको काल न खैहें॥
 सतगुरु भक्ति जाहि कुल होई । तरे एकोतर पुरुषा सोई ॥

दूसरी प्रतियोंमें नीचे लिखे अनुसार है ।

सद्गुरु वचन ।

धर्मनि सुनु आपनी करनी । जेहितोहि मिलेउ शब्दभौतरनी
 द्वापर अन्त सुपच तुम रहेउ । तव सुत एक सो मम व्रत गहेउ॥
 तासु प्रीति तोहि आनि जगावा । है परताप नाम परभावा ॥
 सद्गुरु भक्ति जाहि कुल होई । तरे एकोतर पछिला सोई ॥
 वही संयोग तोहि हम भेटे । तुव सुत प्रीति तोर दुख मेटे॥

नोट—एक प्रतिमें तो ऊपरके प्रमाणही लिखा है किन्तु कई प्रतियोंमें ऊपरकी नौ पंक्तिके बदले नीचेकी पंक्तियाँ लिखी हैं । पाठक गण स्वयम् विचार करके जो उत्तम और प्रमाणिक समझे वह रखें और पाठ करें । किन्तु इतना तो अवश्य कहा जायगा कि भिन्न २ ग्रन्थोंमें इन दोनों बातोंका प्रमाण मिलता है । और लेखक महात्माओंकी कृपासे पक्षपात और अविद्यावश कबीरपंथके ग्रन्थोंकी जो दुर्दशा हुई है वह साक्षर वर्गसे छिपा नहीं है । ग्रन्थोंकी यही दशा देखकर स्वयम् कबीर पंथ यहांतक वंशघर कहीं कतिपय महंत संत लजावश हो किसीके सामने इन ग्रन्थोंका नाम लेतेभी सकुचाते हैं । और दृश्यमें इन सब ग्रन्थों पर अश्रद्धा रखते हैं । इस ज्ञानप्रकाश की कई प्रतियाँ मेरे पास उपस्थित हैं किन्तु किसी भी प्रतिका एक दूसरेके साथ मिलाप नहीं होता है । इसी प्रकारसे लगभग सब ग्रन्थोंकी दशा होगयी है । जो जो नवीन प्रतियाँ हैं उन सबोंमें अटपट छन्दोभंग अर्थभंग और माबभंग आदि दोष पूर्ण रीतिसे भरे हैं। हाँ पहलेकी प्रतियाँ कुछ शुद्ध हैं उसी के अनुसार जहाँतक होता है रखनेका प्रयत्न करता हूँ । ऐसा करनेपर भी प्रस्तुत विषयके समान जहाँ संदिग्ध विषय आजाते हैं वहाँ दोनों का रख देना उचित जानता हूँ। इसमें इतना होगा जिनके पास जैसी २ प्रति होगी वे अपनी प्रति

सर्वानन्दकी कथा ।

हे धर्मनि परखहु चितलाऊ । विप्रगोष्टि तोहि वरनि सुनाऊ॥

धर्मदास वचन ।

गहि पद धरमदास हरषाना । कहिये विप्र गोष्टि सहिदाना॥

जस कछु भयी विप्र सों चर्चा । सोस्वामी कहिये मोहिपरचा॥

भिन्न २ के वर्णन कीजै । दास जानि दया प्रभु लीजै ॥

सतगुरु वचन ।

भलधर्मनि सुनहु अब सो कथा । गोष्टिभयीसर्वानन्दसेयथा ॥

सर्वानन्द विप्र एक रहई । कोइ न ज्ञाता तिनसमअहई ॥

सर्वानन्द द्विज जो रहेऊ । तासमज्ञान अवर नहिं कहेऊ ॥

बहुपण्डितसोंगोष्टितिन्हकीन्हा । ज्ञानजीति पोथी बहु लीन्हा

काहु न जीते गये सब हारी । सर्वानन्द मन गर्व बहु भारी ॥

जिन्ह पण्डितसों चर्चा कीन्हा । ज्ञान जीति पोथीबहुलीन्हा ॥

गोष्टिवादकै निजवर आया । बहु अभिमान गुमानचितलाया

सर्वानन्द वचन माता प्रति ।

मातासों तिन बचन उचारा । हो जननी बड़ भाग्यतुम्हारा ॥

हम अस पण्डित हैं सुततोर । काहु न जीतै गोष्टि सो मोरा ॥

सर्वाजीत नाम मम धरहु । अजित तिलक सिर हमरे करहु

कहे जननी धन्य पुत्र प्रवीना । सहि ज्ञातातुम्ह हमहुँ चीन्हा ॥

माता वचन ।

हो सुतएक पूँछौतोहिपाहीं । कवीरजोलहहिं जीतेहुकि नाहीं॥

—और—श्रद्धाके अनुसार बाचेंगे । इसीप्रकारसे अनुरागसागरकी अनेक प्रतियोगेंभी—सुंपच सुदर्शनके पिताकाही अनेक जन्मके पश्चात् गुरुधर्मदास साहबबनना लिखाहै किन्तु अभी जो इस पुस्तकके साथही छपेहुए अनुरागसागरमें सोबात नहीं है उसका कारण यह है कि, वर्तमान भाचार्य्य पं०श्री उपनाम साहबकी सेवासे जो अनुरागसागरकी प्रति छपा-नेके लिये मुद्रको मिलीथी उसके अनुसारही यह अनुरागसागर छपाहै ।

सवानन्द वचन ।

सुनु जननी तव ज्ञान हंताना । काजोलहा संवादमतिजाना॥
पण्डित कोईजीते मोहिनाही । सोजोलहा वादहि हम पाहीं॥

माता वचन ।

सुनु सुततबहिकहबहम ज्ञानी । जबजोलहहिजीतहुबुधवानी॥
जोलहहिजीतिआवहुतुमजबहीं । सर्वाजित कहबतोहि तबहीं ॥
तबहीं तोहि सिरसारव टीका । बिनुजोलहिंजीजीतेबुदिफीका

सर्वानन्द वचन ।

अहो माता कवीर कहाँ रहहीं । कौन भेषबानी का कहहीं ॥
(कहा कबीर रहै हो माता । कौन भेष बाना है ताका)

माता वचन ।

हो सुत काशी रहत है सोई । अविगत लीला लखैनकोई॥
(काशी है उनका अस्थाना । तिनकरलीला कहाबखाना)
नाम कवीर जोलहाकहलावहीं । भक्ति भेष सोहरिगुणावहीं॥
(जोलहा नाम कबीर बतावै । भक्ति भेष हरिगुन गावै)
जब जननी बहुते धिरकारा । बाढ्यो क्रोधभयोविकरारा॥
कीन्ह प्रमाणचितवतअभिमाना । काशी कहँपुनिकीन्हपयामा
आये नगर पैसारी कीन्हा । घर पूछैकै चितवनलीन्हा ॥
तहाँ कमाली जहँ कहँ गयेऊ । पन्थ विप्र तँहि पूछैलियेऊ॥

सर्वतजी वचन कमाली प्रति ।

अहो कन्यामोहि कहहु बुझायी । कवीरजोलहाँ कहाँरहायी ॥

कमाली वचन ।

कन्या विहँसि कहेउएकबानी । कोअसघरकवीरगमिजानी॥
त्रिदेवता तिहुँपुर अधिकाई । तिनहु घर कवीर गमिपाई॥

१ बाद करेगा अर्थात् सर्वाजीत कहताहै कि, जब बड़े पंडितोंने हमको नहि जीता तो जोलहा हमसे क्या शास्त्रार्थ करेगा ।

सुरनरसुनि औ जहाँलगिदेवा । तेहिघरकी कोइलखैनभेवा॥
 बीचहिं अरुझि रहैयम फांसा । चीन्हिनपावैअविचलवासा॥
 घर कबीर जहाँ है भाई । तहाँ न यमराजा गमि पाई॥
 जाहिं दया सद्गुरु की होई । घर कबीर गमि पावै सोई ॥
 द्विजचकित कन्या कीबाता । यह तोअचरजआहिविधाता॥

सर्वाजीत वचन ।

हो कन्या तुम्ह अचरज भापा।अबमोहिंकहहुप्रगटअभिलाषा
 यह कन्या तो निजकर भाषा । धाम कबीर प्रकट कहँ वासा॥
 काशी माँह रहहिं केहि ठाई । तौन भौन तुम्ह मोहिंबताई॥

कमालीवचन ।

चलु द्विज तोकइभवनदिखाऊँ।कहो सो जायसंदेश सुनाऊँ ॥
 तब सर्वानन्द कीन्ह विचारा । जोइका ज्ञान देखोंयहिवारा॥

सर्वानन्द वचन ।

जल पूरण वर्तन भरि लेहू । लै कबीरके आगे धरिदेहू ॥
 कहुहिंसोमोहिं सुनावहुआई । हो कन्या यह सुन चित लाई॥
 सम्मुख लै वर्तन धरिदैहो । जो कुछकहैसोहमसे कहिहो ॥
 कन्या भौन तुरत चलिआयी । आवतहीं अस बचनसुनायी॥
 कन्या अस बचन उचरंता । विप्र द्वार ठाढ बुधिवंता ॥
 जिन्ह जल पत्र दीन्ह मोहिंपाहीं।बचन सँदेसकहाकछुनाहीं ॥
 तब हम उठके सुई एकहेरा । जल महँ डारि दीन्ह तेहिबेरा॥
 कन्या वरतन देहु तेहि जाई । पाछे हमहुं ताहिं पहुँ आई ॥
 जाइ द्विजहिं जल वरतन दीन्हा । कन्याहिं विप्र पूछिपुनिलीन्हा

सर्वानन्द वचन ।

अहो कन्याकसकहिनविचारा । भाषिमुनावह सोनिरुवारा॥

कमाली वचन ।

कन्या कहै भाषिनकछु नाही । सुई एक डारि दीन्हजलमाहीं
 पण्डित मूरख मरम न पावा । कहत न बूझै सुई प्रभावा ॥

गुनहीं विप्र बहुत हिय माहीं । पुनि हमहूँ गै भेटेउँ ताहीं ॥
कुशल प्रश्न पूछी सनमाना ॥

सर्वानन्द बचन ।

कहे पण्डित सुई मरम नहिं जाना ॥

कबीर बचन ।

तब हम कहा सुनो द्विजराई । अम्बु सुई गमि कहो बुझाई ॥
पठयजलभरि असअनुमाने । हमविद्या सम्पूर्ण अघाने ॥
जिमि वरतन जलअम्बु नसमाई । तिमिहम विद्यारहे अघाई ॥
भरै महुँ का भरै कबीरू । अस तुम्हरेचित सुनुमतधीरू ॥
तुव हियगमि जानि द्विजराई । तब दीन्हीजल सुईएक नाई ॥
जौ विद्या सम्पूरण हौ भाई । तौशब्दहमार बेधितोहिजाई ॥
सुनि पण्डितचित सम्भव आना । हृदयकहै अगमइनज्ञाना ॥
तेहि क्षणरहेउँ हिये अनुमानी । प्रातहिं करब गोष्टि कहानी ॥
छन्द-तेहि दियो आसन आत्म पोषन भाव सहित समर्पेऊ ॥
द्विज कीन्ह भोजन सेज पौढ़े रैन हिये बहु तर्केऊ ॥
चिन्ता करत बहुत गुनावन वेद विधान ज्ञान अटावहीं ॥
होत प्रात कीजे वाद जो लहहिं जीव युक्ति अटावहीं ॥
साखी-बीतेउ रैन प्रभात औ, करि विचार मन माहुँ ॥
सत्यनाम पद सुमिरिकै, पहुँच गये तिहि पाहुँ ॥
सोरठा-भयेउ विप्र उठि ठाढ़, गयेउजंगलकी दिसा ॥
करत तरक चित गाढ़, बैठे तजे शरीर मल ॥

चौपाई ।

हम गै रामनाम तेहि कहेऊँ । सुनतहिविप्रहृदयअतिदहेऊँ ॥
भयेउकोपअतिकीन्हप्रसनजल । इच्छायुक्तिनासिकै तजीमल

सर्वानंदबचन ।

कहै विप्र देख्यो तुव ज्ञाना । फिरिजोलहातुम्हजाति अयाना
ऐसे समय राम तुम्ह बोले । कहा कहो हरि त्रास न डोले॥

कबीर बचन ।

अहो विप्र मोहि कहहु बुझाई । कौनी समै रामलौ लायी ॥

सर्वानंद बचन ।

कहा सर्वानन्दसुनहु जोलाहा । करम नीतिभाषी तोहिपाहा॥
वेद प्रमान लै माटी पानी । तबमुख शुद्धराम जपुजानी ॥

कबीर बचन ।

अहो विप्र जौ हम अस करहीं । तौ मुख शुद्ध होय संचरहीं॥

सर्वानन्द बचन ।

कहै विप्रहै वेद प्रमाना । तब मुखहोय पवित्रसुजाना ॥
यह कहिचलिभौ सुरसरितीरा । कर पग मज्जहिं मुखदे नीरा॥
हम पुनिकर पगु मज्जे लीन्हा । कर पखारिपुनिकुल्लाकीन्हा॥
कुल्लाकीन्ह द्विजवचनप्रमाना । एक कुल्ला तेहिं ऊपर ताना ॥

सर्वानन्द बचन ।

चिहुँकिउठे द्विजयहकाकीन्हा॥ फिरिजोलहातुम्हजातिकमीना

कबीर बचन ।

हो सर्वानन्दमुख शुचि भयउ । कुल्ला कीन्हअशुचि तरगयउ॥
यहि विधि मुखशुचि तुमभाखा । तुम्हरो कहा हिये महँराखा॥
हो सर्वानन्द तुल्लबड ज्ञानी । सत्य नाममर्मअजहूँनहिजानी॥
रज अरु बीज नरककी देही । सदा अशुचि शुचिनामसनेही॥
जोमल तजत प्राणकरे गवना । कर मुखशुचि हरिजप कवना॥
समुझि शब्दसो रहु मुखचाहू । उत्तर कछु तबदीन्ह न ताहू॥
पुनिद्विजमंजनलागु शरीरा । ताम्रपात्र एक लीन्ह कबीरा ॥

गोबर घोरि ताहि भरिलीन्हा।वरतन कर मुख ढाँकन दीन्हा॥
लै त्रिन रे नु जल मंजै ताही । झलकै अधिक प्रगट मल नाही॥

सर्वानन्द वचन ।

कहा सर्वानन्द सुनहुँ कबीरा । भो सुन्दर वर्तन मति धीरा ॥
केहि कारण अब माँजहु भाई। मल नहि तनिको देइदिखाई॥

कबीर वचन ।

सुनु पंडित नीक तुम्ह कहेऊ। अपर शुचि अन्तर मल रहेऊ॥
मोहडा खोलि उलटि दिखलावा।सर्वानन्द देखि धिनपावा ॥
सुनु सर्वानन्द अस नर बाता । अंतर मल प्रगट शुचिगाता ॥
जलमअन तनमैल नशायी।मन मल कहोकवन विधि जायी॥
विनुगुरु ज्ञान न मन शुचि होई । रैन दिवस तन मज्जै कोई ॥

सर्वानन्द वचन ।

कहै विप्र मन मल कहु मोहीं ।

कबीर वचन ।

कहै कबीर कहों मैं तोहीं ॥
काम क्रोध तृष्णा हंकारा । लोभ मोह मन मैल विकारा ॥
परनिन्दा परघात अनीती । मन रहै अशुचिकु कर्म कुनीती ॥
छन्द-सुनु विप्र सोई पंडित सोई ज्ञाता जो परमोपै पाचहीं॥
जहँ लगि योगी मुनी मुनीश्वर पांच वशि सब नाचहीं ॥
यहि पाँचके परपञ्च महँ सब परे शिव सनकादि हो ॥
इन्द्र आदि अरु बहु भेष लूटे विष्णु ओ ब्रह्मादि हो ॥
साखी-असरे पखेरिन्ह लूटिया, को नर कीट पतंग ॥
कहै कबीर सो ऊबरे, निरखि परखि करे संग ॥
सोरठा-करि गुरु पद परतीति, सद्गुरु शब्द निरखत चले ॥
निश्चै पाँचौ जीति, घर अंजोर जागत रहै ॥

चौपाई ।

सर्वानन्द मगन मन भयऊ । पै उत्तर कछुओ नहि दियऊ ॥
 पुनि लागे जल अरपे सोई । चित निश्चल छन एक न होई ॥
 हम जल उलिचन लागु करारे । सर्वानन्द पुनि मोहिं निहारे ॥
 सर्वानन्द वचन ।

कहैं सर्वानन्द सुनहु कबीरा । काह कवन उलिचत हौ नारा ॥
 कबीर वचन ।

कहैं कबीर सुनु विप्र सुजाना । फुलवारी गुरु केर सुखाना ॥
 तेहि सीचन कहैं पठइन्हि नीरू । सुनुपण्डित अस कहहिं कबीरू ॥
 सर्वानन्द वचन ।

कह सर्वानन्द यह अनरीती । बात अगम भाषहु विपरीती ॥
 कहां धौं फुलवारी है भाई । जल सुरसरि महुँ रहै समाई ॥
 कबीर वचन ।

तब हम कहा सुनु पण्डितराजू । तुम्ह जल उलिचौ कौने काजू ॥
 सर्वानन्द वचन ।

कहा सर्वानन्द सुनहु गोसाईं । देव पितर जल तृपित अघाई ॥
 कबीर वचन ।

हो सर्वानन्द कहहु यह मोहीं । कहा पितर तुव पूछों तोहीं ॥
 सर्वानन्द वचन ।

कहे सर्वानन्द सुनहु सुजाना । देव पितर मम स्वर्ग अस्थाना ॥
 कबीर वचन ।

कहै कबीर जल ठामहिं रहई । कहहु पितर धौं केहिविधिलहई ॥
 कीधौं जलहिं रहै तव पुरखा । पढ़ेहु वेद यह लखेहु न मुरखा ॥
 वेद शास्त्र नहिं करहु विचारा । हरिके वचन आहिं जग सारा ॥
 पित्ररूप जनार्दन भाखा । जनार्दन आपु सन्तन्ह महुँ राखा ॥

हमरे अस मति जानिय भाई । साधु माहिं प्रभु प्रगट रहाई ॥
 जहाँ हरी तहाँ पितर अरु देवा । सब होइ तृप्त साधुकी सेवा ॥
 कहाँ अन्तै प्रभु खोजौ जाई । हम देखैं प्रभु सन्तन आई ॥
 हरिऔ सन्त दौयजनिजानौं । प्रभुकहँ सन्तन्ह माहिं पिछानौ ॥
 अस परतीति आनहु उरमाहीं । सन्तन्ह तजि अन्तै प्रभु नाहीं ॥
 जल तरंग जल आहै भाई । हरि हरिजन अस माँहि रहाई ॥
 जैसे वृक्ष वृक्षकी छाया । अस हरिहरिजन माहिं रहाया ॥
 छन्द-तुलसी अभूषणजीवदाया तहाँ आपु हरिनिशिदिन रहैं ॥
 अरु तहाँ प्रगट निवास प्रभु गुरु साधु सेवा जो गहैं ॥
 हैं आपु सर्व भूतमय प्रभु गुप्त प्रगट लेखिये ॥
 हरि प्रगट सन्तन्ह गुप्त जग शास्त्र निगम विवेकिये ॥
 दोहा—हरि पूरण सब माहिहै, पण्डित करहु विचार ॥
 ज्ञान दृष्टि ते परखहु, कहै कबीर विचार ॥
 सो०—ज्ञान दिव्य जब होय, करम गरम तब छूटई ॥
 पण्डित गहहु विलोय, देव पितर सब साधु महँ ॥
 चौपाई ।

रहेउमुग्ध होय कछु नहिं बोला । ज्ञाताशब्द परखिहिय डोला ॥
 पुनिचौका करि शिला विडावा । प्रतिमा पूजन कहँ मन लावा ॥
 वेद नित्य बहु करहिं विधाना । तहाँ हमहुँ उपाय यकठाना ॥
 मूरतिन कहँ पुनि पृच्छहिं कुशलाता । कहै न मूरति कछु मुखवाता ॥
 हो पण्डित कस देव तुम्हारा । एकहु बात न सुनहिं हमारा ॥
 तब हम पण्डित सो यह कहिया । प्रतिमा पूजन जेहि चितरहिया ॥
 कबीर वचन ।

हो पण्डित कस देव तुम्हारा । एकहु बात न सुनहिं हमारा ॥
 मेवा मिठाई साजि धरु आगे । खाहिं न मूरति परम अभागो ॥

आँख कान मुख नाहीस्वासा । केहिबिधिमूरतिकरहिं गरासा
 हो पण्डितजनि सुनत रिसाहू । कहो परमारथ शब्द उछाहू ॥
 मूरति सरीजव पूजहू ताहीं । इन्ह ते सृष्टि उहै सुनु आहीं ॥
 सरजिव पाती तोरितुम आना । सो लै निरजिव पूजा ठाना ॥
 हो पण्डिततुम आप न चीन्हा । विनु गुरुज्ञान चक्षुबुधि हीना ॥
 जग महँ व्याह करै जो कोई । आपुते अधिक होय जो सोई ॥
 आपुते अधिक मिलै जो नाहीं । तौ निज समन रखो जमिलाहीं ॥
 तुम सर्जीव घट ब्रह्म समायी । कसनिर्जीव अबोल मन लायी ॥
 सरजीव होय सरजीव कहँ सेवे । ज्ञानी शब्द परखि दिय लेवे ॥
 मैं तोहि कहौं सुनो हो देवा । जिव है अमर अलेख अभेवा ॥
 जीव अमर तन विनशै भाई । तन धरि जीव बहुत दुख पाई ॥
 अमर नाम जब जीए भेटैं । तब जन्म मरण को संशय मेटैं ॥
 अमर नाम खोजहु द्विजराई । जेहि प्रतापयमनिकटन आई ॥
 अमर नाम सत्पुरुष को सारा । सत्यपुरुष सत्यलोक मँझारा ॥
 अमर लोक सतलोकहि आहीं । तीनिलोक परलैतर जाहीं ॥
 कृत्रिम कला नाम धरु जेते । जनमै मरै प्रलय भै तेते ॥
 जासु चोलना अमर है भाई । तासु नाम अमर सुख दाई ॥
 अमर देह सत्पुरुष कै आही । वो नाहिं आवैं गर्भ के माही ॥
 जो सतगुरु पद रहै समायी । ते हंसा सत्यलोक हीं जायी ॥
 अमर नाम सतगुरु ते पावै । सतगुरु अस्थिर ध्यान लखावै ॥
 भूत भविष्य जपै नर लोई । सत्यनाम विनु मुक्ति न होई ॥
 वरतमान महँ सतगुरु सारा । सतगुरु भवतारण कँडिहारा ॥
 जागृत स्वप्न सुषुप्ति तुरीया । जागृत आहि सजीवन मुरिया ॥
 जागृत रहै तुरिया सो पावै । स्वप्न सुषुप्ति जग भरमावै ॥
 पुरुष विदेह तुरिया अस्थाना । जागृत ब्रह्म देहुमों जाना ॥

तीरथ बरत जप पूजा पाती । करम भरम ओ जातिकुजाती ॥
 यह मति स्वपन सुषुप्ती अहई । जागृत विनु कोई भेद नलहई ॥
 जागृत ब्रह्म देह धरु सोई । सबसे श्रेष्ठ साधु गुरु होई ॥
 बोलता तजि किमि जड़लो लायी । जड़पपान सेव कहँपायी ॥
 इतना कहि फिर हम कहिया । तिन आपन हाथयक बाहर रखिया ॥
 हो पण्डित यक बूझों तोही । करि विवेक चित कहिये मोही ॥
 बायँकर चोका के बाहर । केहि कारण सो कहहु विद्याधर ॥

सर्वानन्द वचन ।

सर्वानन्द कहै अस सूत्रा । बाएँ कर परसे मल मूत्रा ॥
 केहि कारण यह कीन्ह निषेधा । चौकाके बाहर कर जिन्दा ॥

कबीर वचन ।

कहै कबीर यह अचरज बाता । उलटी रीति अपंथ जग जाता ॥
 तुम्हरे हृदय महुँ मल भरिया । मलद्वारे मल त्यागित करिया ॥
 कर शुचिकरै अशुचि मल द्वारा । ताहि निषेध तुम करि डारा ॥
 विपरीति कथा कहौ कस भाई । राजा पण्डित सब अन्याई ॥
 धन्य पण्डित धन्य तोर वेदा । कहै कबीर सिद्ध मत भेदा ॥
 सुनिवाणी चित भये उअँजोरा । लागेउ शब्द प्रेम हित मोरा ॥
 नायशिरतिन दुइकर जोरा । जोकछु कहो सो है सब थोरा ॥
 पुनि जलपान करै तिन्ह चाही । जल माटीके वरतन माही ॥
 करवा छुई दीन्ह हम भाई । सर्वानन्द चित रहेउ सकाई ॥
 कर करवा लै रह मुख चाहीं । भरम बडो जल अँचवै नाहीं ॥

सर्वानन्द वचन

कस छुयेउ मम वरतन स्वामी । हम ब्राह्मण तुम यती अनामी ॥
 कबीर वचन ।

हो पण्डित यह कहहु बुझायी । उत्तम मध्यम सो कोहै भाई ॥

छन्द--तनअस्थि माँस रुधिरत्वचा सर्व में सुनु एकहै ॥
 प्रकृति तत्त्व त्रिगुण सबै कह कौन भेद विधेकहै ॥
 सो ब्रह्म विप्र सर्वमयी सर्वमयी सुनु एक जो ॥
 पढि शास्तर निगम पुराण बहु भरम कहा मंडेकजो ॥
 दोहा--कर्म अशुचि जेहि देखिये, सो अस करै विचार ॥
 सन्त सों दुचिताइ किये, कहैं कबीर पुकार ॥
 सोरठा--मन महुँ रहेउ लजाय, सर्वानन्द अनीति लखि ॥
 मम पदशीश नवाय, कहैं धन्य तुम्ह धन्य हो ॥
 चौपाई ।

जब प्रसाद कै कीन्ह अरम्भा । तबजमि बालकको देतहैथम्भा
 हमहिकहसि गवनहुँ प्रभुगेहा । करब प्रसाद पोषननिजदेहा ॥
 तासु हृदय बुधिलखिहमपाये । ताते वेगि भवन चलि आये ॥
 तबउनअशुचकर्मयक कीन्हा । धर्मदास तुम सुनो प्रवीना ॥
 अजा एक पुनि गुप्त मँगायो । गुप्तहिं ताकर गला कटायो ॥
 निजसेवकनसोकहिसमुझावै । अजया सुधि कबीर नहिं पावै ॥
 गुप्त रसोई मासु रँधायेसि । बहुविधि अन्तरपाट दिआयेसि
 तब चौका पर बैठे जबहीं । हाड़ एक कर लीन्हेसि तबहीं ॥
 तेहि क्षण हमहुँ पहुँचे जायी । मोहिं देखत रहु शीश नवायी ॥

कबीर वचन ।

तब हम कह्यो सुनो द्विजराई । हमते अन्तर पाट दिवाई ॥
 गुप्त अकर्म करै नर कोई । प्रभु ते नाहिं छिपै पुनिसोई ॥
 जगकर्ता तुम सङ्गहि देखै । नाहि न लखै नर वह सब पेखै ॥
 पाप पुण्य नहिं छिपै छिपाये । केतिक जो नर राखु दुराये ॥
 नरनारी जिमिलहसुन खायी । गुप्त खाहिं वह पुनि प्रकटायी ॥
 तुम्ह अस श्रुतिधारी सज्जानी । सो नहिं चलहु पाठ पहिचानी ॥
 हाथ हाडमुख थारिहि हाडा । स्वान स्वाँग बन्यो अतिगाढा ॥

धन्य धन्य तुम्ह पण्डित राजू । तुम ब्राह्मण हो का कर काजू ॥
 करि अस्नानतिलक शुठि नीको । कांधजनेऊ चाल विनु फीको ॥
 उत्तम जाति चालु किमि नीचा । छुये चमार तब घालहु सींचा ॥
 तोहि औ स्वानसो कस भीना । विप्र चमार चाल तुम्ह हीना ॥
 पछिलीरीति नहिं समुझहु भेवा । सनकादिक नारद शुकदेवा ॥
 किन असकर्मकीन्ह कहु मोही । द्विजकी चाल न देखौ तोही ॥
 हो पण्डित तोहि दया न आई । कैसे परगल काटे भाई ॥
 कर्म कसाई विप्र कहावहु । मानुषदेह तुम वादिगँवावहु ॥
 सर्वमयी भाषहु भगवाना । केहि गरकाटेहु कहहु सयाना ॥
 जीव दया जेहि हृदये नाई । कहैं कबीर सो आहि कसाई ॥
 गीता भागवत देखु विचारी । जीव दया भाषै बनवारी ॥
 जिह्वा स्वाद काज जिव खोवे । जानि बूझि का जनमविगोवे ॥
 एक तो भूले मूढ अयाने । तुम्हका दृष्टि देखि बौराने ॥
 भूले मूढ जगतके ज्ञानी । तुमको सृष्टि देखि बौरानी ॥
 लाग्यो शब्द सारहियमाहीं । चित गहिपरचे आउ हिय माहीं ॥
 तेजि हाँड़ पदगहि अकुलायी ।

सर्वानन्द वचन ।

मोहि अचेत कहँ लिये उजगायी ॥
 मैं भूलेउँ विद्या अभिमाना । अब हिय बेध्यो शब्द सहिदाना ॥
 मुख मंजन करि उठे तुरंता । पद गहि कहै तब कला अनन्ता ॥
 अब मोहि शरण लेहु तुम स्वामी । कृपा करहु प्रभु अन्तर्यामी ॥
 पुस्तकबहुत आनिधरि आगे । दीन वचन कहि अति अनुरागे ॥
 रामानन्द पहुँ तेहि लै गयऊ । गुरुकी दिक्षा ताहि दिवयऊ ॥
 भक्ति भेष तिन्ह लीन्हेसि भाई । गुरु ढिगकर हिसा धुसेवकाई ॥
 गुरुते बिदा मांगि दिन एका । जननी पहुँ कहि चले विवेका ॥

धन्य धन्य जननी सुखदायी॥ जिन्ह यह मोहि उपदेश बतायी॥
जाय भवन निज पहुँचे जबही । धाय जननि पग लागै तबही
छन्द—तुम धन्य माता मोहि उपधारेउ कहेउ सार उपदेश हो ॥
जाय दास कबीर कहिउन्ह हरेउ कालकलेश हो ॥
मैं थकेउँ उनते वाद करि वे ब्रह्म अविचल नाथ हो ॥
कछु कहत बनै ना कला उनकी भयउ बहुत सनाथ हो ॥
साखी—सुनु जननी यह चित्त दै, हम उन कह शिक्षा लीन्ह ॥
मोहि प्रतीति उनसे वैसी, उन्ह गुरु कै दिक्षा दीन्ह ॥
सोरठा—भै जन्म शुभ मोर, पहुँचेउ मोक्ष रु मुक्ति घर ॥
जननी गुण बड़ तोर, कबहुँ न हृदय ते विसारिहौं ॥
इति सर्वानन्दकी गोष्ठी ।

सतगुरुवचन—चौपाई ।

हे धर्मदास तोहि कहि समुझावा। सर्वानन्द सो जो बनिआवा ॥
धर्मदास वचन ।

धन्य धन्य साहिब अविगत नाथा। प्रभु मोहि निशिदिन राखो साथ
सुतपरिजन मोहि कछु न सोहाई। धनदारा तिहुँ लोक बड़ाई ॥
सतगुरु वचन ।

सुनु धर्मनि तुम्ह हमरे साथ । मिली सुगति तब दुइ नहिं बाता ॥
निगखो सुगति नाम लौ लाओ । तन छूटे सत्य लोक सिधाओ ॥
जीवन शब्द चेतावहु भाई । चेतहिं जीव पुरुष लौ लाई ॥
अङ्ग मोर तुम लेहु सँभारी । जम्बूद्वीप तुम करहु कडिहारी ॥
लै जीवन सतभक्ति दृढाओ । तब तुम्ह सत्य पुरुष कहँ भाओ ॥
सवालाख लै आरति करई । बोधहु जाहि लोक संचरई ॥
धर्मदास वचन ।

हे साहेब मैं बूझों तोही । दया करी प्रभु कहिये सब मोही ॥
सवालाख नहिं होय जेहि पाहीं । ताहि कहहु बोधबर्कानाहीं ॥

सतगुरु वचन ।

धर्मदास जनि ताहि प्रबोधो । सवालाख अरपै तेहि बोधो ॥

धर्मदासवचन ।

हो साहेब तब बनिहैं नाहीं । सवालाखविनुजीवयमखाहीं ॥

सतगुरु वचन ।

सुनु धर्मनि जौ आधौ होई । करि आरति देउ पानसंजोई ॥

धर्मदास वचन ।

हो साहेब भाषहु कछु थोरा । होय निस्तार जीवनबन्दीछोरा ॥

सतगुरु वचन ।

धर्मदास जो विन्ती करहू । सवालाख चौथाई धरहू ॥

धर्मदास वचन ।

हो समरथ यह दाया कीजै । बोझ थोर जीवन पर दीजै ॥

द्रव्यहीनजिवकेहिविधितरिहैं । यम राजा तेहि भक्षणकरिहैं ॥

सतगुरु वचन ।

धर्मनि चौथाईहु चौथाई । यहि प्रमाणलै आरति लाई ॥

धर्मदासवचन

अहोसाहेब कलिजीव अयाना । भाषहु शब्द थोर परवाना ॥

भाषहु थोर तुव पद लौलीना । कलियुग जीव द्रव्य केहीना ॥

सतगुरु वचन ।

हो धर्मदास मानहु शिरनाई । अब जो कहा सोरा खुट्टाई ॥

हम निः इच्छा चाव कछु नाहीं । है मर्याद गुरुसेवा चाहीं ॥

गुरू साधु सेवा नहिं करिहैं । कहोसोजीवकौनेविधितरिहैं ॥

चौथाई कर जो चौथाई । तासु चौथाई मान लेहुभाई ॥

धर्मदास वचन ।

हो प्रभु मैं चित बहुत सकाऊं । कत साहिब सो उत्तरलाऊं ॥

जाहि न होय शक्ति गुरु एता । सोजिव ऐसहि जाय अचेता ॥

औरौ थोर कहौ प्रभु राई । जेहि ते जीव नयमधरिजाई ॥

सतगुरु वचन ।

धर्मदास बहु कीन्ह निहोरा । कह्योसोवचनमानलियोतोरा
यहजोकहेऊँचोथाईतेहि होई । तासु चोथाईकरिआरतिसोई॥
हो प्रभु कलिके जीव दरिद्रा । जाहि न होइहैं एतिक मुद्रा॥
सो कैसे तोहि पेहै स्वामी । कहहु थोर प्रभु अन्तर्यामी॥

सतगुरु वचन ।

धर्मदास बहु कियेहु महताई । सवा पांच मुद्रा लेहु भाई ॥

धर्मदास वचन ।

हो प्रभु विनती करों बहोरी । जाहिनएतिककिमिबंदीछोरी॥

सतगुरु वचन ।

सुनु धर्मनिदोयनारियर आनै । सवा पाँच आधो लै ठानै ॥

धर्मदास वचन ।

सवा पांच आधो जेहि नाही । हो प्रभु सो जिव कैसतराहीं॥

सतगुरु वचन ।

धर्मनि जेहि इतनो नहिं होई । तासु प्रमोघेहु कहौ बिलोई ॥

सवासेर मिष्टान्न मँगाओ । पान सवा सै उत्तम लाओ ॥

सवा हाथ बस्तर पुनि श्वेता । अग्र पुहुप पूँगी फल चेता ॥

गोघृत शुचि दीपक बारी । बैठि सिंहासन नाम सुधारी॥

अन्तरध्यान सुरति संचरिये । सत्यसुकृतकहँ मालुमकरिये॥

यम तृण तोरहु वीरा दीजै । शक्ति होय तब आरतिकीजै॥

प्रति सम्बत गुरुआरति चाही । आरति करै शक्ति होय जाही॥

शक्ति अछतनहि आरति करई । भक्ति हीन बहु संकट परई॥

माया ठगनी आहि रे भाई । यह काहूके संग न जाई ॥

जिन गुरु साधु सेवाचितलावा । सो मायाकहँ जीतिसिधावा॥

जिन माया कहँ जोगयो भाई । नहिं परमारथ स्वारथ लाई॥

सो जीव अन्त बहुत दुखपावै । भक्तिहीन यम नाच नचावै॥

धर्मदास वचन ।

हो प्रभु तुम्ह सतपुरुष कृपाला । अन्तर्यामी दीन दयाला ॥
मोहि निश्चय तुव पद विश्वासा । यह माया स्वपनेकी आशा ॥
जिन्ह जिन्ह माया नेह बढाया । तिन्हरेनिजरजन्मगँवाया ॥
सवा लाख तुम मोहि बतायो । सवाकरोड प्रभुआरतिलायो ॥
औ जन सम्पति मोर घर आही । अरपौं सभै संतन जो चाही ॥
तुम प्रभु निःइच्छा नहिं चाहो । धन्य समरथ मर्याद दिढाहो ॥
सो जिव पाँवर नरकै जायी । शक्ति अछत जो राखु छिपायी ॥
हो प्रभु कछु विनती अनुसारुं । बक्सहु ढिठाई तोवचनउचारुं ॥
सवाशेर भाषहु मिष्टाना । औरो वस्तु सवासो पाना ॥
हो प्रभु कोइ जिव भिक्षुक होई । भीख माँगि तन पालै सोई ॥
सो जिव शब्द तोहार न जानै । कहहु केहिविधि लोक पयानै ॥

सतगुरु वचन ।

हो धर्मनि जौ अस जिव होई । गुरु निज ओर करै पुनि सोई ॥
इतने विनु जिव रोकि न राखा । छोरीबन्ध नाम तिहि भाखा ॥

धर्मदास वचन ।

धन्य धन्य तुम दीन दयाला । दया सिन्धु दुखहरण कृपाला ॥
छन्द-तुम धन्य सद्गुरु जीव रक्षक कालमर्दन नाम हौ ॥

शुभ पन्थ भक्ति दिढायऊ प्रभु अमर सुखके धाम हौ ॥

मैं सुदिन आपन तबहिं जान्यो प्रथमपद जब देखेऊ ॥

अब भयेउँ सुखी निशङ्क यमते सुफल जीवन लेखेऊ ॥

दोहा-विनती एक करौं प्रभु, कृपा करहु जगदीस ॥

दो सेवक जो तुम मिले, सो तो कहूँ नहिं दीस ॥

सतगुरु वचन ।

सोरठा-धर्मदास लेहु जानि, हम वो एकै थान है ॥

कहौ शब्द परमान; वो हम में उन माँहि हम ॥

धर्मदास वचन चौपाई ।

हो प्रभु उन्ह मोहिं बडसुखदीन्हा । तुम भये गुतराखि उनलीन्हा ॥
 विरह सिन्धु बूझत उन्ह गखा । उन्ह दरशनकी है अभिलाखा ॥
 हो धर्मनि हममाँहि उन्ह देखो । उन्ह मोहिं द्वितिय भाव जनि लेखो
 स्वामी सेवक एकै प्राना । परिचै सुरति नाहिं विलगाना ॥
 हो धर्मनि तुमहँ हम माहीं । मोहितोहिं अब अन्तर नाहीं ॥
 जो सेवक गुरु सुरति खमीरा । जीवनमुक्ति सो आहि कबीरा ॥
 जेहि सेवक गुरुहीं परशंसा । कहै कबीर सो निर्मल हंसा ॥
 सेवक कहँ अस चाहिये भाई । गुरुहिं रिझावे आपु गँवाई ॥
 जिमिनटकलामगन होय खेला । तिमि गुरुभक्तिमगन होय चेला ॥
 निजतनमन सुख स्वाद गँवावै । मन वच कर्म गुरुसेवा लावै ॥
 निशिवासर सेवा चित देई । गुरुहिं रिझाय परमपद लेई ॥
 जगमहँ सेवावश भगवाना । धर्मदास यह वचन प्रमाना ॥
 सेवक सुरति प्रीति वश भाई । शून्य महा वस्ती होय जाई ॥
 तैसी प्रीति सुरति शुचि सेवा । किमि प्रसन्न नहिं होहिं गुरुदेवा ॥
 धर्मनि सो सेवक मोहिं भावै । जो गुरु साधु सेवा चित लावै ॥
 सेवा करि नहिं धरै हंकारा । रहै अधीन दास सोइ प्यारा ॥
 हा धर्मनि तुम्ह अससिख अहहू । हम तुम्ह एकसाँच हिय गइहू ॥

धर्मदास वचन ।

धर्मदास पद गहे अनुरागा । हो प्रभु तुम्ह मोहिकीन्ह सुभागा ॥
 मैं पाँमर गुणहीन कुचाली । तुम्ह दीन्हेउ मोहि पन्थ मराली ॥
 हे प्रभु नहि रसना प्रभुताई । अमितरसन गुणवरणि नहि जाई ॥
 महिमा अमित अहै हो स्वामी । केहि विधि वणों अन्तर्यामी ॥
 जेहि सेवक पर होय तवदाया । ताके हृदय बुद्धि अस आया ॥
 पूरण भाग करै सेवकाई । धन्य सेवक जिन्ह गुरुहिं रिझाई ॥
 मैं सब विधि अयोग्य अविचारी । मोहि अधमहिं तुमलीन्ह उबारी ॥

अब यह दया करो सुखदाई । दोउ सेवक कै दरशन पाई ॥
बड़ उच्छा उन्ह दरशन केरा । हो प्रभु हम आहीं तुअ चेरा ॥

सतगुरु वचन ।

मुनु धर्मनिदरशन तिन्हिपैहौ । लीला देखि थकित होइ जैहौ ॥
आप तीनरूप प्रकट दिखावा । एक तीन होय एक समावा ॥
धर्मदास अचरज है रहेऊ । समिता होय युगल पद गहेऊ ॥
लीला देखि चकित भयेदासा । पुनि विनती एक कीन्ह प्रगासा ॥

धर्मदास वचन ।

हे प्रभु अविगति कला तुम्हारी । हम हैं कीट जीव व्यभिचारी ॥
सत्यलोक तुम्ह वरणि सुनावा । सोभा पुरुष हंसन सतभावा ॥
कैसन देश राज वह आही । चित इच्छा प्रभु देखन ताही ॥

सतगुरु वचन ।

धर्मदास यह निरघिन काया । यहितन पुरुष दरश किमिपाया
तन ठीका जब पुरिहै आई । सत्यलोक तब देखहु जाई ॥

धर्मदास वचन ।

धर्मदास गहि चरण निहोरा । हे प्रभु तृषा मिटावहु मोग ॥
चरण टेकि प्रभु विनवौं तोहीं । पुरुष दरश विनु कल नहि मोहीं ॥

कबीर साहिबका फिर अन्तर्धान होजाना और धर्मदास

साहबका विकल होना ॥

गुप्त भये प्रभु अविगत ताता । धर्मदास मुख आवै न बाता ॥

धर्मदास विलाप ।

मैं मतिहीनकुमति मुहिलागा । मोहिंसम को जग आहि अभागा
मैं मूरख प्रतीति न कीन्हा । अस साहेब कब मैं नहि चीन्हा
अब कौने विधि दरशन पाऊँ । दरशन विनु मैं प्राण गवाऊँ ॥
चरणोदक बिनु करौं न ग्रासा । तजौं शरीर कहैं धर्मदासा ॥
दिवस सात लगि अन्न न खावा । भजन अखण्ड नाम लौलावा ॥

कबीर साहिबका पांचवीं बार फिर धर्मदासजीको दर्शन देना ।
 सतयें दिन प्रभु प्रगट देखाये । धर्मदास पद गहि अकुलाये ॥
 धरहि न श्वासहि निपट अधीरा । परे चरणमहँ क्षीण शरीरा ॥
 कर गहि साहब तबहिं उठावा । शीश हाथ दै अंक मिलावा ॥
 धर्मदास चरणोदक लीन्हा । चरण पखारि आचमनकीन्हा ॥

सतगुरु वचन ।

हो धर्मदास प्रसाद कछु पाओ । करि प्रसाद तव मोपहँ आओ
 छन्द-चित सकुचि धर्मनि विछुरन गुनि सर्वत्र सब हौराकिये ।
 कछु जाइ अलय प्रसाद ततक्षण तृण जल अंचवनलिये ॥
 पुनि वेगि समरथ निकट आये सकुचि चित ठाढे भये ।
 अनुशासनो कहु धर्मनि कहा चित चिन्ता भये ॥

धर्मदास वचन ।

दोहा-धर्मदास कह नाइ शिर, सुनु प्रभु अगम अपार ।
 सात दिवस कहवाँ रहे, कौन दिशा पगु ढार ॥

सतगुरु वचन ।

सोरठा-धर्मनि सुनु चित लाय, जौन दिशा हम गौन किये ।
 कालिंजर पहुँचे जाय, तहाँ पुनि शब्द प्रकाशेउँ ॥

धर्मदास वचन-चौपाई ।

हो साहेब कै जीव परमोधा । कौन शब्द सो आन समोधा ॥
 आरति चाका नरियर मोरचो । कै जीवन यमते तृणतोरचो ॥

सतगुरु वचन ।

धर्मनिसुनहु ताहि सहिदाना । तहाँके जीवहिं नहिं दीन्हप्रवाना
 आरति चौका तहाँ न कीना । नहीं तहाँ नरियर मोरु प्रवीना ॥
 वचनबंध जीवन कहँ कियेऊँ । साखी शब्द रमैनी दियेऊँ ॥
 कहिआयेऊँ तहँ वचनठिकाना । धर्मदास सोन लियेहुप्रवाना ॥

जम्बूद्वीप कलिके कडिहारा । धर्मनिबाहु जीव होयँ पारा ॥
 धर्मनि बाँह जिय पहुँचे आयी । देहु पान जेहि आरतिलायी ॥
 शब्द मानि पुनि मस्तक नाया । पुरुष दरशकै बात जनाया ॥

धर्मदास वचन ।

हो प्रभु चिन्तागत करु मोरा । पुरुष दरश देउ करों निहोरा ॥
 सतगुरु वचन ।

धर्मदास यह हठ का करहू । मानहुँ शब्द शीस पर धरहू ॥
 हमरे गहे पुरुष पहुँ जैहो । विना गहे उहां जान नपैहो ॥
 हमसों पुरुष सो ऐसी अहई । जल तरंगजल अन्तर रहई ॥
 जिमिरवि औरवि तेजप्रकाशा । तिमिमोहि पुरुष अन्तर धर्मदासा ॥
 हमरी सुरति गहौ चितलायी । तबहीं पुरुष पद दर्शन पाई ॥
 शिष्य हृदय प्रतीति अस आनै । गुरु औ पुरुष भिन्न नहिं जानै ॥
 जौ लौं चित्त अस रीति न आवै । तौ लौं जिवनहिं लोक सिधायै ॥
 धर्मदास चित बहुत सकाने । चरण टेकि बहु विनतीठाने ॥

धर्मदास वचन ।

हो प्रभु सत्य कहौ तोहि पाहीं । तुम्हते कुछ दुचिताई नाहीं ॥
 मोरे तुमहिं पुरुष हौ स्वामी । यमते छोड़ावहु अन्तर्यामी ॥
 हो प्रभु बरणेउँ लोककी शोभा । ताते आहि मोरममलोभा ॥
 तव लीला बहुतै हम देखा । पुरुष दरशविनुरहै हियरेखा ॥
 जौ किंकर पर होहु दयाला । तौ छिन महँ होय गतउरसाला ॥

सतगुरु वचन ।

धर्मनि जौ ऐसो चित कीन्हा । तनुतजि चलौ लोकप्रबीना ॥
 राखेउ तन गौने लै हंसा । तहँ पहुँचे जहँ कालै संसा ॥
 लवन एक महँ पहुँचे जाई । अविगति लीला लखै कोभाई ॥
 शोभालोक देखि सुख माना । उदित असंख्य शशि औ भाना ॥

जितदेखिये जगमगझलकाहीं । देखत छकित भये हियमाहीं॥
 द्वारपाल हंस जो रहिया । ता महुँ एक हंसहिँ असकहिया
 एहि हंसहि तुम्ह जाहु लिवाई । पुरुष दरश दै आनहुँ भाई ॥
 चले लियाय पुरुष पहुँ जबहीं । झझकि हंस बहु आये तबहीं॥
 करत कोलाहल मंगल चारा । शोभा अद्भुत अंग अपारा ॥
 हंसन शोभा कहाँ बताऊँ । कछुक प्रभाव सोवरणिसुनाऊँ॥
 रतनमाल त्रिवशोभित हंसा । औ मणिमाल किमिकरौँ प्रशंसा
 जगमग देह हंसन करहीं । अमर चीर बहु शोभाधरहीं ॥
 उडुगण चिकुरशोभाछविआछेरविकाकरताररोम छबिकाछे॥
 हंसन्हभालशोभाकिमिकहऊँ । पोड़स चन्द्रभाल छबिलहऊँ॥
 हंस कान्ति प्रति रोम प्रकासा । हीरामणी उदित रोमासा ॥
 कोटिकविधुहंसन छबिमोहा । देह घ्राण शोभाअमीगिरोहा॥
 षोडश रवि हंसन छबिमोहा । देह घ्राण शुभ अमृत सोहा ॥
 कञ्चनकलशजडितमणिलोना । रतन थार आरतिमहिसोना॥
 हंस मगन शब्द मुख उचारा । क्रीडाविनोदरतन मणियारा॥
 सुरति हंस कहँ आगे लीन्हा । नृत करत चले हंस प्रवीणा ॥
 सुरति हंस अत्रानि अघाने । पुरुष सकल देखत हरपाने ॥
 सिंघासनछवि देखत मनमोहा । अद्भुत अमित कलातन सोहा॥
 पुरुष राम एक कला अनन्ता । वरणत कोउ न पावै अन्ता ॥
 एक रोम रवि शशि कोटीशानखकोटिन्हविधुमलिनरवीशा
 पुरुष प्रकाश सतलोक अँजोरा । तहां न पहुँच निरञ्जनचोरा॥
 पुरुष कबीर देखा एक भाई । धर्मदास पुनि रहे लजाई ॥
 पुरुषदरश करि आयेउ तहुँवा । प्रथम कबीर बैठे रहे जहुँवा ॥
 इहां कबीर बैठे पुनि देखा । कला पुरुष तन अचरजपेखा॥
 का अजगुत कीन्हेउँ भाई । उहां मोहिं प्रतीति न आई ॥

कवीर पुरुष यक उहाँ छिपाये । सत्य पुरुष जग दासकहाये ॥
 धाये चरण गहुअतिसकुचायी । हे प्रभु हमपरिचै अब पायी ॥
 यह शोभा कस उहाँ छिपावा । कस नहिंजगमहँ प्रगटदेखावा
 सतगुरु वचन ।

धर्मनि जोवहि छबिजगजाऊ । तो होंय विकलनिरञ्जन राऊ ॥
 सब जीव तब मोहिलौलावै । उजरै भौ सब लोकहि आवै ॥
 ताते गुप्त राखो जग भाऊ । शब्द संदेश जीवन समुझाऊ ॥
 शब्दपरखि चीन्है मोहि कोई । गहिप्रतीति घर पहुँचे सोई ॥
 कहै कवीर सुनहुँ सुकृत हंसा । दरशहुपुरुष मिटेहुचितसंसा ॥
 अब तुम्ह वेगि चलौ संसारा । जिवहि चेतावहु करहुपुकारा ॥
 धर्मदास वचन ।

हो साहेब अब उहाँ न जाही । यह सुखघरतजि कहाँझुराही ॥
 वहियम देश अपरबल काला । नहिंजानौधौमतिहोयवेहाला ॥
 सतगुरु वचन ।

धर्मदास तोहि चिन्ता नाहीं । तुमरे सङ्ग हम सदा रहाहीं ॥
 तुम देखोसत्य लोक प्रभाऊ । हंसन कहो संदेश सुनाऊ ॥
 धर्मदास वचन ।

मानेउँ शब्द शीश पर राखा । लैचलु अंश सुकृत तबभाषा ॥

छिन एक महँजगहीं चलि आये । पैठि देह धर्मनि अकुलाये ॥
 परेउ चरण गि साहब केरा । करि बिनती पदगहिमुखहेरा ॥
 छन्द-धन्य साहेब सत्यगुरु तुम सत्य पुरुष अनादि हो ॥
 तुवअमितलीला कोलखैप्रभुसकल लोककेतुमआदिहो
 त्रिदेव मुनि सनकादि नारद कोईनालखि तुम पावई ॥
 तेहि हंस भाग सराहिये जो नाम तुव लौ लावई ॥

दोहा-निर्गुण सर्गुण आदिहों, अविगति अगम अथाह ॥

गुप्त भये जग मैंह फिरो, को तुव पावै थाह ॥

सोरठा-मोहि परचै तुम्ह दीन्ह, ताते चीन्हैउँ तोहि प्रभु ॥

भये चरण लौलीन, दुचिताई सकलो गयी ॥

चौपाई ।

कीट ते भृङ्ग मोहि प्रभुकीन्हा । निश्चलरंग आपनो दीन्हा ॥

जिमितिलते जगदोय फुलेला । तिमिमोहिं भयो समर्थ पदमेला ॥

पारस परसि लोहा जिमिहेमा । तिमिमोहिं भयउनाथ व्रतनेमा ॥

अगर परसि जिमि भयो सुवासा । जल प्रसंग बसन मल नासा ॥

सनपट शुद्ध सूत कहै न कोई । प्रभुगुण लखित शिर नावै लोई ॥

हे प्रभु तिमि मोहिं भयउ अनंदा । जिमिचकोर हरपित लखि चंदा ॥

जनम मरण भौ संशय नाशी । तवपद सुखनिधान सुखराशी ॥

हे प्रभु अस शिख दीजै मोहीं । एकौ पल न विसारौ तोहीं ॥

सतगुरु वचन ।

जस मनसा तस आगे आवै । कहै कवीर ईजा नहिं पावै ॥

धर्मनि गुरुहिं दोष देइ प्रानी । आपु करहिं नर आपनहानी ॥

जो गुरु वचन गहै चित लाई । व्यापै नाहिं ताहि दुचिताई ॥

जो गुरुचरन शिष्य संयोगा । उपजै ज्ञान नासै भ्रम रोगा ॥

जिमि सौदागर साहु मिलाहीं । पूँजि जोग बहुलाभ बढाहीं ॥

सतगुरु साहु सन्त सौदागर । सजीशब्द गुरुयोग बहुनागर ॥

जो गुरु शब्द गहै विश्वासा । गुरु पूरा पुरावहिं आसा ॥

विनु विश्वास पावै दुखचेला । गहै न निश्चय हृदय गुरुमेला ॥

सुत नारी तन मन धन जाई । तन जोरहै न प्रीति दृढाई ॥

शूरा हंस सोई कहलावै । अग्निरहै तों शोक न लावै ॥

जो विचलै तौ यम धरि खायी । अढ़ा रहै तौ निज घर जायी ॥

काल कसौटी ठहरै हंसा । कहै कबीर सोइ सुकृत अंसा ॥
 सत्य असत्य जानि किमि जायी । कादर विचलै सूर रहायी ॥
 धर्मदास तोहि बहुत बुझावा । रहनि गहन सतपन्थ बतावा ॥
 बहुते बेर सिखायो तोही । देखौ अयश न आवै मोही ॥
 बहुरि कोटि सिखापन तोहीं । देखहुँ कोइ हंसै ना मोहीं ॥

रहनी बर्णन ।

अभ्यागत जो आवे द्वारा । सन्त असन्तन सोहि विचारा ॥
 दीजै भिक्षा हरष सो ताहीं । एहि समयोग पुण्य तपनाहीं ॥
 धर्मदास बचन ।

हे साहेब विनती एक करऊं । समरथजानि पट उतर धरऊं ॥
 हे प्रभु रंक होय कोइ दासा । जाय अभ्यागत ताहि अवासा ॥
 ताके घर कछु सुकृत न होई । सो कस करै कहो प्रभुसोई ॥
 सोकस करै कहौ प्रभुराई । केहिप्रकार तेहि सेवा लाई ॥
 सतगुरु बचन ।

सुनु धर्मनि पथ नीती भाखे । शक्ति अछत पुनि गोयन राखे ॥
 तनबस्तर लै गोय न भाई । जब अशक्त तब काह कराई ॥
 आप खाय तब ताहि खिआवै नहि तो यक समसमय गँवावै ॥
 तीरथव्रत जप तप बहु करमा । काहे परै याहि निज धरमा ॥
 कोटि तीर्थ भ्रमण फल पावै । सो फल घरहीं साधु जिवावै ॥
 मानो गुरु साधुनकी बानी । कह कबीर शब्द सहिदानी ॥
 कहै कबीर सत्यगुरु औ साधू । सत्यनाम गहि मिटै उपाधू ॥
 सत्यकबीर सत्यगुरु साधू । सत्यनाम कहँ सत्य अवरधू ॥
 सत्य नाम गहि तजै दुतिचाई । कहै कबीर हम ताहि सहाई ॥
 सत्यनाम कहँ चीन्है सोई । कहै कबीर गुरु गम जेहि होई ॥
 को हम को तुम कोहै अनन्ता । कहै कबीर यह बूझै सन्ता ॥

सोइ हम सोइ तुम सोइ अनन्ता । कहैं कबीर गुरु पारस सन्ता ॥
 सन्त चेतु चित सतगुरु ध्याना । कहैं कबीर सद्गुरु परमाना ॥
 सद्गुरु शब्द ज्ञान गुरु पुंजा । कहैं कबीर लखु मोहनकुंजा ॥
 कुंज मोहि मोहन ठहरावै । कहैं कबीर सोइ सन्त कहावै ॥
 सन्त कहाय जो सोधै आपू । कहैं कबीर तेहि पुण्य न पापू ॥
 पुण्य पाप नहिं मान गुमाना । कहैं कबीर सो लोक समाना ॥
 जिन्दा मुरदा चीन्हैं जीवा । कहैं कबीर सद्गुरु निज पीवा ॥
 मुरदा जग जिन्दा सतनामा । कहैं कबीर सद्गुरु निजधामा ॥
 यक जग जीतै यक जग हारै । कहैं कबीर गुरु काज सवौरै ॥

धर्मदास बचन ।

कौन जग जीतै कौन जग हारै । कहौ कौन विधि काज सवौरै
 सतगुरु बचन ।

इन्द्रिन जीते साधुन सो हारै । कहैं कबीर सद्गुरु निस्तारै ॥
 सतद्गुरु सो सत्यनाम लखावै । सतपुर लै हंसन पङ्कचावै ॥
 सत्यनाम सतगुरु तत भाखा । शब्द ग्रन्थ कथि गुप्तहिंराखा
 सत्य शब्द गुरु गम पहिचाना । विनु जिभ्या करु अमृत पाना ॥
 सत्य सुरति अम्मर सुख चीरा । अमी अंकका साजहु वीरा ॥
 सोहं ओहं जावन वीरू । धर्मदास सो कहै कबीरू ॥
 धरिहौ गोय कहिहौ जिनकाहीं । नाद सुशील लखैहो ताहीं ॥
 प्रथमहि नाद विन्दतव कीन्हा । मुक्ति पन्थ सो नाद गहिचीन्हा
 नाद सो शब्द पुरुष मुख बानी । गुरुमुख शब्द सो नाद बखानी
 पुरुष नाद सुत षोडश अहई । नादपुत्र शिष्य शब्द जोलहई
 शब्द प्रतीति गहै जो हंसा । शब्द चालु जेहि से मम बंशा
 शब्द चाल नाद दृढ़ गहई । यम शिर पगु देइ सो निस्तरई
 सुमिरण दया सेवा चित धरई । सत्यनाम गहि हंसा तरई ॥

बिन्दो होय शब्द मम धावैं । नादबिन्दु दोउ मोहिं पहँ आवैं ॥
 नाद सखा जेहि अहं विगुरचे । अहं रहित सो निज घर पहुँचे ॥
 केते पढ़ि गुणि नर्कहिं जैहै । केते पढ़ि गणि लोक सिधैहै ॥
 धर्मदास वचन ।

हो सद्गुरु मैं तुम्हरो दासा । विनती करौं खसम तुव पासा ॥
 पढ़े गुणै दुइदिशी किमिजाहीं । सो चरित्र वरणों मोहिं पाहीं ॥
 सतगुरु वचन ।

सुनु धर्मनि बहु पढ़ि अरथावै । शब्द कहै सो चालु न पावै ॥
 पढ़ि गुणि नीति विचारै नाही । अस पढ़ुआ सुनु नरकहीं जाही ॥
 जिन्हपढ़िशब्दचाल गहिभाई । सुनु धर्मनि सो लोकहि जाई ॥
 छन्द—जो कथत वक्तौ तरै जग तो जग सबै तरि जायहो ॥
 तजि तस्त सुलतान उबरै नृप क्यों बनजाय हो ॥
 ताते कहूँ निज समुझ पापीशब्द पढ़ि सत पद गहै ॥
 जोसत्य पद निरखतचलै तो नाहिं फेरि जो नीवहै ॥
 दोहा—सत्यनाम सुमिरण करै, सतगुरुपद निज ध्यान ॥
 आतम पूजा जीव दया, लहै सो मुक्ति अमान ॥
 सोरठा—सद्गुरु कहैं पुकारी, चाल चलै पथ निरखिके ॥
 हंस होय भव परि, शब्द गहन सद्गुरु कृपा ॥
 चौपाई ।

गुप्त भयो कहि शब्द प्रमाना । कालिंजर पुनि आयतुलाना ॥
 कहैं कालिंजर विनै बडाई । देहु पान मोहिं अहो गुसाई ॥
 धर्मदास कहै देउ परवाना । साहिब मोहि कह्यो सहिदाना ॥
 कहा कलिंजर सुनहुँ गोसाई । का सहिदान आदि तुव ठाई ॥
 तब सहिदान कहा मुख बासा । सतगुरु बोल कीन्ह परगासा ॥
 समय संयोग बोल सो कहेऊ । सुनि भौमौन मुगुधहोई रहेऊ ॥
 जात कमीना सुनत परायी । केहि कारण आरती लायी ॥

औरहिं और बुझा उन्ह भाई । पान नलीन्हवैसहिं चलिजाई ॥
 तेहि गौनत प्रभु प्रगटे तुरन्ता । कला अमित को पावै अन्ता ॥
 धर्मदास गहि चरणशिर नायी । युगकर जोरि ठाढ़ भौ जायी ॥
 बैठे पुनि आज्ञा प्रभु पाई । विमुख जीव कर बात जनाई ॥
 धर्मदास वचन ।

प्रभु विरतन्त कहौ अब ताहीं । वह पान मुक्तिकैलीन्हेसिनाहीं ॥
 मैं भाषेऊँ तुमरी सहि दाना । दुर्मति बूझेसि कछु आना ॥
 सतगुरु वचन ।

धर्मनि उन्ह जौ पान न लीन्हे । परिहैं कालमुखजायकमीने ॥
 तजि रणभूमि टरै जो भाई । तेहिजीवहिं निश्चै यम खाई ॥
 वह यम चोर काल के हंसा । धर्मराय धरि करै विध्वंसा ॥
 धर्मदास तुम सुनहु हमारा । निशिदिन रहिहोनामअधारा
 अब तुमआपन करहुविचारा । करिहुनिशिदिनज्ञान विचारा
 दुष्ट मित्र सों प्रेम बढै हौ । भक्ति भजन आनन्द रहे हौ ॥

अर्थ—दुष्ट और मित्र दोनोंमें किसीसेरागद्वेषनरखकर समानप्रीति रखना । सबकी भलाई चाहना किसी की बुराई नहीं चाहना ॥

जो सुख होय तो जनि इतरैहौ । दुख परै तौ जनि विललैहौ ॥
 संकट महँ बहु साहब कीजै । निश्चलनामध्यानचितदीजै ॥
 चित निश्चिन्त रहै जो भाई । तो तेहि संकट जाय नसाई ॥
 यह मम देश दोउ है भाई । दुख सुखतन धरिचाखै आई ॥
 चाहिये साधुननहिं चित्तडोलावै । दृढ़ प्रतीतिनाम गुण गावै ॥
 कच्चे जीवन कर यह लेखा । संकट परै विकल हिय पेखा ॥
 सुख सम्पति धन पुत्र सगाई । यह सब सपना आहै भाई ॥
 धर्मनि शूरा हंस जो होई । गन न दुख सुख एकौ सोई ॥
 अरु घर झगरा निवेरेहु भाई । गरु गमहि पन्थ कहौ उपाई ॥

पाँचौ कै परपञ्च मिटावै । पाँच भूतकै स्वाद गँवावै ॥
 नासा श्रवण रसना चक्षु इन्द्री । पाँचौ चोर काल मतिमन्द्री ॥
 पाँचहु स्वाद विषयका पूजा । गुरुगभिपन्थ परखहितेहिदूजा
 चक्षु स्वाद रस रूप सलोना । राँचि रहै जग अकिलविलोना
 साधु चक्षु राते सतरूपा । गुरुपदनिरखत अकिल अनूपा ॥
 श्रवण स्वाद रस गीत कबीता । मगन होइ सुनु रसमत चीता ॥
 सन्तन श्रवण स्वाद गुरु बानी । शब्द भजन पद सार समानी ॥
 नासा वास सुवास अघाहीं । कुवास वासकेनिकटन जाहीं ॥
 सन्त न लागे वास कुवासा । नाम बिदेह जपै निःस्वासा ॥
 रसना स्वादषटरस मधुभोजन । तजै विलोना सुरस परोजन ॥
 सन्त न स्वाद नाम रससारा । षटरस व्यंजन छारअसारा ॥
 निःइच्छित जो पहुँचे आई । सुरस व्यंजन प्रीति सोपाई ॥
 इन्द्री स्वादु काम रति नेहा । नारी भोग रतन तजि देहा ॥
 सत्य सुरति अनुराग समावे । निशिदिनप्रेमभक्तिचितलावे ॥
 पाँचौ आहि प्रबल घट माहीं । मन राजा पाँचौ कर नाहीं ॥
 सत्यगुरु ज्ञान मन धरि राखे । पाँच चोरसाधि सत्यसुखमाखे
 छन्द-धरि मनहि बाँधहु पाँच साधहु सारसतगुरु ज्ञानते ॥
 यह देशहै यमराजको तरै सो विदेही नामते ॥
 सतनामव्रतगहिशब्द हियधरि करहु सेवा तासु हो ॥
 तत्त्वध्यानसतपदरूपस्थितहोयअमर लोकनिवासुहो ॥

दोहा-गुरु मुखशब्द प्रतीति करि, हर्ष शोक विसराय ॥

दया क्षमा सतशीलगहि, अमर लोक को जाय ॥

सोरठा-वर्ण्यो ज्ञान प्रकार, धर्मदास सम्बोध मत ॥

कहै कवीर कवीर, जेहि मम शब्द प्रतीति दृढ ॥

इति श्री धर्मदास बोध ज्ञान प्रकाश समाप्तः ॥

इति श्री बोधसागरे धर्मदास बोध ज्ञान प्रकाश वर्णनो नाम प्रथम स्तरंगः ॥

इति श्रीधर्मदासबोध
ग्रन्थ ज्ञानप्रकाश समाप्त ।



भारतपथिक कबीरपंथी-
स्वामी युगलानन्दद्वारा संशोधित ।

श्री-अमरसिंह बोध ।

खेमराज श्रीकृष्णदासने
बम्बई

निज "श्रीवेकटेश्वर" स्टीम् प्रेसमें

छापकर प्रकाशित किया ।

संवत् १९७८ शके १८४३.

सर्वाधिकार रक्षित है.

यह पुस्तक खेमराज श्रीकृष्णदासने बंबई खेतवाडी ७ वीं गली खंवाटा लैन निज
“श्रीवैकटेश्वर”स्टीम्-प्रेसमें अपने लिये छापकर यहीं प्रकाशित किया ।

मृत्यु कवीरायः नमः ।

बोध सागर ।

द्वितीयस्तरंगः ।

अमरसिंहबोध.



धर्मदास वचन—चौपाई ।

धर्मदास उठि ठाड़े भयऊ । दोउकरजोरिसोविनतीकियऊ
जुग जुग जीव चेताये ज्ञानी । कालफांस ते छुड़ाये आनी ॥
युगकमोद कीना जिव काजा । सोइतुमभाषिकहोनिजसाजा ॥
यमराजाते भये छुटारा । निर्भय हसालोक सिधारा ॥

सतगुरु वचन ।

धर्मदास मैं कहि समुझाऊँ । युगकमोदकी खबर सुनाऊँ ॥
जब हम हते पुरुषमें पाँही । तबकी बात कहू सब तोही ॥
युग परवान चाकरी भयऊ । युग जुग पंथपसारा कियऊ ॥
अर्बखर्बजिव असंख्यअपारा । सब उबारलाये पुरुषदरबारा ॥
रहे सब हंस पुरुषके पासा । करते कुतूहल लोकनिवासा ॥
भूख प्यास निद्रा नहिं भाई । पुरुष ध्यानमें रहे समाई ॥
पुरुष दयाल दयाकरि भारी । षोडश रवि हंस उजियारी ॥
सेज पुष्प बनी अति भावन । सुख विनोद सब लोकसुहावन
बैठे पुरुष सेजपर आयी । तत्क्षन ज्ञानी लिये बुलायी ॥
ज्ञानी तुम जाओ संसारा । जाइ करो अब हंस उबारा ॥
सिंगलदीप अमरपुर गामा । अमरसिंग राजा करनामा ॥
ताको अबै चेताओं जायी । चेतन अंश जग रहेभुलायी ॥

ज्ञानी बचन ।

ज्ञानी बचन कहै कर जोरी । सत्यपुरुषएक बिनती मोरी ॥
पुरुष मोहि पठवो संसारा । कौन नामते हंस उबारा ॥
साखी-कौन नाम हंसन कहँ, कोन देऊँ कडिहार ॥
कौन नाम नारिन कहँ, जाते होई उबार ॥

चौपाई ।

कालफाँस जासे कटि जावे । सहजे हंसलोक महुँ आवे ॥
इतना बोल पुरुषसे पाऊँ । तब भवसागरमें चलिजाऊँ ॥

पुरुषवचन ।

अहो ज्ञानी बचन सुनि लेहू । मान सिखापन शिरपर देहू ॥
सब राह दिखाऊँ मैं तोही । उबरें हंसा अधिकारी सोही ॥
साखी-बालककू बीरा कह्यो, तिरिया कुटिल सनेह ॥

सुरतवंत को यह शब्द है, पुरुष नाम निज लेह ॥

चौपाई ।

पुरुष हुकम दीना तेहि बारा । ज्ञानी वेग जाओ संसारा ॥
मूलनाम परवाना देहू । सकल जीव अपना करि लेहू ॥
ज्ञानी चले लोकते जबहीं । धर्म धीर मिले पुनि तबहीं ॥
देखत धर्मरायमनहिं संकाना । आपनहानिमनहिं अनुमाना ॥
ज्ञानीतुम सुनो बचन हमारा । काहेको आये तुम संसारा ॥
चौदा भुवन राजलिख दीना । अब काहेकोचितवन कीना ॥
आहार यही हम कहँ दियऊ । पुरुष दया अब काहेकु कियऊ ॥
राज हमारो है संसारी । सुख दुःखजीवनदेहुँ अपारी ॥
ब्रह्मा विष्णु महेश कहाई । मेरे अंस जगमाँहि रहाई ॥
हमतो रहही शून्य मँझारी । गम नहिं पावे कोइ हमारी ॥
राज भार सब उनको दियेऊ । हमन्यारे होइ देखत रहेऊ ॥

ज्ञानी तुम जाओ संसारा । बचन एक अब सुनो हमारा ॥
पुरुष बचनकी तुम कहँलाजा । ता पाछे करियो जिव काजा ॥

ज्ञानीबचन ।

सुनहु बचन निरंजनराई । सबै बात में कहूँ समुझाई ॥
कोटि ज्ञान हम तुम कहँ हारा । द्वादश पंथ चले संसारा ॥
ताते चलिहै आहार तुमारा । इतना बचन धर्म कहँ हारा ॥
धर्मदास सुनियो चित लाई । धर्मधीर ऐसी ठहराई ॥
तब हम आये यहि संसारा । जीवनकाज पृथ्वी पगुधारा ॥
अमरपुरी एक नगर रहाई । सिंगलद्वीपके मांहि बसाई ॥
तहाँ आइ हम कीन्ह पसारा । पहुँचे रायके महल मँझारा ॥
षोडश रविकी ज्योति पसारा । महलन मांही भयो उजियारा ॥
अमरसिंह राजाको मागा । लगीकचहरीबहु बिधि धामा ॥
देख प्रकाश उठे तब राई । नृप धाये महलनमें आई ॥
आये महलमें सतगुरु पासा । सतगुरुचरन गहे विश्वासा ॥

अमरसिंहबचन ।

अहोसंत एक बिनती करिहो । पृच्छत बचन क्रोधजनि धरिहो ॥
कै तुम तीन देवनमें कोई । कै परब्रह्म तुम आये सोई ॥
और गम्य नहि चलत हमारी । सोतुम बचन कहो निरवारी ॥

सतगुरुबचन ।

साखी—हम आये सतलोकसे, जीवन करन उबार ॥
कालफांस निवारके, ले जाऊँ लोक मँझार ॥

चौपाई ।

यह कहि गुप्त भये प्रभु राई । राव परे धरनी मुरझाई ॥
बिकल भयेमुख आवे न बानी । तलफत मीन जैसेबिनपानी ॥
सतगुरु बिन तलफत नृप तैसे । स्वाँतिबुंद बिन चात्रिक जैसे ॥

छंदचर्चरी ।

मोहि कहा जानि दरशन दिये प्रभु गुप्त पुनि काहे भये ॥
 दृग पलक देत विलंब नाही कवन दिशि कहँवा गये ॥
 हमहीं अभागी कीन्ह सतगुरु दरस देके छिप रहे ॥
 कैसे धरुं मन धीर तबलग दरश तुम ना देखिहे ॥

सोरठा—भये अभाग मुहि जान, दरश देखके छिप रहे ॥
 नहीं करुं जलपान, जबलग दरश न देखहुँ ॥

चौपाई ।

दिवस पाँच तब ऐसे बीता । निपट राय उर बाढी चींता ॥
 सुनी खबर तवपंथ चलिआये । तिन राजाको आन उठाये ॥
 ले झारी मुख मंजन कीना । संत चरन चितबहुबिधिदीना ॥
 सतगुरु दरश दिये तेहि वारा । महल मांही कीनो उजियारा ॥
 तहां जाइ जब ठाडे भयऊ । राजा चरण धायतब गह्यऊ ॥
 हमहि सनाथ किये प्रभुराई । हम निज सेवक तुमरे आई ॥

सतगुरु वचन ।

ज्ञानी कहे सुनो हो राई । यमफांसीते लेहों छुडाई ॥
 सब जग परचो कालके फंदा । बहु विधि तिनको बांधे बंधा ॥
 नेम धर्म कुल कर्म लगाये । ये फंदा सब जगत फँदाये ॥
 जो कोइ हंसा होय सुभागी । काल फांसते बचिहै भागी ॥
 धर्म काल ताको नहि पावे । सुरति निरति ले शब्द समावे ॥

साखी—शब्द सुरत युग बांधई, कर्म भर्म दे छोर ॥

हंस गति जब आवई, कहा करे यम चोर ॥

अमरसिंहवचन—चौपाई ।

हे साहेब जो आयेसु पाऊ । तो रानीको बचन सुनाऊँ ॥
 अबके सतगुरु जाहु दुराई । तो हमकुं नहि जीवत पाई ॥

सतगुरु वचन ।

सत गुरु कहे सुनो हो राई । भक्ति प्रेम बस कतहुँ न जाई ॥
तत्क्षण राजा चलिभे जबहीं । सात खंड पर पहुंचे तबहीं ॥
सुस्वरकला रानि तहँ रहेऊ । तासों राय बचन एक कहेऊ ॥
सुनो रानी एक बचन हमारा । अपने जीवका करो उबारा ॥

साखी-राजा रानीसों कहै, मानो वचन हमार ॥

साहेब आये लोकसे, चरन सोगहो सम्हार ॥

रानीवचन-चौपाई ।

रानी कहै सुनो हो राजा । विलख वदन आये केहि काजा ॥
केहि कारन तुम आये खरारी । हमसे वचन कहो निरुवारी ॥

राजा वचन ।

रानी तुमसों कहूँ हवाला । जो सतगुरुने दीनो प्याला ॥
एक दिना लीला अस कियेऊ । महलनमें उजियारा भयऊ ॥
तब हम तत्क्षण धाये जबहीं । महलन बीच पहुंचे तबहीं ॥
दरशन पाये भयउ अनन्दा । बारहि बारचरण गहि वंदा ॥
पलक ओटप्रभु गये विलायी । चार दिवस परे धरनि मुरझाई ॥
प्रोहित बिप्र सब आये जबहीं । कहे समुझाई हमकूँ तबहीं ॥
बनिया मोदी सगरे धाये । छीपा सेठ चौधरी आये ॥
भाइ भतीजे परजा धाई । काहे राय मरत हो भाई ॥
सब मिलिआनि उठाये जबहीं । लेझारी भर दीना तबहीं ॥
लेझारी मुख धोवत भयऊ । साहेब दरश बेगि तबदयऊ ॥
दरश पाय मैं भयउ सनाथा । रानी सत्य कहतहों बाता ॥

रानीवचन ।

राजा बात कहत हों तोही । सत्य कहूँ जो मानो मोहीं ॥
अब तुमबात कहत हो नीका । तेहिपाछे पुनिलागनहिं फीका ॥

राजा बात कहीहो आछी । पाछे जगमें होय न हाँसी ॥

राजा बचन ।

रानी मानो कहा हमारा । साहेब चरन वेगि चितधारा ॥
धन जौवन तनरंग पतंगा । छिनमें छार होतहै अंगा ॥
तुरत मान जो रानी लीना । संत दरस कामिनि जो कीना ॥
हाथ नारिअल आगति लीना । सात खंडसे उतर पग दीना ॥
सात महेली संग लगी जबहीं । स्वरकला पुनि उतरी तबहीं ॥
मव उमराव बैठे दरबारा । रानी आइ बाहिर पग धारा ॥
तब उमराव उठे भहराई । स्वरकला कस अचरज लाई ॥
रानी कबहुँ न देखी भाई । सो रानी कस बाहेर आई ॥
गजमोतिन से पूरे मांगा । लाल हिरा पुनि दमके आंगा ॥
आधा मस्तक कीन्ह उधारा । मानिक दमके झलाहलपारा ॥
तब रानी सतगुरु पहुँ आई । नारियल भेट जो आनचढ़ायी ॥
रानी थाल हाथमें लियऊ । करत निछावर आरतिकियऊ ॥
साखी-रानी ठाडि मैदानमें, सुनो संत धर्मदास ॥

सुरजकिरनअरुनानिको, एकही भयो प्रकाश ॥

चौपाई ।

लगिचकचौंधिअधिकपुनिजबहीं । देखिनजायरानीतनतबहीं ॥
राजा रानी दंडवत कीन्हा । ऐसी भक्ति हृदय में चीन्हा ॥
दोड कर जोरि रायभयो ठाढा । उपज्यो प्रेम हृदय अतिगाढा ॥
साहेब हमपर दया जो कीजै । भुवन हमारे पांव जो दीजै ॥
तब ही हम मंदिर महुँ आये । पलंग विछाय तहां बैठाये ॥
झारी भर तब राजा लीना । चरनामृतकी युक्ती कीना ॥
राजा ऊपरते डारत पानी । चरन पखारे स्वरकला रानी ॥
चरण पखारि अँगोछा लीना । जैसी भाव भक्ति उन कीना ॥

चरनामृत तब शीश चढावा । ले चरनामृतबहु विनतीलावा
जैसी भक्ति राय जो पावा । धरमदासतोहि बरनिसुनावा ॥

धर्मदास वचन ।

और कहो राजाकी करनी । सो साहेब तुम भाखो वरनी ॥
सतगुरु वचन ।

तुरतहितबसब साज बनावा । हमको सो अस्नान करावा ॥
हम अरु राय बैठे जेवनारा । आनेउ सार धरे दोउ थारा ॥
अधर थार भूमिते रहई । रानी तबहीं चितवन करई ॥
रानी कहे रायसों तबहीं । लीलानिरखो गुरुकी अबहीं ॥
अधर अग्र जिनका पनवारा । महा प्रसादते आइ अपारा ॥
नर नारी तब ठाढे भयआई । महा प्रसाद अब देहु गुसाई ॥
तब हम दीनेउ तहां प्रसादा । पाय प्रसाद भई तब यादा ॥
पुरुपलोककी भइ सुधि तबहीं । ज्ञानी आय चेताये भलहीं ॥
हम भूले तुम लीन चेताई । फिरि नविगोवे आइयमराई ॥
या यम देश कठिन है फांसी । कामक्रोध मद लोभ विनासी ॥
साखी-काम क्रोध अरु लोभ यह, त्रिगुन बसे मन माहि ॥

सत्य नाम पाये विना, जमते छुटको नाहि ॥

चौपाई ।

श्रवन लागिनिजनाम सुनाई । तुरत राय कह चले लिवाई ॥
पहुँचे जाय सुमेरपहारा । पुर बैकुंठ रच्यो जेहि ठारा ॥
जय विजय जो तहां गहेऊ । तेहि साहेबको देखत भयऊ ॥
देखत पौरिया ठाढे भयऊ । आदर करि साहेबको लयऊ ॥
कहे पौरिया विनती लाई । भूपति लोक कहांको जाई ॥
तब हम पौरीयन सो कहेऊ । एक जिव सत्यनाम जो गहेऊ ॥

पुर बैकुंठ दिखायो चाहिं । ताते हम आये यहि ठाहीं ॥
 तहांते हम चले रिगई । पहुंचे चित्रगुप्तके ठाई ॥
 लग्यो दरबार चित्रको जहँवा । पुण्य पापको निबेरो तहँवा ॥
 देखि साहेबको ठाडे भयउ । हाथ जोरिके बिनती कियउ ॥
 डार सिंघासन बैठक दीना । तब साहेब सो बिनती कीना ॥
 धन्य आजबड भाग्यहमारा । साहेब आये इहां पग धारा ॥
 आये गुप्त साहेबके पासा । बिनति करत भये बहु भये उदासा ॥
 हे साहेब हम पूछत तुमपै । कह लाये भूपत कहु हमपै ॥
 यह तो हमरो चोर कहाई । अधम पापि राजा यह आई ॥
 तब साहेब गुप्तसे कहेउ । लीखनी तुमारी बाद सब भयउ ॥
 इन जीवनपर अमल न होई । लाग तुमारी देहिं चुकोई ॥
 यह सुनि गुप्त तवे रिसियाना । हमरी लिखाई बाद बखाना ॥
 गुप्त कर्म करे नर कोई । सो निज चोर हमारा होई ॥
 साखी-प्रकट करम जो करहिं नर, सोइ चित्रलिख लेहुं ॥

भूपतिलोक कहावहीं, पाप पुन्य कर येहु ॥

चौपाई ।

तब साहेब एक जुगति बनाई । पारसपथरी तहां दिखाई ॥
 अनेक कर्मसे लोहा भरिया । पारस भेटत कंचन करिया ॥
 साहेब गुप्तसे कहे समुझाई । इनकू लोहा करो रे भाई ॥
 लोहासे जो कंचन कियेउ । यहि विधिइंसा निरमल भयउ ॥
 इतनी सुनि यम भये अधीना । फेर न तिनसे बोलन कीना ॥
 अहोजमराय वचन सुनु मोरा । कही करो तो कहू चोरा ॥
 राजाकू ले जाओ भाई । इनकु यमपुरी लाओ दिखाई ॥
 तब यमराय हुकम करि दीयउ । दूत दोय राजा संग गयउ ॥

दूत रायको चले लिवाई । पहुँचे जाय यमपुरी मांही ॥
त्रास जीवको देत है जहांवा ।

नरकको वर्णन ।

देखत राजा मन पछितावा ॥
एक तो कोल्हू मांही षिराई । उंधे मस्तक एक झुलाई ॥
एक तो बांध खंभसूं ताते । चीसे देत बहुतही भांते ॥
एक जीवको खात चबाई । भागत फिरें बचत नहिं भाई ॥
एक जीव कुंडमहिं डारा । मोगरी शिरपै मारे अपारा ॥
कुंड चौरासी बने है ति भाई । भांति भांति यम त्रास दिखाई ॥
ऐसे त्रास जीवनको दियऊ । देखत राजा व्याकुल भयऊ ॥
एक कुंड तो रुधिर भराई । दूजा कुंड तो पीब कहाई ॥
त्रीजो कुंड हि मूत्र भराई । योजन एक ताकि गहराई ॥
योजन चारकी है चकराई । योजन चार लग गन्ध उडाई ॥
परे जीव ता माहिं अपारा । चौथा कुंड नरककी धारा ॥
साखी—परे जीव ता कुंडमें, अब कोइ हमहिं उबार ॥

मायत मोगरी शीरपर, बहुतहिं करत पुकार ॥

चौपाई ।

पांचें कुंड सो अग्नि कहाई । बहुत जीव तहैं जरहीं भाई ॥
योजन लक्ष है ता गहिराई । पांच लक्षकी है चकराई ॥
करत पुकार तहैं जीव अपारा । यहि अवसरको उहमहिं उवारा ॥
राजा यमपुरी देखि बर्नाई । कहत न बने रहे शिरनाई ॥
झूठा बचन कहत है जोई । जीभ्या काटिलेत पुनिसोई ॥
झूठी बांह देखाई जो कबही । काटे बांह यम ठूठा करही ॥
झूठी साख भरे जो भाई । बिपधर ताके जीभ लगाई ॥

बिन अपराध मारे जो कोई । बहुत मार तेहि ऊपर होई ॥
 स्वपुरुषतजिपरपुरुष संगजावे । अगिनपुरुषतेहिसंगमिलावे ॥
 पुरेंप होय नारी कहँ त्यागे । नारी और सो मन जोलागे ॥
 अग्निनारि तेहिसंग मिलावें । यहि विधि जीवनत्रासदिखावें ॥
 एक एकको त्रास दिखावें । हाथ छूरी ले कण्ठ चलावें ॥
 एक जीवको ठाडे कीना । काग गीधकोहुकमकरि दीना ॥
 काग गीध नोचत हैं भाई । भागत फिरे त्रास अधिकाई ॥
 जे नर नारी मदिरा पावें । तत तेल पुनि ताहि पिलावें ॥
 जे नर मांस भखतहैं भाई । तातो लोहा ताहि खवाई ॥
 संत साधुकी निंदा करई । जूठी साख पंचमे भरई ॥
 ताको फल पावतहै सोई । सब अँगमें कुष्ठ पुनि होई ॥
 ऐसि यमपुरी देखी बनाई । देखत राजा मन पछताई ॥
 साखी-देखी राजा यमपुरी, मनमें भये हुशियार ॥

साहेबसो विनती करे, हमको लेउ उबार ॥

चौपाई ।

नृप अरु दूत पहुँचे तइवाँ । चित्रगुप्तको दरवार रहैजहवाँ ॥
 जहाँ बिराजे ज्ञानि सिंहासन । गहेचरन तहाँ नृपति ततक्षण ॥

राजा बचन ।

तब राय चरण परस्यो आर्यी । अबकी साहेब लेहु बचायी ॥
 यह यम देश कठिन है गांसी । सुरनर मुनि परे यमफांसी ॥
 साखी-सुनि कथा जब नरककी, धर्मदासभय मान ॥

सतगुरु सो कहने लगे, औरो कहहु बयान ॥

सतगुरु बचन-चौपाई ।

कहैं कवीर सुनो धर्मदासा । नरक वृत्तातन्तकरीं परकासा ॥
 धर्मराय अस बाजी लावा । पाप पुण्य दोउ कीन उपावा ॥

पाप पुण्य रचि जीव फँसाया । जो जस करै सो तसफल पाया ॥
 करै पाप तेहि नरक भुगतावैं । करै पुण्य तेहि स्वर्ग पठावैं ॥
 कर्महिं भुगुति गरभमें जावै । यहिविधिकालजीव फँदावै ॥
 सुनु धर्मदास नरककी बाता । सबहीतुमसन कहूं विख्याता ॥
 सकल सुनहु यमपुर इतिहासा । अद्भुत सुनि होय जिव त्रासा ॥
 ठीका पुरै जब जिवकी भाई । धर्म राय मन चिन्ता आई ॥
 आयुस किंकर गण तब पावैं । हुकुम चित्रगुप्त ताहि सुनावैं ॥
 ते जग आवैं आयसु पायी । जीवहिं पकरि तहाँ लैजायी ॥
 लैजाहिंसो यम सदन मंझारा । करैं ताहि यम सन्मुख ठारा ॥
 रवि सुत तहाँ सिहाँसन बैठे । यमगण तहाँ विराजत ऐंठे ॥
 काल सेन तहँ सबहि विराजैं । शास्त्र प्रवर्तक मुनिवर छाजैं ॥
 धर्मशास्त्र के जे जे करता । सबही देखैं जो जिव मरता ॥
 व्यास पराशर आदिक सबहीं । पहुँचैं यम पुरि तन त्यागै तबहीं ॥
 ये सब यम सहाय सो करहीं । पाप पुण्यकर लेखा धरहीं ॥
 सबहिं मुसाहिब कालके आहीं । निज नैनन हम देखत जाहीं ॥
 धर्माधर्म विचारत नीको । सब मिलि न्याय करत करनीको ॥
 चित्रगुप्त जब बही सुनावै । धर्म राय कहिके समुझावै ॥
 जिनरपाप किया जग आयी । तिनकर लेखा जब सुनिपायी ॥
 ते सुनि दूतन कहत जनायी । यथायोग्य भुगतावहु जायी ॥
 जब कोई जीव सुकर्मा आवै । शुचि सुन्दर दूतन तब धावै ॥
 रविसुत कहविलसाओ स्वर्गा । अर्थ धर्म अभिमत सुखवर्गा ॥
 यही सुकृत सब श्रुतिपथ आही । बहुत समझायौ हम तुव पारी ॥
 साखी-पापी मनुषहिं पाइ यम, दूतन कहे रिसाइ ॥
 रौरवादिक की यातना, इनहिं भुगावौ जाइ ॥

चौपाई ।

सुनहि वचन यमगण यमकेरा । त्रास दिखावहिं नरहिं घनेरा ॥
 लोह दण्ड मुद्गर हनि कोपै । रौरवादि महँ तिनहीं तोपै ॥
 यहि विधि यम करहिं विलासा । अब विस्तर ते सुनु धर्मदासा ॥
 बहु विधि विद्या जग महँ पावै । वेद विचारि जो ब्रह्म समावै ॥
 आतम ब्रह्म एक करि जानै । ब्राह्मण सो तेहि वेद बखानै ॥
 ऐसे नर कहँ जो कोइ मारै । ब्रह्महत्या तेहि वेद पुकारै ॥
 ब्रह्मरूप ब्रह्मविद जानै । तेहि वधन कहँ ब्रह्मवध अनुमानै ॥
 जानि ब्रह्म वध पाप कराला । तब दूतन कह यम ततकाला ॥
 कुंभीपाक माहिं लै डारौ । मुद्गर परिघ मार बड़ मारौ ॥
 इनरिस करि मारचोमहि देवा । सुनी न मम अनुशासन भेवा ॥
 रौरव माँहि गिरावहु घाती । काहू कहै सुनौ नहिं बाती ॥
 जो तिय मारै गर्भ गिरावै । तेल यंत्र तनु तासु पिरावै ॥
 जिन गुरु हनै हनै निज स्वामी । छुरा धार ते पीडित नामी ॥
 जे विश्वासघात नर करहीं । ते नर कालसूत्र महँ परहीं ॥
 बाल वृद्ध कर हरै जो प्राणा । तस तेल महँ पचत अयाना ॥
 परदारा परक्षेत्र जे हरहीं । जे नर परपुर सीम विगरहीं ॥
 ते गुरु पाप नरक महँ पचहीं । हाहाकार शब्द तहँ मचहीं ॥
 चक्रन ते तिनके तनु छेदैं । मुद्गर परिघ शूल बहु भेदैं ॥
 गम्य अगम्य विचार न करहीं । खाज अखाज नहीं चितधरहीं ॥
 तिनके तन को करकच छेदैं । बहुत भांति चोचनसों भेदैं ॥
 साखी-चोर वृत्ति करि जो जिवै, करै जो परसे द्रोह ॥

झूठ बोलि अरु मद पिवै, पर निन्दा करै जोह ॥

तिन पापिन कहँ यम विकरारा । ठौर भयंकर माँझ तेहि डारा ॥
 जे नर कन्यादान मँझारी । विघ्न करत रौरव अधिकारी ॥

दान देत लखि भांजी मारै । योग्य अयोग्य जो नाहि उचारै ॥
 परतपमहँ कर विघ्न अनेका । नहि हियमहँ जो करत विवेका ॥
 आप छूँछ औरन व्रत टारै । वेद शास्त्र जिन नाहि उचारै ॥
 हरियश सुनत दहै मन माहीं । दूसर सुनै तो चित विचलाहीं ॥
 तिनकरदेह सोकूकर भखहीं । पुनि असिपत्र मांझ दुख भरहीं ॥
 एकहु अक्षर गुरुसों सीखै । ताहि न मानै मन कर तीखै ॥
 ते परहीं नर रौख माहीं । बहुविधिदुख भुगतहि सो ताहीं ॥
 जेनर हरत दीनके प्रानन । मित्रहि मारत दाहत कानन ॥
 तिनहिअंगारन मांझ सुतावैं । यमगण दारुन त्रास दिखावैं ॥
 जे गुरुधन हारक संसारा । क्रिम कूप महँ परत निहारा ॥
 जौन गुरू व्यभिचारी होई । प्रजहि दुःख देई नर जोई ॥
 शिष्य शंकजोनाहि मिटावत । प्रजहिन्यायजोनाहि चुकावत ॥
 युक्त अयुक्त न जानत जोई । करत सपक्ष न्याय शठ कोई ॥
 तेनर अंध तामिस्र मँझारे । गिरत लखे पावत दुख भारे ॥
 विन देखे पर दोष गिनावैं । यम गण तिनके नैन ढँकावैं ॥
 अप्रिय वचन औरहीं कहहीं । करणछेददुख ते शठ लहहीं ॥
 देव साधु ब्राह्मण धन हरई । तृष्णा वश लोभहि मन धरई ॥
 सूचीमुख नरकहि कर नाऊँ । ते तहँ जाइ वसावैं गाऊँ ॥
 जेपरतिय अभिलाषत प्रानी । निन्दत सुर गुरु भूसुर जानी ॥
 धर्मशास्त्र तीरथहरिजन कर । निन्दाकरत सुनहु दुख तिनकर ॥
 पहिले शूलन पर बैठावैं । मुद्गर शूलनसे करि घावैं ॥
 पाछे काकश्वान तेहि खाहीं । छेदहि दुख सुख हेरत नाही ॥
 भोगी बहुत काल प्रिय नारी । त्यागत ताहिअधमअविचारी ॥
 विनु वैराग ताहिको त्यागे । ताहि त्यागिऔरिन महँपागे ॥
 सो शठ नरकमाँहिदुख पावै । कहँ लग कहों कहतनहिआवै ॥
 करपदबाँधि यमसासत देहीं । जोजस किये सो तसफललेहीं ॥

सूरज सुत जस आज्ञा देई । दून उठाय सबे शिर लेई ॥
चित्रगुप्त मो लिखनी लेखै । धर्मराय न्याय तहँ पेखै ॥
साखी-करैं कमाई जो कछू, कदी न निष्फल जाय ॥

सात समुन्दर आडा परै, मिलै अगाऊ धाय ॥

भूमि ताम्रमय तहां बनाई । तापर अग्नि प्रचण्ड बिछाई ॥
दहकतज्वाला सो महिकैसी। अति दुस्सह प्रलयाग्नि जैसी ॥
तहँ नर जाइ जरत दुख पावैं । यम गणहनि तेहि मांझ जरावैं ॥
तीव्रनखरदशूचीकच केते । पापिन कहँ दुख देहि सब तेते ॥
अतितनुकृश तनु बहु पापी । तहँ दुखपावत जनपरितापी ॥
सांकरि बांधि बांधि गज लावैं । अति दृढ मुद्गर हानितेहि टावैं ॥
दुखलहि जब इतउत नर धावैं । यमगण धारि तिहि माहि गिरावैं ॥
पुनि निज कृतकर याद करावैं । परिघनहनि बहु त्रास दिखावैं ॥
तप्त थम्भ बहु ठाड रहावैं । परतिय गामी ताहि सटावैं ॥
निजपति छोडपर पुरुष लुभावैं । सोइ तियातहँ लाइ मिलावैं ॥
यमगण ताही मारि भिटावत । क्रूरवचन पुनि ताहि सुनावत ॥
यमके दूत अस कहैं पुकारी । तबतौ तनमन सकल बिसारी ॥
प्राण समान चही परनारी । अबकिन भेटे दुरुचिकि मिमारी ॥
उन्नतकुचभुजभरि जिमि भेंटे । मुख चुम्बनरति करि दुखमेंटे ॥
रहीजो तव जीवनजग नारी । यहसोइ अपर न करहु विचारी ॥
कलनहि छनजेहि विन तोहि पापी । मिलहु न तिय सँकरत अलापी ॥
यहि विधियम गणवचन सुनावैं । हनिहनि अधमन खम्भ लगावैं ॥
मद पीवत संग जे करि प्रीती । मांसहि खाइ करत अनरीती ॥
तप्त तैल तेहि मारि पियाई । कहत मदहि पीवहु शठ आइ ॥
हाहाकार करैं जब सोई । करैं विनती सो बहु रोई ॥
ता ऊपर तैलहि सो डारैं । भीतर बाहर दोऊ विधिजारैं ॥
इतना करैं बहुरि सो आगै । करन शासना सो फिर लागै ॥

असिपत्र विपिन महँ चलहू । खायो माँस सोई फल लहहू ॥
 तहँ अहँतरु दल अतिही तीखें । ऊपर परत कटत तनु दीखें ॥
 रहत न बनै तहाँ पुनि भाजत । करिविलापबहुविधिदुखपावत
 करि पारघात, पाल निज देही । कूटकरमबहुविधिकियजेही ॥
 ते असिपत्र नरक महँ जावें । पुनि रकटाइशिर दुख पावें ॥
 एक शिरकाटिफोरि होइ आवैं । बहुरि कटै बहुरि ह्वै जावे ॥
 जे पगहिंसक अधम नरेशा । तेलयंत्र तनु पिसत हमेशा ॥
 तेल चुराय जो जगमहँ लेते । यमगण तेहि बहुत दुख देते ॥
 तेलचोर कहँ तेल कराही । घृत चोरहिं घृत माँझ गिराहीं ॥
 जेपर दूध मधू दधि हरहीं । ते नर रक्त कुण्ड महँ परहीं ॥
 पाशबाँधि गलतेहि महँ डारैं । यम गण दारुण त्रास विडारैं ॥
 तीरथचलत जानि धन हरहीं । ते नर रक्त पीब दह परहीं ॥
 देव सदन महिसुर गुरुधाम । जेतोडत मन करहिं अरामा ॥
 बन बाटिका पुहप बहु छेद । मठमंख भवन सुरभिवर भेद ॥
 दीन भवन चटशाल गिरावैं । अस्थिचूर्ण महँ ते दुख पावैं ॥
 पर उपांनत वस्त्र शठ हरहीं । पर भोजन छिपाय जो धरहीं ॥
 लोहयंत्र बिच ताहि पिरावैं । बहुविधि तेही दुःख दिखावैं ॥
 जेनर घर पुर विपिन जरावत । अग्रिकुण्ड तनु तामु गिरावत ॥
 जे निज स्वामिहिं दोष लगावैं । पर अपवाद प्रीति करि गावैं ॥
 तिन कहँ नर्क शालमली डारैं । पाश बाँधि लटकात तरारैं ॥
 मुद्गर परिघन यमगण मारैं । निर्दय तनक न करुणा धारैं ॥
 जो तिरिया परपति रत होई । नाथवती विधवा किन कोई ॥
 तप्त लोहमय खम्भ नराकृति । यम वशसे तेहि तिय भेटति ॥
 लोह शूल खर तप्त विशाला । जीभ छेद मुख करत विहाला ॥
 इमिदुख लहँहि अधमनरनारी । कहँ लगि कहौं सो लेहु विचारी

यहिविधिजोयम शासति करई । कहँ लगि कहों पार नहिपरई॥
 सुनत हाल व्याकुल धर्मदासू । मुख प्रस्वेद नहि आवै श्वासू॥
 देखि दशा सद्गुरु तब बोले । केहि कारणधर्मनि तुम डोले॥
 धरि धीरज तब धर्मनि भाषा । नरककथासुनिभयमनमाखा॥
 धर्मदास वचन ।

हो साहब यम बड़ विकरारा । केहि विधि हंसा पावे पारा ॥
 यही भय मम मन महँ आवै । चितवतचित व्याकुलहोयजावै
 सतगुरु वचन ।

सुनतवचन प्रभु मन पिहँसाये । कही शब्द धर्मनि समुझाये॥
 धर्मनि तुमही भय कछु नाही । सतगुरु शब्द है तुमरे पाही ॥
 अपर कथा सुनहु चितधारी । संशय मिटे तो होहु सुखारी ॥
 जब राजा विनती ममकीन्हा । तब हम ताहि दिलासा दीन्हा॥
 शब्द गहै सो नाहि डराई । तुम किमि डरहु सुनहु हो राई॥
 सत्य शब्द मम जे जिव पैहैं । काल फांस सो सबै नशैंहैं ॥
 सुनत वचनराजा धरु धीरा । बोले वचन काल बलबीरा ॥
 चित्रगुप्त वचन ।

हे साहब तुम काह विचारो । नगर हमार उजारन धारो ॥
 हो साहब जो तुम अस करहू । न्याय नीति सबही तुम हरहू॥
 सुनो साहेब एक बात हमारी । पंथ तुमारा चले संसारी ॥
 ताते विनती करें बहोरी । सुनो गुसाईयाँ अरजी मोरी॥
 ब्रह्मा विष्णु शीव अधिकारी । तीनकी आश जगतमहँ भारी॥
 उनको हम नहि कबँहु डरावैं । चूक चाल तो ताहि नचावैं ॥
 और जीवकी कौन चलावे । हमते उबरन एको न पावे ॥
 सीधि चाल चलुजीव सुजाना । सो जीव देहों लोक पयाना॥
 परपंच करी साहेबको धावे । हम ते जीव जान नहि पावे ॥
 चाल चलत लागै बडिबारा । ताते नाहीं दोष हमारा ॥

सतगुरु वचन ।

ज्ञानी कहे सुनो जमराई । हमरो हंसा न्यार रहाई ॥
परपंच तुमरो देखि डराये । जीवघात कबहु नहिं लाये ॥
निशिदिनजीवदया उर धारे । ज्ञान ग्रंथ मन मांहि बिचारे ॥
अहो यमराय जाहु वैकुंठा । राजा विष्णुसों करावहु भेंटा ॥

चित्रगुप्त वचन ।

चित्रगुप्त उठे कर जोरी । साहेब चूक जो बखशो मोरी ॥
तुम हो धनीमें दास तुमारा । अपने दिल हमकीन बिचारा ॥

साखी-इतना कही चलत भये, राजा लीना पास ॥

मध्य चौक ठाडे भये, देख्यो सबको बास ॥

चौपाई ।

अगिन कोन है इंद्र कुबेरा । दक्षिण दिशा है काल बसेरा ॥
नैऋत कोन सुरनको बासा । पश्चिम देवी कीन निवासा ॥
देव वास वायव है भाई । गण गंधर्व मुनि देव रहाई ॥
उतर दिशा भगवान जो होई । निज वैकुण्ठ कहावैं सोई ॥
कनकभूमि रतननकी पोती । बने वैकुंठ अधिक जग जोती ॥
सकल देव दरशन को आये । लक्ष्मी सहित बैठे प्रभुराये ॥
राजा साथ हमहूँ चलि गयऊ । देखि विष्णु तब ठाडे भयऊ ॥
डारि सिंहासन बैठक दीना । आज सुफल तुम हमकोकीना ॥
भले आयतुम दरस दिखाये । भूपति लेइ कहाँ तुम लाये ॥

अमरसिंह वचन ।

ओ भगवान सुनो ममवानी । सेवा तुम्हरी निष्फल जानी ॥
हम एकोतर मंदिर बनावा । तामें मूरति लै पधरावा ॥
साधु राखि मंदिरके मांही । छाजन भोजन दीना ताही ॥
जेता धर्म हम सुने पुराना । विप्रन कहे धरम ठिकाना ॥
सुरभी सोने सींग मढाई । पीतांबर पुनि ताहि ओढाई ॥

यहि विधि गौ एकशत भाई । दइ विप्रनको सुनो प्रभुराई ॥
यहि विधि सेवा कीनतुमारी । तहू कर्म तुम हम शिर डारी ॥

भगवानवचन ।

सुनुराजातोहिकहि समझाऊं । पाप करे कस धरो छिपाऊं ॥
गजालोक कर्म बहु धरहीं । जीव मारि के भक्षण करहीं ॥
तुरी चढ़े बन गेलें शिकारा । नाहक मारें जीव बिचारा ॥
मारे जीव तुमहु सुनाई । इतनो पाप कहां धरो छिपाई ॥

साखी—चार खानमें भरमहु, कीनो कर्म अपार ॥

विष्णु कहै राजा सुनो, कैसे होइ उबार ॥

चौपाई ।

सतगुरु ऐसी जुगति बनाई । लीला करी एक तेहि ठाई ॥
नृपशिरहाथ धरचोतेहिवारी । निकसेकागमुखमांहि अपारी ॥
बहुत काग जरे उद्र मझारा । बहुतक भये पिंडते न्यारा ॥
लखि भगवान रहे शरमाई । फेर बात ना बोले भाई ॥
ततखन हमहुँ चले रिगाई । पहुँचे मानसरोवर जाई ॥
कामिनिशोभा बहुतअपारा । राजा परचो तबचरणमँझारा ॥
दयावंत भल लोक दिखाई । जुत्थजुत्थकामिनिअधिकाई ॥
करे ध्यान पुरुषको जहवाँ । चारभानुकी शोभा तहवाँ ॥
झलके अंगकामिनिके भाई । रैन दिवसतहां जानिन जाई ॥
सिंहासन एकधर्यों तेहि ठाई । चंद्रअंश तहां बैठक पाई ॥
भावप्रीति साहेबसो कीना । भलेज्ञानी तुम दरशन दीना ॥
बैठे एक सिंघासन दोई । राजा संग इते पुनि सोई ॥
अहो अंश दया अब होई । राजाकूं लै जाओ सोई ॥
चंद्रअंश तब शीश नवाई । आतुर हम तब चले रिगाई ॥
ले राजा तब शरीर समाया । भूपति बेगि उठे अकुलाया ॥
तबही राजा शीश नवाई । हमको तारो वेग गुसाई ॥

सतगुरु बचन ।

राजा सुनो बचन अब मोरा । करो आरती तिनका तोरा ॥
धर्मदास सब तोहि सुनाई । अमरहिं को बैकुंठ दिखाई ॥
धर्मदासबचन ।

धर्मदास तब दोउ कर जोरा । दया करो तुम बंदीछोरा ॥
औरकथा मोहि बरनि सुनावो । दया करो जनि मोहि दुरावो ॥
धर्मदास में कहूं समझाई । जो कछु भगती करी सो राई ॥
जेतक जीव मुक्ति पद पाई । सो अब तुमकूं बरनि सुनाई ॥
अमरसिंहबचन ।

साखी-राजा शीश नमाइके, बिनती करै कर जोर ॥
हमको सतगुरु तारिये, हमसो अधम न ओर ॥
सतगुरु बचन चौपाई ।

सुनुहो राय तजो मुरखाई । युग कंकवत हम चल आई ॥
मानसिंह भूपति बड राजा । तासो कीना ज्ञान समाजा ॥
तीस लाख अरुसात हजारा । इतने हंसलोक पग धारा ॥
युग परवान चौकरी गयऊ । इतने युग मोहि आवत भयऊ ॥
कहैं लेख पूछो राय सुजाना । अपने जीवका करो छुटाना ॥
छंद-गुरुचरण पद्मपराग पावन मृदुल मंजुल सोहावनी ॥
तरु सम सील परकासते तिमिर मोह नशावनी ॥
करहिं आरती बिसरि जन उरमांहि जेनर लावहीं ॥
भक्ति ज्ञान वैराग्य प्रगटे मोक्षपद तब पावहीं ॥
अमरसिंहबचन ।

सोरठा-तव चरनन अनुराग, और न दूजी आस ॥
मैं किंकर पद लाग, करहु अनुग्रह दासपर ॥
छंद-आदि ब्रह्म अर्चित अविगत आदि अदली गाइए ॥
अजर नाम अर्चित अमर अकह अविचल धाइए ॥

अक्षय नाम आनंदरूपी अखिल सम अस्थिर मही ॥

अधम उधारण अखिलपति अखंडसरूपी ही सही ॥

सोरठा—हंस उवारण नाम, हंसराज हंसनपति ॥

हंस श्रवण सुखधाम, सारशब्द दातारगुरु ॥

चौपाई ।

मैं कृमि गुरुभृंगी होय आये । अमीपिलाइके रूप फिराये ॥

मैं हूं लोह कुधात कहाया । गुरु पारस मोहि हेमबनाया ॥

एक मुख महिमा कही न जाई । जो मुख कहूँ पदमसत पाई ॥

जिमि पंछीका जोडा होई । नरनारी जुग बंध है सोई ॥

जिमि मोहि शब्द दीन गुरुराई । तिमि रानीको करियमुक्ताई ॥

तुमबँदिछोरसबैविधिलायक । हमहैंजीवअकाम अलायक ॥

तेहि ते अरज करौ प्रभु साई । करि दया जिव मुक्ताऊभाई ॥

ज्ञानी बचन ।

सुनो अमर हम कहे तुमसो । करनी बनेकरोकछु तुमसो ॥

हम कहे सोइ सुन तुम राई । भक्तिकरो अब सुरतिलगाई ॥

तन मन धन साहेबको दीना । शिरके साटे भक्ती लीन्हा ॥

रंभा नाम पुरेथकी नारी । गुरुसेवामें रहे दुशियारी ॥

राजा बचन ।

तबराजागुरुसे विनती कीना । अपनाकरमोहिनिजकरलीना ॥

अब साहेब परवाना दीजे । जो कछु कहो सोई हम कीजे ॥

कौन वस्तु आनू गुरुदेवा । सो साहेब भाषो मोहि भेवा ॥

जेहि विधितरनहोयभवसागर । शब्द सरूप कहो तुमनागर ॥

साखी—मुक्त लोक जाते मिले, जहां पुरुष अस्थान ॥

जरामरण व्यापे नहीं, सदा पुरुषको ध्यान ॥

ज्ञानीवचन—चौपाई ।

भलमत बुझे राय ते मोही । निजगतकहूं बचन दृढ तोही ॥
तब हम दीन सिखापन राजा । जाते होय जीवका काजा ॥

साखी—चौदा कदली खंभले, उत्तम ठौर गडाव ॥

मध्य चंदवा बांधिये, सिंहासन कनक बनाय ॥

चौपाई ।

गजमुक्ताहल थाल भराई । चंदन चूनको चौक पुगई ॥
कंचनके पनवारा करहू । कंचन झारी जलभर धरहू ॥
तीन हजार मँगाये पाना । कंद पसेरी सात प्रमाना ॥
सात पसेरी मिष्टान्न मँगाओ । छतिस नारियलसंगहि लाओ ॥
दुईसे एकतिस आनु सुपारी । तितनी खारक कहूं संभारी ॥
एतिक लौंग इलाइची धारी । मेवा अष्ट लावो यहि वारी ॥
मिर्च जायफल आनो भाई । द्राख जावत्री बेगि मंगई ॥
शकर बदाम कपूर बखाना । सात हाथ बस्तर परवाना ॥
कंचनथाल गजमोती भराओ । मध्य आरतीमानिक धराओ ॥
कंचनकलस धरो बहु भाती । तापर बारो पाँचो बाती ॥
फूल चमेली अगर मगाई । परिमल और सुगंध धराई ॥
नाना पुष्प बताये माला । सब कछु आनि धरे ततकाला ॥
तब हम बैठे सिंहासन जाई । सकलसमाजशब्द धुनिगाई ॥
अंचित नामकाचौका कीन्हा । ततक्षण थार हाथमें लीन्हा ॥
ठाढे सकल लोग अनुरागा । शब्द विरहसबहिन मिलिपागा ॥
दिवसको किलाजिमि आनंदा । सकलहंस तिमि आनंदकंदा ॥
तब हम बैठे थार धराई । अति आधीन परे सब पाई ॥
जब हम नरियललीन्हा हाथा । सकलजीव तब भये सनाथा ॥
नरियल मोरिअंसगहिलीना । तिनुका तोर परवाना दीना ॥
भय छूटे जप निरभे नामा । सतगुरु नाम भए विशरामा ॥

कालजालते हंस छुड़ाये । राजा रानी भक्ति मन लोये ॥
 माखी-राजा रानी प्रेमसे, और सकल जिव साथ ॥
 नाम पान सबहिन दिये, मस्तक धरिके हाथ ॥
 चौपाई ।

कीन्ह दंडवत सब बहु भाती । राजा रानि पुत्र औ नाती ॥
 पुरेथमाणसा लीनो पाना । रंभानाम पुरेथनी जाना ॥
 तबही दिवान गेमसिंह आये । नरनारी परे गुरुके पाये ॥
 आये बखशी लीन्हा पाना । भाव भक्ति मन माहिसमाना ॥
 नाम रतनचंद कहे कर जोरी । दया करो मम बंधन छोरी ॥
 आये चौधरी प्रेमचंद नामा । तनमन अरपी कीन्ह प्रनामा ॥
 तबहीं शेठ शामजी आये । प्रेमभावसे शीश नवाये ॥
 और जीव बहु लीन्हा पाना । सबको चित्त गुरुचरन समाना ॥

छंद-गजा खडा करे विनती प्रभु दीनबंधु दयाल हो ॥

हंस नायक प्रभू लायक शब्द दीन्ह रसाल हो ॥

जेहि खोज ऋषिमुनिनारदब्रह्मा हरि हर थक रहे ॥

नहि पारपावत शारदासोइनामसतगुरुमोहि दिये ॥

सोरठा-मोहि अनुग्रह कीन्ह, दास जानि दाया करी ॥

भक्तिदान मोहि दीन्ह, लेइ चलो समरापुरी ॥

ज्ञानीबचन-चौपाई ।

ज्ञानी कहे सुनो हो राऊ । तुमरी अवध सो सबै रहाऊ ॥

एते दिवस रहो भवसागर । पीछै चलो लोक कहँ नागर ॥

राजारानी वचन ।

राजा रानि कहे कर जोरी । सतगुरु सुनिये विनती मोरी ॥

कठिन दुःख भवसागरमाँही । क्षण भर हमपै रह्यो न जाही ॥

इकइस लाखजीवतुवशरना । बहुत बरसमें होइ निजमरना ॥

जो तुम सतगुरु हंससहायक । होहु दयाल हंस सुखदायक ॥
अधमउधारन नाम तुम्हारा । अवगुन मोर न करहु बिचारा
ज्ञानी बचन ।

ज्ञानी बचन कहे गोहराई । राजा सकल हंसा बुलवाई ॥
सकल हंस सतगुरु संग लागा । इकइस लाख हंस तन त्यागा ॥
पावत पान भये एक ठारा । पहुँचे जाय पुरुष दरबारा ॥
भाव भक्तिभल कीन्ह बनाई । सर्वस अरपि चरनामृत पाई ॥
काल जालको चिह्न जो पावे । सार शब्दमें सुरति लगावे ॥
मन निरंजन तेज ओंकारा । ये सब चीन्हे काल पसारा ॥
नाभिकमलसे सुरति लगावे । मकरतार चट्टि शब्द समावे ॥
पुरुष दरश पावे जब हंसा । जनम मरणको मैटै संसा ॥
षोडश भानु हंस तेहि रूप । समझ न पगे रंक औ भूपा ॥
एक बरन राजा और रानी । ताको भेद सब जाने जानी ॥
पुरुष सज्या हंस तहां पाये । अमृत भोजन करत अवाये ॥
काया अमर अमरवर पाई । दुःख आंगद्वंद सबै मिटजाई ॥
एहीविधि सकल जीवतहुँ आवा । सबहीहंस एकनाम समावा ॥
सोरठा-कहा जीव करनी करे, कहा चलेगा चाल ॥

सतगुरु नाम प्रतापते, कबहुँ न खावे काल ॥

कहन सुननकी हे नहा, देखा देखी नाय ॥

सार सबद जो चिन्ही, सोइ मिलेगा आय ॥

चौपाई ।

पुरुष हुकमसे जीव बुलाये । राजा रानी हंस तहां आयें ॥
हंसन कह तब वचन सुनाये । भाग बडे तुव दरशन पाये ॥

पुरुष वचन ।

अहो जीव कस कीन्हकमाई । हंस सज्जन मोहिकहोसुनाई ॥

राजा रानी वचन ।

माथ नवाय कह राजा रानी । बार बार विनती बहु ठानी ॥
 करनी चाल हम नहि जाना । परे ते कूपमें अति अज्ञाना ॥
 आय जगाये अंध अचेता । सतगुरु शब्दसे बांधे हेता ॥
 पुरुषहुकमते ज्ञानीचलिआये । कहो जीव कसकरहिं कमाये ॥
 ज्ञानी वचन कहैं परमाना । इन सम हंस और नहिं आना ॥
 इनकी डोरी जीवसब आवा । पुरुष सुनी यह आनंद पावा ॥
 अंक मिलाई हंस तब लीना । अरध सिंहासन बैठकदीना ॥
 सेत छत्र शिर दीन्ह तनवाई । सूरज कोटि छवि राजा पाई ॥
 यहिविधि राजालोकसिधाये । सुनत बोध धर्मनि मनभाये ॥
 एक वचनको संशय आई । सोमोहिनाथ कहौ समुझाई ॥
 षोडश रवि सब हंस सराई । कैसे रायको दइ अधिकाई ॥

कबीर वचन ।

धर्मदास तौहैं कहि समुझाऊँ । तुमरे मनको धोख मिटाऊँ ॥
 राजगुमानउन दिये विसारी । और जीवकी मुक्ति सुधार्ई ॥
 पुरुष रायको पृछन कीना । निज करनीकर नामनलीना ॥
 अपने मन तजि मान बडाई । ताते पुरुष दया उर आई ॥
 धर्मदास सुनो चित लाई । यहिते राजा बढती पाई ॥

धर्मदास वचन ।

धर्मदास कहे युग कर जोरी । दया करी तुम बंदीछोरी ॥
 दीनदयाल दयाके सागर । अच्छी कथा सुनाये आगर ॥
 साखी-धर्मदास आधीन होइ, विनती करै कर जोर ॥

कथा कही अमरसिंहकी, संशय मिटायो मोर ॥

इति श्रीबोधसागरे कबीरधर्मदाससंवादे राजा अमरसिंहबोध

कथा वर्णनो नाम द्वितीयस्तरंगः ॥

श्री अमरसिंहबोधः समाप्तः



भारतपथिक कबीरपंथी-
रवामी श्रीगुगलानन्दद्वारा सशोधित ।

श्री-बीरसिंहबोध ।

खेमराज श्रीकृष्णदासने
बम्बई

निज "श्रीवेकटेश्वर" स्टीम् प्रेसमें

छापकर प्रकाशित किया ।

संवत् १९७८ अके १८४३,

सर्वाधिकार रक्षित है.

यह पुस्तक खेमराज श्रीकृष्णदासने बंबई खेतवाडी ७ वीं गली खंभाटा लैन निज
“श्रीवैकटेश्वर” स्टीम्-प्रेसमें अपने लिये छापकर यहीं प्रकाशित किया ।

सत्य नाम ।



श्री कवोर साहिव ।



अथ बोधसागर ।

तृतीयस्तरंगः ।

बीरसिंहबोध ।

धर्मदास वचन—चौपाई ।

धर्मदास पूछे चित लायी । साहब मोहि कहो समझायी ॥
बीरसिंहराय किमिकीनी सेवा । करिके दया कहो गुरुदेवा ॥
बीरसिंहदेव बडा अभिमानी । कैसे साहिब सेवा ठानी ॥
सो वृत्तान्त कहो मोहि स्वामी । दयाकरि कहिये बहुनामी ॥

कबीर वचन ।

धर्मदास भल पूछहु बाता । तुमसे बरनि कहूँ विख्याता ॥
तनमन धन अरु मोह न लावे । जो जिव हमरे संग सिधावे ॥
आदि अन्त सुरति हम कीना । तबही पग धरती पर दीना ॥
और दिशा देख्यो हम जायी । पूरब पश्चिम दृष्टि फैलायी ॥
बीरसिंह देव काशीकर राऊ । हम पहुँचि तहँ कीन गोहराऊ ॥
प्रथमहि चले भक्तपर गयऊ । सकल संत जहँ भक्ति करयऊ ॥
नामदेव भक्ति करन मनलावा । सेना धनाजाट तहँ आवा ॥
राँका बाँका सदनकसाई । पद्मावती दीपक लै आई ॥
चौहटे तान चँदेवा दीना । ठाडे भक्त सब गावन लीना ॥
नामदेव लोटन करे भाई । हथ ताल रैदास बजाई ॥

धना मृदंग पट्ट उजियारा । जुरे भक्त सब संत अपारा ॥
 धर्मदास तहँवा हम गयऊ । रामगम सबहीमिलिकियऊ ॥
 तब हमबचन एक कहि लीना । सकल भक्त केहिके मनदीना ॥
 नामदेव केहि पुरुषहिं ध्याओ । भक्ति करत का कर्म तुमलाओ ॥

नामदेव बचन ।

नामदेव कहे सन्त भुलाओ । दोसर पुरुष कौन ठहराओ ॥
 हरि हर ब्रह्म हैं बड देवा । तिनकी करै सकलजग सेवा ॥
 वे जगकर्ता सब कछु अहहीं । वेद शास्त्र सबतिन कहँकहहीं ॥
 है प्रभु आदि मध्य अरु अंता । शीश मुडाय जपो केहि संता ॥

कबीर बचन ।

हरि ब्रह्मा शिव शक्ति उपायी । इनकी उत्पन कहँहुं बुझायी ॥
 विना भेद सब भूले जानी । ताते काल बांधि जिव तानी ॥
 अजर अमर है देश सुहेला । सो वे कहँहि पंथ दुहेला ॥
 ताका मरम भक्त नहिं जाना । किरतम कर्तासे मन माना ॥
 हमतो अगम देशसे आये । सत्यनाम सौदा हम लाये ॥
 साखी-किरतम रस रंग भेदिया, वहतो पुरुष न्यारा ॥

तीन लोकके बाहिरे, पुरुष सो रहत निनार ॥

चौपाई ।

बीरसिंहदेव बघेला राजा । बैठे आय महलके छाजा ॥
 राजा नजर सबन पर कीना । सबकी भाव भक्ति चितदीना ॥
 गावें भक्त आनन्द व्यवहारा । एक भक्त बैठा सो न्यारा ॥
 टोपी एक अनूपम दीने । माथा तिलक कूबरी लीने ॥
 स्वेत स्वरूप भगतकी काया । महा आनन्दपुरुष छबिछाया ॥

राजाबीरसिंह बचन ।

छरीदार राजा हँकरायी । नामदेवको आनु बुलायी ॥

छडीदार वचन ।

बेगहि छरीदार चलि आये । नामदेव राजा बुलवाये ॥

नामदेव वचन ।

नामदेव पूछे चितलायी । राव संग को और रहायी ॥

छडीदार तब वचन सुनावा । कोउ नहि साथ रायके भावा ॥

नामदेव छडी हाथमें लयऊ । चले चले राजापहँ गयऊ ॥

राजा देखि ठाढ उठी भयऊ । कर गहिके आसन बैठयऊ ॥

राजा वचन ।

राजा कहे सुनौ हो देवा । कहौ कौनकी करतहौ सेवा ॥

नामदेव वचन ।

साखी-भक्ति करौ गोविन्द की, एक चित ध्यान लगाय ॥

राजाबीरसिंह वचन ।

श्वेत रूप जो भक्तहै, सो कस न्यार रहाय ॥

नामदेव वचन ।

राजा सुनो वचन यक मोरा । हम तुम हरि हर ब्रह्मा दोरा ॥

ताकर भक्ति करे वह हांसी । कहै पुरुष यक और अविनासी ॥

माला मेखली श्याम शरीरा । जिली जुलाहा सत्यकबीरा ॥

किरतम कहे सकल सब देवा । कहे साँचु देख नहि सेवा ॥

मूर्ति कूटि पाथरका लाई । कारीगर छाती दे पाई ॥

काँसा ताँबा मूर्ति बनावा । तामें कैसे ब्रह्म समावा ॥

ऐसे कहे कबीर जुलाहा । झूठे देवन हमें मनाहा ॥

वह तो कहे हम पुरुष अभेवा । नहि कोइ जाने हमरो भेवा ॥

आप अपन पौ बहु विधि थापै । आपै देव सेवक पुनि आपै ॥

भक्ति ज्ञान योग को भेवा । तीर्थ व्रत तप अरु सब देवा ॥

सबको काल जाल बतलाव । एकाका नहि मनमें लाव ॥

हम सनबहुविधिवादविवादा । नहि मानै वह अनहद नादा ॥

साखी-जोलहा निंदत सबन को, बन्दत काहू नाहिं ॥

झूठ कहत हरि ब्रह्महीं, कहे निर्गुण एकै आहिं ॥

राजाबीरसिंह बचन ।

राजा नामदेव कह बानी । अगम ज्ञानवद करत बखानी ॥

नामदेव बचन ।

कह नामदेव सुनो हो राजा । बहु विधि कहै शब्द को साजा ॥

जो का निर्गुन नामहिं धावै । योना संकट बहुरि न आवै ॥

राजा छरीदार पठवायी । जाय कवीरहिं आनु बुलायी ॥

राजाबीरसिंह बचन ।

परम खुशी हमरे मन आवै । जो कोइ निर्गुण नाम सुनावै ॥

अस्तुति वेद करत है जाको । पाग न पावन हरिहर ताको ॥

अहिंसांत अस्तुति करै जा ताही । कोउविधि पार न पावन जाही ॥

तेहि कर भजन करै जो कोई । सब विधिसे पूरा है सोई ॥

नाम देव सुनु संत सुजाना । वह निन्दक नहि संत प्रमाना ॥

छडीदार भेजि तुरत बुलवाऊँ । निर्गुण भेद अबहिं खुलवाऊँ ॥

रूप संत हृदय मम भावै । शांत रूप वह भजन प्रभावै ॥

देखो अबहीं आवत सोई । सब कहिहै तेहि भावत जोई ॥

छडीदार तुरते चलि आयऊ । जहंवा हम वहाँ बैठे रहेऊ ॥

छडीदार बचन ।

छडीदार तब विन्ती लावा । अहो कवीर तोहिराय बुलावा ॥

विन्ती रायकीन कर जोरी । लाव कवीर वेगि तैं दोरी ॥

कवीर बचन ।

कहै कवीर बचन अरथाई । केहिकारण मोहिराय बुलायी ॥

ना हम पण्डित ना परधाना । ना ठाकुर चाकर तेहि जाना ॥

ना हम विराना देश बसावैं । ना हम नाटक चेटक लावैं ॥

पैसा दमरी नाहिं हमारे । केहि कारणैमोंहिराय हंकारे ॥
 गरज होय तो यहाँचलिआवै । हम तो बैठे भजन करावै ॥
 साखी-छडीदार तुम जायके, कहो रायके पास ॥
 महा प्रचण्ड बघेल है, हम नहिं मानत त्रास ॥
 चौपाई ।

छडीदार अति क्रोधित भयऊ । तुरतहिं चलि रायपहँ गयऊ ॥
 छडीदार वचन ।

छडीदार कहै कर जोरी । महाराज एक विनती मोरी ॥
 भक्त न आवै मोर हँकारे । कुछ भयभीरन राखु तुम्हारे ॥
 कहैं हमारे कौन है काजा । तृणदिसमानगिनत होंगजा ॥
 एता वचन राय सुनि लीन्हा । अगम बात कछु घटमोंचीन्हा ॥
 वह तो पद्मपुरुष है सोई । और होय तो आवै कंई ॥
 सत्य भाव जाके उग आवे । मान बडाई लोभ सब जावे ॥
 निर्गुण भक्ति जोइ लखलाना । ताहि न उपजे भाव मलीना ॥
 आशा तृष्णा जेहि घट ब्यापै । धनवन्तासो चाह मिलापै ॥
 यहतो संत अविक्ल अविकारी । केहि कारण आवै केहु दुआरी ॥
 शोचत राजा मनमें गूने । नामदेव मन रहे अलूने ॥
 मान बडाई जो नर पागे । करत खुशामद नृपती आगे ॥
 साखी-नामदेव राजा कहै, जुलहा यहाँ न आव ॥
 है अभिमानी बहुत सो, बहु अहंकार जनाव ॥
 चौपाई ।

कीन विवेक राय दिल माहीं । नहिं आये कवीरहम जाहीं ॥
 वहतो सत्य भक्ति चितदीन्हा । कारण कौन त्रासमम कीन्हा ॥
 यहिविधिकीन विवेकविचारा । तबहीं राजा आप सिधारा ॥

हुकम पाय आय असवारा । गज औ तुंगसुसाज सँवारा ॥
 आवत देखा जब हम भाई । तब हम लीला एक बनाई ॥
 आसन अधर कीनतेहि वाग । सवा हाथ धरतीसे न्यारा ॥
 माला तिलक औ टोपविराजै । हाथ स्वेत कुवरी सो छाजै ॥
 नृपति देखि अचरज मन कीन्हा । यह तो पुरुष भगम कछु चीन्हा ॥
 कीन अवलोकन जगहम सबहीं । ऐसे पुरुष न देखे कबहीं ॥
 धन्य धन्य अस्तुति सब गावैं । धन्य कवीर चरण सब ध्यावैं ॥
 राजा चरण पकड़ि दोउ भाई । धन्य धन्य नृप करइ बडाई ॥
 कहे राय धन भाग हमारा । दर्शन दीन्ह आय करतारा ॥

राजा बीरसिंह वचन ।

छंद—अस्तुति करत नृपति भाषेउ तुम ब्रह्मनिगुण आपहौ ॥
 अनाथनाथ सनाथ करि दिये माथ हाथ अनाथ हौ ॥
 अपनो दास करि जानि साहब दरश दीनेउ आयकै ॥
 काजै कृपा यहि दामपै चलि भवन दरस दिखाय कै ॥
 सोरठा—कृपा कीन जस मोहिं, तस मन्दिर पग दीजिये ॥
 विनय करौ प्रभु तोहिं, वेगि विलम्ब न कीजिये ॥
 कबीर वचन चौपाई ।

कहैं कवीर तहाँ नहिं काजा । तुम परचण्ड बघेला राजा ॥
 काम क्रोध मद लोभ बडाई । रोम रोम अभिमान समाई ॥
 तुरी सवालक्ष संग तोरे । लक्ष मवादो प्यादा दोरे ॥
 हस्ती चलत सहम तब संगी । निशिदिन भूले कामिनि रंगा ॥
 कंचन कलसा महल अटागी । कैसे शब्द गहै नर नारी ॥
 हम भिक्षुक जानै संमाग । कौन काज है तहाँ हमारा ॥

राजा बीरसिंह वचन ।

मतगुरु हौ दीन दयाला । कमवश्य हम अहैं विहाला ॥
 माया तिमिर नैन पट लागी । दर्शन पाय भये अनुरागी ॥

करो दया अपनो करिलीजै । दास जानिआयसु प्रभुदीजै ॥
 दीन जानि मन्दिर पगु धारो । भक्तराज तुम वेगि पधारो ॥
 हम हैं पापी अधम अजाना । तवविनुकृपाकालधरि ताना ॥
 देइ उपदेश प्रभुमोहिबचावो । पाप जाल्यो वेगि छुडाओ ॥
 तुमरी कृपा सुनहु हो साहब । असविश्वामभवदितरिजायब ॥
 अब जनि लावहुबार गुसाई । चलहु कृपा करि हंसन राई ॥

साखी-भक्तराज दाता अहो, कीजै मोहि सनाथ ॥

मैं अधीन शरण तुव, चलो हमारे साथ ॥

चौपाई ।

बहुत अधीन तंहि जब देखा । चलनविचार कीन तबलेखा ॥
 तनक्षण राजाहस्ति मँगावा । लै हमहीं तब इस्ती बैठावा ॥
 गजते आसन अधरहि धारा । चले राय तब बजे नगारा ॥
 जबै राय मन्दिर लै गयऊ । सबै रानि कहँ पुरत बोलैऊ ॥
 मानिकदेहरानीचलि आयी । तासे राजा बात सुनाई ॥

राजा बीरसिंह वचन ।

हम रानी गुरु कीन कबीरा । आदि ब्रह्म हैं मतिके धीरा ॥
 चरण धोय चरणामृत लीजै । सतगुरु दया करम सबछीजै ॥
 तब सो रानी कहै सुनु बाता । ओढे चीर सुभग निजगाता ॥

रानी मानिकदेवी वचन ।

राजा विन्ती सुनो हमारा । समुझिबूझि गुरु करोभुवारा ॥
 तुम राजा हो बहुतै ज्ञानी । विनय हमार लेहु सुनिमानी ॥

राजा बीरसिंह वचन ।

इतना सुनत राय मुसुकाये । रानी ज्ञान कोन बहुराये ॥
 तुम हो नारि भक्तिकहँ मानो । साहबकी गति नहिं तुमजानो ॥
 कर्ता आप देह धरि लीना । भक्तरूप होय दर्शन दीना ॥

हम अरु राय बैठे जेवनारा । आनिसो वार धरे दोय थारा ॥
 कंचन थारी झारी पानी । कंचनवटुकी व्यंजन आनी ॥
 अधरसु थार भुईं ते न्यारा । महाप्रसाद राय चित धारा ॥
 पायप्रसाद राय जब लीन्हा । हम अरु राय बाहरपगुदीन्हा ॥
 एकहि आसन बैठे दोई । नामदेव तब ठाढे होई ॥
 नामदेव कहँ आसन दीन्हा । बहु सन्मान ताहिकर कीना ॥
 नामदेव बैठे जब जायी । प्रश्न करनतिन चिततबलाई ॥
 नामदेव बचन ।

कहहु कवीर मोहि समुझाई । कहँ तवगुरुशब्दकितपायी ॥
 साहिब कौन सबनके पारा । मोसे कहहु वचन विचारा ॥
 साहि कौन जाहि तुम ध्याओ । कहँवामुक्तिसुरतिकितलाओ ॥
 कौन भाँति यमसे जिव बाँचे । भिन्न भिन्न कहहु मोहिसाँचे ॥
 आप न समझो बोधो राजा । गमविना होयजीव अकाजा ॥
 केतो पढे गुने अरु गावै । विनु हरि भक्ति पार नहिँ पावै ॥
 कबीर बचन ।

नामदेव भूले तुम जैसे । हमको मति जानहु तुम तेसे ॥
 निर्गुण पुरुष आदियकआना । अस्तुति ताकर वेद बखाना ॥
 शिव ब्रह्मा नहि पावत पारा । और जीव है कौन विचारा ॥
 छन्द-नित्य निगम अस्तुति अराधेहारिथके विरंच महेशहो ॥
 सबैऋषिदेव अस्तुति राधेईतेहि गावतसुरपतिशेषहो ॥
 जेहि गावत नारद शारदादि पार कोई ना लहे ॥
 सोइ भेद सतगुरु गावही कोइ संत ज्ञानी चित गहे ॥
 सोरठा-पूजहिं हरि हर देव, जड मूरति पूजत बहे ॥
 निशिदिन लावत सेव, जो रक्षक भक्षक अहे ॥
 नामदेव तब सुनत लजाने । नहिँ पाये भेद मनहिँ पछताने ॥
 सुनिलजायकै उठिसो गयऊ । राजा तबहिँ कहत अस भयऊ ॥

राजा बीरसिंह वचन ।

तब राजा अस वचन उचारा । हम सँगसाहिब चलो शिकारा ॥
आगे सेना सबही ठाढे । हस्ती घोडा बाहर काढे ॥
आगे चले निशान नगरा । सवा लक्ष सँग चले असवारा ॥
सवा लक्षद्वय प्यादा दौरा । ठाढे भाँट करत बड शोरा ॥
हरनी स्वान लीन सँग चीता । कोइ सचान वाज कर लीता ॥
बहु दल हस्ती लीनी साथी । यहि विधि चले शिकारनरनाथा ॥
भाँतिन भाँतिखिलौना लीना । आयसु सकल लोक कहँ दीना ॥
आगे सेन चली सबसाजा । हस्ती बैठि चले गुरुराजा ॥

कबीर वचन ।

जबही राजा चले रिंगार्यी । तब हम तासों बात सुनायी ॥
राजा संग मोहि लै जाओ । जीव एक मारन नहिं पाओ ॥
कोटिक यतन करो तुम राजा । जीवन मिलै होय तोहि लाजा ॥

राजा बीरसिंह वचन ।

ततक्षण राजा वचन सुनावें । मारन कहौ तोहिजाइ चुकावें ॥
तब हम कहा हमका कहहीं । यह नहिं धर्ममनुष कर अहहीं ॥
यह सुनिराजा घोड कुदावा । शेर शिकारी रूप बतावा ॥
एको जीव फन्द ना परई । क्रोध अग्नि घट भूपति जरई ॥
खेलत रमत दूर होय गयऊ । कितहुँ न भेंट जीवसे भयऊ ॥
फिरत अहरे परे भुलाई । कतहुँ न ठौर नीर कहँ पाई ॥
विना नीर सो तडपे राजा । व्यापी तृषा बनै नहिं काजा ॥

साखी—बहुत दूर राजा गये, पाछे फिरे भुआर ॥

कटक सकल सबही फिरे, व्याकुल सबै अपार ॥

१ ग्रंथकर्ता भण्णवा पञ्चात् के लेखक महाशयोकी बलिहारी है, शिकारके लिये इतनी तैयारी बतलायी है ।

पानी पानी सबहीं गोहरावैं । विनु पानी सबहीं मरिजावैं ॥
 राजा कहै देखो सब जायी । बडो धूप जिव गयो ढरार्यी ॥
 बहुत लोग जल ढूँढन लागे । बहुतक लोग भाग चले आगे ॥
 ठावँ ठावँ सब गये भुलाई । हस्ती घोरा सबहिं नशायी ॥
 राजा तब कहन अस लागा । संशय बहुत तेहि मन पागा ॥

राजा बीरसिंह वचन ।

आज अहेरएको नहिं आवा । एको जीव जन्तु नहिं पावा ॥
 पानी कतहुँ न पावा भाई । कैसी कर्ता कीन गुसाई ॥
 जो जनितोंअस होइहैं बाता । करन अहेर न आइत ताता ॥
 सेना इमार प्राण मम प्यारी । सोऊ मरत प्यासकी मारी ॥
 अबकहांजाइकेहिविधिकरिहैं । विना नीर सब इतही मरिहैं ॥
 न्याकुलता बहुतै मन बाढी । बहुत करौं सकौं नहिं काढी ॥
 तेहि अवसरचर बहुतक आये । खोजिथकेनहिंजलकतहंपाये ॥

साखी-सेना सकल मरतहै, पानि पानि गोहराय ॥

छाँह छाँह सब ढूँढहीं, राजा रहे शिरनाय ॥

चौपाई ।

तहिअवसर हमकीनविचारा । राय प्रतीति देखों यहिवारा ॥
 बीरसिंहदेव वधेला राजा । देइ प्रतीति करों यहिकाजा ॥
 विना प्रतीति भक्तिनहिं होई । विनाभक्तिजिवबाय विगोई ॥
 विनु भक्ती गुरु नाहीं भेटे । विनु गुरु संशय नाहीं मेटे ॥
 विनु मेटे हिय संशय भाई । काल दयालकहुकोविलगाई ॥
 मन परतीति होय जेहिप्रानी । होय तुरत चौरासी हानी ॥
 करे प्रतीति नर सो पावैं । पाइ श्रद्धा गुरु शरणहिं जावैं ॥
 गुरुके वचनजाहि विश्वासा । फिर नहिं होय नरकमें बासा ॥

गुरु विनु मुक्ति न पावत कोई । चौरासी भय मिटत नलोई ॥
 याते हम सब कीन्ह उपाई । राजा मन प्रतीति जेहि आई ॥
 सरवर रच्यो अनूपम ठामा । बाग बगीचा औ लखैरामा ॥
 नाना भांति फूली फुलवारी । बहु मेवा लागे तेहि बारी ॥
 नाना भांति फुल तहँ फूले । बास सुवास पाइ मन भूले ॥
 नाना पक्षी करत कलोला । जहँ तहँ उड़ै सो टोलमटोला ॥

छन्द-फूल नाना भांति फूले, केतकी जूही आदि है ॥

चम्पा चमेली मोगरा तहँ फूल दाख गुलाबई ॥

खम्भा कदली खडे तहाँ सेवती दवना बहुअहै ॥

कदम्ब जाहीमालती चमेली बहुत सुखदा लहै ॥

सोरठा-नारियल अम्ब बदाम, कटहर बडहर पीसता ॥

बहुविधि कहे सुनाम, फल लागे चढु ओरसो ॥

चौपाई ।

ऐसो बाग बनी फुलवारी । बनीसो तुरत लगी नहिंवारी ॥
 इहवाँ सैन रही कुम्हलायी । पानी पानी सबै गोहरायी ॥
 तब हम कहे राय सुनु बाता । सत्य वचन भाखुं विख्याता ॥
 उत्तरदिशा राय पगुधारो । थोडहि दूर जल बहे अपारो ॥
 कहे मरत ससैन कुम्हलाई । सेना सकल चलो तहँ भाई ॥
 यहि सुनि रायठाढ तब भयऊ । दौयकर जोरि सुविन्ती कियऊ ॥

राजा बीरसिंह वचन ।

सतगुरु वचन कहो जनि ऐसो । पाइन ऊपर जलबह कैसो ॥
 बार अनेक अहेरे आये । पर्वत पर जल नाहिं रहाये ॥
 साहिब कहु जनिऐसी बानी । हँसे लोग गुरु झूठ बखानी ॥

दीवान बचन ।

राय दिवान कहे अस बाता । गुरुके वचन झूठ नहिं जाता ॥
कहत दिवान जोरि दोउ हाथा । गुरुके वचन सत्यधरु माथा ॥
का जानो को आहि गुसाई । बेगि राय उठि टेके पाई ॥

राजा बीरसिंह वचन ।

करो क्षमा सुनु हे गुरुराई । दास गुनाहहि देहु बहाई ॥
जस कहिहो सोई हम करि हैं । वचनतुम्हारसदा अनुसरि हैं ॥

कवीर वचन ।

तब हम कह्यो सुनो तुम राई । उत्तर दिशा तुम देहु रिगाई ॥
सैन सिपाह ठाढे सब भयऊ । ततक्षण उत्तरदिशि चलिगयऊ ॥
राजा कुंजर दीन रिगाई । बाज निशान भेरि शहनाई ॥
चलत राय देखे चहुँ फेरा । राजा नजर दूर लगि फेरा ॥
दूरिते देखि परा सो ठावा । सुंदर बाग जहँ रहे शोभावा ॥
राजा देखि हरष मन भरेऊ । गुरुके चरण शीश तब धरेऊ ॥
सरवर निकट राय चलिजाई । देखत बाग रहे हरषाई ॥
अम्ब निम्ब औ कदलिघनेरा । दौना मरुआ लगे बहुतेरा ॥
भांति भांति तहँ मेवा लगा । भई प्रतीति राय मनजागा ॥
एसी शोभा बनी बनायी । देखत बनै बरनिनहिं जायी ॥
छन्द-राय कुंजर उतरि ठाढे चरण सतगुरुकै गहै ॥

राजा बीरसिंह वचन ।

हम कुटिल अधम अधकर्म राशी बचन पावन तुवअहै ॥
बालभाव सुभाव पितुं हितबचन कबहिक टार जो ॥
पितु कण्ठ लावत आपने हिय तात और न आव सो ॥
सोरठा-जो पितु तामन लाव, तो बालक कासों कहै ।
अधम उधारन नाव, दीन जानि जन तारिये ॥

साखी-सैन सरोवर देखिया, उत्तम वरन सो नीर ॥

गिरिवर पर सरवर रचे, धन धन सत्यकवीर ॥

चौपाई ।

करी प्रणाम राय गहि पाई । महाप्रसाद देहु गुरुराई ॥
 कीन प्रसाद राजा कहँ दीना । राजाबहुतलोकमिलि लीना ॥
 मेवा सकल लोक मिलि पाये । बहुत भाँति सबलीन धराये ॥
 राजा प्रजा सब करै बडाई । काहि कहौ कछुकहत नजाई ॥
 जैसा मेवा सतगुरु दीना । नहिमिलसोसुरलोकहिं चीना ॥
 खात खातसो जनम सिराई । नहि देख्यो अस मेवा भाई ॥
 लेइप्रसादजलअचवन कीन्हा । दुख संतापभुलायसो दीन्हा ॥
 फिरन लगे सोबगीचा माहीं । नहिं गर्मी नहिं शीत तहाँहीं ॥
 परिमल वास उडे चहु ओरा । बहुविधि पक्षी करै कलोरा ॥
 ज्यों २ देखैं शैल बगीचे । त्यों २ मन आनन्दरससींचे ॥
 साखी-तृषा सबन की बुझि गयी, ऐसा निर्मल नीर ॥

मेवा पाये सब मिली, तृषित भये शरीर ॥

कवीर वचन-चौपाई ।

तब मैं कह्यो सुनो हो राजा । सेना सकल भयो सब काजा ॥
 होय असवार जाहु घर राई । जहँको जल तहँ देउँ पठाई ॥
 अब हम अपनेलोकसिधायब । सत्य पुरुषका दर्शन पायब ॥
 वहाँकी शोभा अनन्त अपारा । शिव ब्रह्मा नहिं पावत पारा ॥
 सुनत बचन राजा भय माना । जानि विछोहैमनहिसँकाना ॥
 हाथ जोरि विन्ती सो कीना । बहुत अधीन भयो परवीना ॥

राजा बीरसिंह वचन ।

राजा चरण परे अकुलायी । अब सतगुरुजनिकरहु दुरायी ॥
 अब स्वामी मन्दिरपगुदीजै । सकल जीव अपनाकरिलीजै ॥

अबमनजनिदोय करिजानो । हम सेवक तुम निज कै मानो ॥
 राय प्रतीति बहुत मनभाई । देखि प्रीति चलन फरमाई ॥
 कुंजर राय भय असवारा । ले हमहीं पुनि तहाँ बैठारा ॥
 सब सेना की भयी तैयारी । बजा निशानलगीनहिं बारी ॥
 ततक्षण राय बचन कहि दीना । भरि भरि वर्तन सबही लीना ॥
 छोडि सरोवर चले रिंगायी । क्षणहि सरोवर छार उडायी ॥
 जब राजा पुनि पाछे निहारा । नहीं सरोवर उडै तहँ छारा ॥
 देखत राजा चकित न थोरा । मर्म पद गहि चित्त बहु मोरा ॥
 साखी-बन्य कवीर सरोवर रची, दलहिं लीन जिवाय ॥

जहवाँको जल लायऊ, तहँको दीनपठाय ॥

चौपाई ।

आगे मोहि करिजबहीलीन्हा । तब पीछे राजा पग दीन्हा ॥
 चले राय महलन पगदियऊ । सतगुरुको आगे करिलयऊ ॥
 मन्दिर कअन पलंग बिछावा । ले सतगुरुहि तहाँ बैठावा ॥
 मानिक देइ रानी चलिआयी । कहै राय रानी गहु पायी ॥

राजा बीरसिंह बचन रानी प्रति ।

चरण टेकि चरणामृत लीजै । गुरुकीदया अमृत रस पीजै ॥
 लोक लाज तुम तजहु बडाई । गुरु कवीरकी शरणे आई ॥
 गुरु कृपा होय दासपरजबहीं । काल त्रास ना व्यापे तबहीं ॥
 ज्ञान भक्ति विनु गुरु न पावै । काल फन्द स्वपने नहिं जावै ॥
 सर्गुण भक्ति जगत बतलावे । निर्गुण भक्ति गुरुसे पावे ॥
 विनु निर्गुण नहिं जीव छुटावे । बार बार यम फन्द परावे ॥
 छन्द-गुरु कृपा होय जेहि दासपै तेहि काल त्रास न व्यापई ॥
 गुरु मुक्ति दाता भक्तत्राता छुटै जीव तिहुँ तापई ॥

संशय हरन अव कर्म दाहन है सदा हंस सहाय हो ॥
गुरु पद मते अपवर्ग वासा पुरुष लोक सिधायहो ॥
चौपाई ।

मग्वर एक रचे गुरु तहवाँ । पर्वत ऊपर जल नहिं जहवाँ ॥
बाग एक रच्यो तेहिके तीरा । निर्मल जल वहेत्रिविधसमीरा ॥
नाना भांती तरु जेहि माहीं । सुर पादप तेहि देखि लजाहीं ॥
कदम्ब निम्ब अम्ब कचनारी । वडहल बेल बदाम सुपारी ॥
नाना रंग फुली फुलवारी । फल रस भरे झुकीं सब डारी ॥
रानीसे अस कहि सो राजा । विन्ती करन लगा जिव काजा ॥

राजा बीरसिंह वचन ।

चरण देखि राजा कहे बाता । भये दयाल दयानिधि दाता ॥
आवागमन रहित करु मोही । अब मैं खसम चरणगह्यो तोही ॥
मोकहँ अपना लोक दिखाओ । अब हम घरचो तुम्हारो पाओ ॥

कबीर वचन ।

सत्य प्रतीति जब राजहिं देखा । बहु विधि ताकी कीन परेखा ॥
श्रवणलागिनिज नाम सुनाया । तुरतहिं राजा लेइ सिधायी ॥
तबहीं दूत रोक गहि बाटा । छलन दूत बैठा तहँ नाटा ॥

दूत वचन ।

साहब तुम निर्मल असवारा । भुईं तरे कहवाँ पगु धारा ॥

कबीर वचन ।

तबै हम दूतनसे कहेऊ । यह जिव नाम खसमकर गहेऊ ॥
इतना सुनत दूत उठिभागा । देखत नृपति भयो अनुरागा ॥

राजा बीरसिंह वचन ।

धन्यसतगुरुधन्यभक्ति तुहारी । धन्य हंसा जेहि शब्द उचारी ॥
चले हम अरु राय तेहि ठौरा । जहँवा गम पावत नहिं चौगा ॥
पहुँचे मानसरोवर जायी । शोभा कामिनि बहुत सुहायी ॥

युत्थ युत्थ बैठी सबपाँती । एक रूप तहवाँ नहिं जाती ॥
चार भानु कामिनिकी काँती । नहिं तहँ दिवस नहिं तहँ राती ॥
राजा परे चरणतर आयी ।

राजा बीरसिंह वचन ।

दयावंत भल्लोक दिखायी ॥

कबीर वचन ।

देखिनि राय लोककी शोभा । चकित होय राजा मन लोभा ॥
पुनि राजा कहन अस लागा । देखि लोक लोभ महुँ पागा ॥

राजा बीरसिंह वचन ।

अब जनि लेइ चलो संसारा । राखो लोक शरण मंझारा ॥
कबीर वचन ।

तब हम कहा सुनु रायसुजाना । तुम राजासत्यलोकभुलाना ॥
राजा मानो कहा हमारा । चलो तहांजहँ राज तुम्हारा ॥
बर बस बाहँ गही तब राई । ले राजा तहँवा बैठाई ॥
छिन यकगहरतहां नहिं कियऊ । देह जाय के जागृत भयऊ ॥
दोय कर जोरि राय रहे ठाढे । बहुत प्रेम हरष मन बाढे ॥
राजा बीरसिंह वचन ।

अबलगि साहब मैं नहिं जाना । सकल भक्त सम तुमको माना ॥
अब हम जाना भेद तुम्हारा । सोई करहु जेहि हंस उबारा ॥
राजा कहे कौन विधि करऊँ । सकल द्रव्य गुरु चरणे धरऊँ ॥
जाते जीव कालते बाँचे । सोई जतन करो गुरु साँचे ॥
कबीर वचन ।

तब हम कहा होहु निर्वाणा । राय मँगाव मिठाई पाना ॥
चौका जुगति करो सब साजा । देउ सार पद मेंटो लाजा ॥
नरियर धोती पान मँगाओ । महा कन्द ले तहाँ धराओ ॥

कलश लेश अरु पांचो बाती । साधु संत बैठे बहु भांती ॥
 कंचन झारी जल धरवाई । तापर खरचा सात चढाई ॥
 स्वेत चँदेवा स्वेत कनाता । सत्यपुरुष कह सूकृत बाता ॥
 सत्यलोक स्वेत है फूला । स्वेत सब देह जीवका मूला ॥
 स्वेत सिंहासन चौका चारी । सतगुरु बैठे आसन मारी ॥
 कदली पत्र मेवा संयूता । चन्दन श्वेत सुगन्ध बहुता ॥
 राजा सकल साज लइ आये । साधु संत बैठे सब आये ॥
 विधिपूर्वक शुभ चौक पुराया । हाथ जोरि ठाढा भयो राया ॥
 बोले साधु शब्द धुनि तबहीं । रानी राय चरण गहे जबहीं ॥
 राजा लीन्ह नारियर हाथा । बहुत जीव तहँ भये सनाथा ॥

राजावीरसिंह का सतगुरुकी स्तुति करना ॥
 करी दंडवत विन्ती कीना । हंस राज मोहि दर्शन दीना ॥
 धन्य भाग मम काह सराहू । हे प्रभु तुम हौ सत्य मम नाहू ॥
 छन्द-आनन्द कन्द सर्वज्ञ रूप अखित त्राता अविगतं ॥
 दास जानि दीजै अभय पद ज्ञानदाता अस्थितं ॥
 अविनाश सागर दयाके आगर धर्म कंटक मर्दनं ॥
 संशय खण्डन रिपुविहंडन अजर वीरा सुमिरावनं ॥
 सोरठा-अमर पुरी तुव बास, अमर स्वरूपी हंस जहँ ॥
 वास दीजिये दास, सुरतिवंत प्रभु कीजिये ॥
 कबीर बचन-चौपाई ।

करि चौका तब नरियर मोरा । करि आरती भयो पुनि भोरा ॥
 तिनका तोरि पान लिखि दयऊ । रानी राय अपन करि लियऊ ॥
 बहुतक जीवपान मम पाये । तावटे पुरुष नाम सत आये ॥
 जो कोइ हमारा बीरा पावे । बहुरि न योनी संकट आवे ॥
 बीरा पावे भवते छूटे । विनु बीरा यम धरि रलूटे ॥

सत्य कहूँ सुनु धर्मदासा । विनु बीरा पावै यम फांसा ॥
 बीरा पाय राय भय भागा । सत्य ज्ञान हृदयमें जागा ॥
 काल जाल तब सबै पराना । जब राजा पायो परवाना ॥
 गद्गद कंठ हरष मन बाढा । विन्ती करै राजा होय ठाढा ॥
 प्रेमाश्रु दोइ नयन ढरावै । प्रेमअधिकतावचन न आवै ॥

राजा बीरसिंहका स्तुति करना ।

करुणाग्मन मद्गुरु अभयमुक्तिधामी नाम हो ॥
 पुलकि सादर प्रेम वशहोय सुधरे सो जीवन काम हो ॥
 भवसिन्धु अति विकराल दारुण तासुनत्व बुझायऊ ॥
 अजर बीरा नाम दै मोहि पुरुष दरश करायऊ ॥
 सोरठा-राय चरणमहे धाय, लेचलियेवहि लोकरूको ॥
 जहवाँ हंस गहाय, जगमरण जेहि घर नहीं ॥

कबीर वचन ।

आदिअन्तजबनहींनिवासा । तब नहि दूसर हते अवासा ॥
 तौन नाम राजा कहूँ दीना । सकल जीव आपनकरिलीना ॥
 राय श्रवण जब नाम सुनायी । तब प्रतीति राया जिव आयी ॥
 सत्यपुरुष सत्यहै फूला । सत्य शब्द है जीवको मूला ॥
 सत्य द्वीप सत्य है लोका । नहीं शोकजहूँ सदा अशोका ॥
 सत्यनाम जीव जो पावै । सोई जीव तेहि लोकसमावै ॥
 ऐसो नाम सुहेला भाई । सुनतहिं काल जाल नशिजाई ॥
 सोई नाम राजा जो पाये । सत्य पुरुष दरशन चित लाये ॥
 साखी-ऐसो नामहै खसमका, रायसुरति करि लीन ॥
 हर्षित पहुँचे पुरुष घर, यमहिं चुनौटी दीन ॥

चौपाई ।

जब हंसा यम छेके आयी । चलत बेर निजनाम सुनायी ॥
 मंडल अखण्ड ब्रह्मण्डे बासा । नीर पवन हंस रहिवासा ॥

सुकृत जहां आपै शठिहारा । रतन पलीता दीपक बारा ॥
 फोडि ब्रह्माण्ड हंस घर जायी । दीप लेसि उजियार करायी ॥
 हंसा चले पुरुष दर्बारा । उघरे कूँची कुलुफ किवारा ॥
 तहँ हंसन रोकत हैं दूता । देखत तहाँ बहुत अजगूता ॥
 साखी-चले हंस सतलोकको, सुरति शब्द गहि डोर ॥
 दोय पाँजी के बीच में, बैठ काल तहँ चोर ॥

चौपाई ।

धरती माथ स्वर्गको नाका । तहाँ दोय पाँजी है बाँका ॥
 तहवाँ दूत रहत है भाई । पुरुषनाम सुनि निकट नआई ॥
 युगदानी ठाढे बटपारा । मागै देहू जीव हमारा ॥
 प्रथमहि हैं युगदानि जगाती । दूजे पाछे बज्जरघाती ॥
 तीजे मृत्यु अंध बटपारा । परलम्बित चौथे सरदारा ॥
 पँचयें दूत स्वयम्बर जानी । पांचो यम जिव छेदत आनी ॥
 जाघट नाम धनीका होई । सो हंसा नहिं बूझे सोई ॥
 नाम पान हृदये में गहई । सो हंसा यम सो निर्बहई ॥
 साखी-नहिं धरती न अकाश जब, नहीं हाट अरु बाट ॥

तबका खसम कवीर हैं, दूसर यमकी हाट ॥

राजा बीरसिंह वचन-चौपाई ।

साहब शब्द सार मोहि दीजे । आपन कवि प्रभुनिजकैलीजे ॥
 औघट घाटबाटकहि दीन्हा । पाँजी भेद सकल हम चीन्हा ॥
 दयावंत विन्ती सुनु मोगी । हम पुरुषा परं नरक अघोरी ॥
 महा कुटिल बड करमी रहिया । नात नरक अघोर बड पिया ॥
 ते जिव तारो अरज गुमाई । विन्ता करों रंककी नाई ॥
 भरमें जीवनको मुकताऊ । सो भाषों प्रभु शब्द प्रभाऊ ॥

कबीर वचन ।

अजरनाम चौका विस्तारो । जेहि ते पुरुषा तरै तुम्हारो ॥
गाव तुम्हारे ब्राह्मणि जाती । धोती कीन्ही बहुतै भांती ॥
बारी माहिं कपास लगायी । बहुत नेम से काति बनायी ॥
सो धोती तुम राजा लाऊ । पाछे चौका जुगुति बनाऊ ॥

राजा बीरसिंह वचन ।

तब राजा अस विन्ती कीन्हा । कैसे जान्यो को कहि दीन्हा ॥
ब्राह्मणि मन्दिर नगर रहायी । ताकी सुधि हमहूँ नहिं पायी ॥

कबीर वचन ।

तब राजा आपै चलि गयऊ । साथ एक नेगीकां लयऊ ॥
पूछत ब्राह्मणि राजा गयऊ । वही पुरीमें जाइ ठाढ रहेऊ ॥
राजा आवनसुनी जब सोई । आदर देन चली तब ओई ॥
माई पुत्री आगे चलि आई । दधि अक्षत औ लुटिया लाई ॥

ब्राह्मणी वचन ।

ब्राह्मणी कहै दोई कर जोरी । राजा सुनियै विन्ती मोरी ॥
भाग मोर हम दर्शन पावा । मैं बलिहारी यहाँ सिधावा ॥

राजा बीरसिंह वचन ।

राजा कह ब्राह्मणीसे बाता । तुव घर धोती एक रहाता ॥
सो धोती तुम हमको देहू । गावँ ठौर तुम हमसे लेहू ॥
एतो वचन जो राखु हमारा । धोती देइ करु काज निबारा ॥

ब्राह्मणी वचन ।

ब्राह्मणी कहै सुनो हो राऊ । धोती सुधितुहि कौन बताऊ ॥

राजा बीरसिंह वचन ।

हम घर सतगुरु कहि समझायी । धोती सुधि हम गुरुपै पाई ॥

कबीर वचन धर्मदास प्रति ।

वचन सुनत तेहि सुधि सो भूली । मन पछताय विनय मुख खोली

ब्राह्मणी वचन ।

छन्द-माइ पुत्री करइ विन्ती धोती नाथ अनाथकी ॥
गाव मुल्क नहिं चाहिं मोहिं धोती अहै जगन्नाथकी ॥
हम दीन हैं आधीन भिक्षुक शीस बरु मम लीजिये ॥
कर जोडि विन्ती मैं करूं जस चाहिये अब कीजिये ॥

कबीर वचन ।

सोरठा-राजा घरहिं सिधाइ, टेके चरणतहँ खसम कर ॥
कहे उत्तर समुझाय, धोती मांगे न दीनेऊ ॥

राजा बीरसिंह वचन-चौपाई ।

साहिब ब्राह्मणीलग हम गयऊ । धोती माँगत हम नहिंपयऊ ॥
कहे धोती मोहिदेइ न जायी । जगन्नाथ हेतु धोती बनायी ॥
कहे बरु शीस लेहु तुम राजा । धोती देत होय व्रत अकाजा ॥

कबीर वचन ।

एती सुनतै हम विहँसाये । राजा कहँ एकवचन सुनाये ॥
छरीदार दोय देहु पठायी । ब्राह्मणी संग क्षेत्रहीं जायी ॥
यहि प्रतीति लेहु तुम जाका । हम विनधोती लेइकोताका ॥
राजा छडीदार पठवाये । ब्राह्मणी संग क्षेत्रचलिजाये ॥
नरियर लेइ ब्राह्मणी हाथा । करि अस्नानपरसिजगन्नाथा ॥
लै धोती जब परस्यो जायी । तब धोती बाहर परि आयी ॥

ब्राह्मणी वचन ।

अब यह धोती काम न आयो । धोती फेरिकहो कस लायो ॥
जगन्नाथ वचन ।

जाके व्रत तुम काति बनायी । सो घर बैठे माँगि पठायी ॥
अब तुम अपने घर लैजाहू । लै धोती दैड़ालो काहू ॥

ब्राह्मणी वचन ।

तबै ब्राह्मणी कहै कर जोरी । ठाकुर सुनिये विन्ती मोरी ॥
राय वीरसिंह मो घर आये । धोती मांगि कवीर पठाये ॥
उनके मांगे में नहिं दीना । हम कहि जगन्नाथ व्रत कीना ॥
तब राजा अपने घर गयउ । हमलै धोती इहां सिधयउ ॥

जगन्नाथ वचन ।

जगन्नाथ तब कहि समझायो । तुम अपनीभलभाँतिनशायो ॥
उनके मांगे धोती देती । आपनजनम सुफल करलेती ॥

कवीर वचन ।

जगन्नाथ जसकहि समझायी । छडीदार सब लिये अर्थायी ॥
छडीदार अरु ब्राह्मणी आये । जहाँ राय अरु हम बैठाये ॥
ब्राह्मणी ले धोती धर दीनी । दियकरजोरिसो विन्तीकीनी

ब्राह्मणी वचन ।

हम अजान कछु जानन जायी । धोती नहिं दीनी मम पायी ॥

छडीदार वचन ।

छडीदार तब सीस नवाये । राजासे उठि विन्ती लाये ॥
जगन्नाथ धोती नहिं लीना । मंडप बाहर धोती कीना ॥
जगन्नाथ अस वचन सुनावा । यह धोती हम काम न आवा ॥
जब राजा से मांग पठाई । कसना धोती दीनेउ माई ॥
जब हममांगा तब नादियउ । अबकसदेनयहाँ चलि अयउ ॥

कवीर वचन ।

छडीदार उत्तर जब कहेउ । तबममचरणरायशिर लयउ ॥

राजावीरसिंह वचन ।

सांचे सद्गुरु हैं तुव बचना । सत्यलोककीसत्यहै रचना ॥
अब मोहि धनी सिखापनदीजै । हम पुरुषाआपन करिलीजै ॥
जाते अजर अमर पद पाई । सोई विधि तुम करोगुसाई ॥

कवीर बचन ।

जब हम राजहिं दीन बुझाई । अजर आरती साज मँगाई ॥
वीरसिंहराय तबसाजमंगावा । बहुत भांति पकवानबनावा ॥
मेवा भांति भांति मँगवायी । भांतिन भांति सुगन्धधरायी ॥
सकल सुगन्धखोजकरआने । फूलन माला बहुत ब्रखाने ॥
चौकाविस्तारथार मँगवायी । कोरा वासन आनि धरायी ॥
ततक्षन मन्दिर नये सँवारी । नये चन्होवा कंचन झारी ॥
पाँचो बाती कलस धरायी । ततछिन सकल भाज बनवायी ॥
अगर चौका तब करिदीना । मनप्रतीति राजा गहि लीना ॥
तबराजा अस्तुति अनुसार । बहुविधि विन्ती करे प्रचारा ॥
छन्द-अजरनामको कीन्ह चौकादिवसचारि विराजिके ॥

अजर सुमिरन कीन्ह ततक्षण पुरुष प्रकटे आनि के ॥
धनी जब ठाढे भये नृप दर्शन तबही लीन हो ॥
धाय राजा चरणगहे प्रभु अधम पावन कीन हो ॥

राजा वीरसिंह बचन ।

सोरठा-तुव चरणन बलिहार, पाछिलपुरुषा मम तरे ॥

धनि २ धनी हमार, कागाते हंसा किये ॥

कवीर बचन-चौपाई ।

यहि विधि प्राणी चौकाकरई । कुलमाहीं बहु हंसा तरई ॥
दिवस चारि चौका विस्तारे । तहुँवा आपखसम पगुधारे ॥
निशि वासरसुमिरेनिजनामा । छूटे पिण्ड चले निजधामा ॥
रहिहो राजा सुरति लगायी । यकटक ध्यानशब्द मनलायी ॥
शशिचक्रोरसमगुरु पदलागे । छूटे जनम मरण भ्रम भागे ॥
यही सिखापन राजहिं दीना । मनबच करमरायशिर लीना ॥

राजा वीरसिंहबचन ।

राजा रहे दोउ कर जोरी । साहब सुनियो विन्ती मोरी ॥

पुत्र व्याह कहँ आयसु पाऊँ । तौ साहब हम व्याह कराऊँ ॥
महा कठिनदोनो दिशिधारा । पुत्र काज हम तहाँ विचार ॥
कबीर बचन ।

आज्ञा लेइ रायदल साजा । साजि कटक बहुठाढभे राजा ॥
तब ममचरण शीस नृपलाये । कग्न विनय टेके गहि पाये ॥
राजा बीरसिंह बचन ।

विन्तीकीनरायभरि करुणा । नहिं जानू होयधोखे मरणा ॥
साहब रहिहो सदा सहाई । देह विदेह हंस मुकुताई ॥
कबीर बचन ।

तब हम हाथसीसतेहिदीना । करुणाकहा राय तुम कीना ॥
तुम तो राय हंस मम आहू । दीन आशीष निङ्गहोयजाहू ॥
चरण टेकि नृपभयेअसवारा । चले कटक जब पेलिनकारा ॥
बाजत बंब चले नृप जबहीं । भांतिभांतिबाजा बजे तबहीं ॥
साजिबरात राजाचलिययऊ । लीला एक रचत हम भयऊ ॥
तब हम तन तजि भये न्यारी । रानी चिता रचन मनधारी ॥
रानी बहुत शोच मनकीन्हा । राजा गये गुरू अस लीन्हा ॥
विजलीखाँसुनि आतुर धाये । चिता माँझते मुरदा लाये ॥
गोगबनायउनकीन निवाजा । कीन कटोरी बहुविधि साजा ॥
विजलीखाँ बचन ।

कहत पठान पीर भल लाये । नातो रानी देत जराये ॥
कबीर बचन ।

यहवाँ रानी हिय अकुलाती । बीरसिंह देवको भेजी पाती ॥
छन्द—भेजि रानी राय पाती सद्गुरु गये लोक सो ॥
नृप जात गुरु तन तजे मोहि देखभो बड शोक सो ॥
चिता रची मुर्दा धरी तब आय विजलीखान हो ॥
जोर करिकरि हमसोलेगये लगाडि गोरहिंदीनहो ॥

सोरठा-वेगि नृपति चलि आव, सतगुरु काया लीजिये॥
हँसे लोक बड चाव, नृप गुरु कहिकै म्लेच्छ सब ॥

कबीर वचन ।

पाती गही देखु जब राया । महाक्रोध आतुर चलि आया॥
डारत घृतहि हुताशन जैसे । रोम रोम पावक वरु तैसे ॥
चले सकल दल छोडि बराता । व्याकुल राय कहे तब वाता ॥

राजाबीरसिंह वचन ।

अरे दिवान सुनौ मतिवाना । वेगि चलौ गुरु कैसे ठाना ॥
बिजुली मारहु शत्रु हमारा । करी विचार बैठ हंकारा ॥

कबीर वचन ।

आतुर चले बाजि गज धाये । कूहुक बाण गहि लीन चढायें॥
खड्ग तुपक औ सेल कटारी । धनुष बान करि वेगि सवाँरी॥
कुहुक बाण हाथ करि लीना । अगनित बाजा बाजत दीना॥
ठाढा भांट अनेक पुकारे । गुण वरने चारन बहु पारे ॥
भेजे राय पाँति तेहि बारा । खोदि कबर गुरु देहु हमारा ॥
नहि तो विजली वचैन पाई । एक एक को मारि गिराई ॥
आई पाँति तब कहे पठाना । सुनि विजली गहि लीन कमाना ॥

विजलीखाँ वचन ।

हिन्दू काफिर पीर न पावे । जान माल जो सब गलिजावें॥

कबीर वचन ।

विजली खान सेना ले ठाढा । आपुन दीस बहुत बडगाढा॥
पीर आपना हम नहिं देते । विरसिंह राय करेगा केते ॥
तब हम रानी दर्शन दीना । मानिकदे चरणा मृत लीना ॥
छोटी है कमलापति रानी । सो मम चरण पखारे आनी॥
रानी राय कहा मोहि चीन्हा । मानुष विधितुम हमकुँ कीना॥
हाड मांस हमरे नहिं काया । काहे दोनों रार बढाया ॥

राय पठान दोनो गुरु भाई । काहे दोनो करें लडाई ॥
 पाती भेजहु राय पठाना । खोदिकबर देखो मतिवाना ॥
 गोर मांदि मुरदा जो होई । राय पठान लडो तुम दोई ॥
 जो मुर्दा तुम ढूँढ न पाओ । काहेको तुम गर बढाओ ॥
 मथुरा रतना कदोइन नारी । तिन बड प्रीति हमारी धारी ॥
 सात दिवस लागि अन्न न पावा । हमरे दग्ग को सुरति लगावा ॥
 ताको दर्शन दिये हम जाई । काहे मरो दोऊ गुरु भाई ॥
 अन्तर्धान तब हम होइ गयऊ । तत्क्षण रतना दर्शन पयऊ ॥
 यहँ पाती रानी पठवायी । राय देखि अचरज मन लायी ॥
 गये बाँचि जहँ रहै पठाना । सुनत पठान अचम्भो माना ॥
 सुनत सलाहकीन पुनि दोई । राय पठान आये सब कोई ॥
 आइ पठान गोर खुदवाई । देखो तहाँ देह नहिं पाई ॥
 भये अधीन देख सब लोगा । करुणा करहिं सकल भयो सोगा ॥
 छन्द-भये सुकृत उदास सबहीं रंक निधि जैसे हरयो ॥

धन्यगुरु कहा बंदना तब चीन्ह गुरु मम ना परचो ॥
 अमी पाय गुरु पंकज गहे सो काग होय मरालहो ॥
 पाय अस्थिर सदन निर्बध हंस होय बड भागहो ॥
 अखंड धर्म विराज सतगुरु जहाँ काल नहिं पहुँचहै ॥
 असंख्य रवि अरु कोटि दामिनि अग्र शोभा तहाँ सहै ॥
 दयासागर असहिं विराजत पुष्प सज्या सोहहीं ॥
 करहिं कलोहल हंस सबहीं पुरुष दरश विलोकहीं ॥
 सोरठा-षोडश रवि प्रभाव, चकोर उडगन पोहिया ॥
 श्रवण आहि रवि नाव, अमृत फल हंसा चुगे ॥
 चौपाई ।

गोर बनाय चले सब कोई । हिन्दू मुसलमान पुनि दोई ॥
 नाना भाँति करत सब सोभा । कंठीतिलक देखि सब लोभा ॥

धन्य राय धन्य पठाना । ऐसे गुरु पाये मतिवाना ॥
 ऐसे बहुत दिन गये विताई । रानी केरि अवधि नियराई ॥
 सुन्दरदेइ रानी कर नाऊ । पाये शब्द न प्रीति लगाऊ ॥
 शब्द पाइ गुरु प्रीति न लागी । विना प्रीति सतभक्ति न जागी ॥
 पाय शब्द नहिं कीन कमाई । ताते यम बहुते दुख लाई ॥
 चारि दूत हरि तबहि बुलावा । तासे सकल मता समुझावा ॥
 नगर गहो जाय नृप रानी । तहँवा जाय वेगितुम आनी ॥
 तब यम दूत गहि राजा गयऊ । जाय ठाढ मन्दिर में भयऊ ॥
 घट घट यम देखा व्योहारा । काया पैठि सो कीन विचारा ॥
 तब रानीके बेदन भयऊ । व्याकुल करी दूत चित रहऊ ॥
 राजा बूझे रानी बाता । कहे रानी मोहि नाहि सुहाता ॥
 एक बात सुनिये मम राई । साधु संत सब देहु बुलाई ॥
 राजा सकल साधु बुलवाये । सतगुरु भक्ति करो चित लाये ॥
 बाढ विथा रानीकी काया । ततछिन आप पुरुषहोय आया ॥
 तबहीं यम जिव घेरे आयी । अरध अरधस्वासाचलिधायी ॥
 भागि हंस त्रिकुटी में गयऊ । तहवाँ यम जिव घेरे लयऊ ॥
 चारो जीव यम घेरे लायी । काहे बल तुम बचिहो जायी ॥
 चलो हंस हरि कीन बुलाऊ । तब हंसा यक बचन सुनाऊ ॥
 यहवाँ कस आये बटपारा । हमरे हैं समरथ रखवाग्रा ॥
 हम घर गुरू खसम यकआही । सो मोहि नाम दीन बतलाही ॥
 दूत भत यम तोहि चिन्हार्ई । आज्ञा देइ खसम घर जाई ॥
 जे साहेब मोहि नाम सुनाया । सो आवं गुरु जाय लिवाया ॥
 साखी—तबही यम अस बोलिया, कहँ है धनी तुम्हार ॥
 नाकहँ वेगि बुलावहू, नहिं चलु हरि दरबार ॥

चौपाई ।

तब जिव यमसे कहवें लीना । साहब एक बचन कहि दीना ॥
 निगमके पार अगम के आगे । सो सतगुरु मम श्रवणहि लागे ॥
 धरनि अकाशते नगर निनाग । तहाँ विराजे धनी हमारा ॥
 जहँ नहि चन्द सूरकी कांती । तहाँ नहीं दिवस अरु राती ॥
 अगम शब्द जब भाषे नाऊ । तब यम जीवनि कट नहि आऊ ॥
 चलो जीव हरि ब्रह्मापासे । तुम्हरे धनी मोहि ना आसे ॥
 तबहीं हंसा कीन पुकारा । कहँवा हौ तुम धनी हमारा ॥
 मोसे यम कीनी बरि याई । कस नहि राखहु सद्गुरु आई ॥

छन्द-कीन जीव पुकार ततक्षण खसम वेगहि आइये ॥

वेग लागु गुहार सतगुरु हंस लोक पठाइये ॥

काहि करों पुकार साहब मातुपिता नहि कोइ जना ॥

करि ठिठाई मारि जीव यम झूठ जग महँ बन्धना ॥

सोरठा-लगे खसम गुहार, घाट घाट यम छेकिया ॥

कठिन परी यमधार, अति व्याकुल अकुलाय जिव ॥

चौपाई ।

तब सतगुरुका आसन डोला । काल दग्ध जिव व्याकुल बोला ॥

आइ खसम तब दर्शन दियऊ । चरण वन्दि हंसा तब लियऊ ॥

साहब देखि भगा यमराई । अति आतुर होय हरि पै जाई ॥

हरिहरवचन ।

हरिहर बृद्धे यम से बाता । कस नहि कियो जीवकी घाता ॥

दूतवचन ।

कहे यम स्वामी विन्ती मोरी । हम जिव छेकि कीन तेहि सोरी ॥

वह सुमिरे सतसुकृत नाऊ । सुनत पुकार धनी चलि आऊ ॥

आवत धनी भयो उजियारा । हम भागे चारो बटपारा ॥

कबीर वचन ।

वहाँ दूत पहुँचे हरि पासा । यहाँ जीव कहत सुखवासा ॥

जीववचन ।

विनय जीव सुनुबन्दी छोरा । हमकहँ कष्टदीन बड चोरा ॥
नाम तुम्हार बूझे यमराया । कहा नाम तब बचने पाया ॥
तब हमततछिन कीन पुकारा । बेगिहि आओ खसम हमारा ॥

ज्ञानी वचन ।

सुनो जीव नहिं शब्दहिं ध्यावा । राजा गुरु मानुष विसरावा ॥
गहे नाम अरु करे कमाई । तब यम दूत निकट ना आई ॥

जीव वचन ।

जेहि ते हंसको घर पठवायी । तौन नाम मोहि भाषि सुनायी ॥
जाते जीव अमर घर जावै । दूत भूत यम खबर न पावै ॥

कबीर वचन ।

साखी-गुप्त नाम मुख भाखिया, अकह अजर निजनाम ॥
अमर कृपा निधिजीव कूँ, पहुँचे जीव निज ठाम ॥

चौपाई ।

पहुँचे जीव खसमघर जबहीं । सुख आनन्द भये बड तबहीं ॥
कंचन कलस बरत तहँ बाती । आरति करे हंस बहुभाती ॥
देखत जीव हंस उजियारा । अंग अंग शोभा चमकारा ॥
देख द्वीपशोभावहु भाँती । रवि शशि मनि लागे जिमिपांती ॥
तामध्ये जिमिलाल जडाई । बीच बीच चुनि ले बैठाई ॥
मोतीलर झालरि बहुपोहा । देखत हंस रहे तहँ मोहा ॥
तबहिं पुरुष ज्ञानी हँकराई । कौन वचन तुम जीव सुनाई ॥
कौन वचन तुम जीवन दीना । जाते जीव अटक यम कीना ॥

ज्ञानी वचन ।

दोय कर जोरि कहे शठिहारा।मुक्तिवचन जिव डार विसारा॥
विसरे नाम छेके यम आर्या । भापि नाम यम जीव छुडायी॥

पुरुष वचन ।

आज्ञा जीव पुरुष हँकराई । कहो जीव कस कीन कमाई ॥
कैसे पहुँचे लोक हमारे । सत्य वचन सो कहो विचारे ॥

हंस वचन ।

मस्तक नाय हंस करजोरी । अमर पुरुष विन्ती यक मोरी ॥
हे साइव हम कछू न चीन्हा । गुरु कोवचनमानि शिर लीन्हा ॥
जादिनगुरु मोहि दीनेउ पाना । तब मैं जान्यो पद निर्बाना ॥
साधु गुरू मैं जान्यो एका । काम क्रोध मैं छोड्यो टेका ॥
साधु संत कर बन्देउ पायो । विसरचो नामगुरुमोहिसुनायो ॥
अब पुरी यम छेकेउ आयी । पलयकदुखमोहितहाँ दिखायी ॥

साखी-खसम आइ दर्शन दिये, दीना नाम सुनाइ ॥

तब आये हम लोक कूँ, यम शिर पाँव चढाइ ॥

चौपाई ।

जो नहिं नाम मुक्तिको पावे । माला डारि जगत बौरावे ॥
सुने नाम अरु करे कमाई । छाडे पाखण्ड अरु अधमाई
निर्मल काया होय संसारा । जाकहँ दया करे करतारा ॥
नाम कवीर जपे बड भागी । तन मन ले गुरुचरननलागी ॥
जापर दया जो होय तुम्हारी । ताकहँ कहा करहि बटपारी ॥
पुरुष दया जब होय सहायी । सत्यलोकमों जाय समायी ॥
छंद-पुरुष दायकीन ततछिन अटल काया तबभयो ॥

पुहुपदीपनिवासकीनासुमनसज्याआनन्दमयो ॥

हंसन शिर क्षत्र राजे अमृत फल आनन्द घना ॥
 रूप षोडश भानु हंसा कोटि शसिहिं अति बना ॥
 सोरठा-धाम जो पाय अमोल, हंसा सुख तहँ विलसहीं ॥
 द्वीपहिं द्वीप कलोल, जरा मरन भ्रम मेटिया ॥
 इति श्रीबोधसागरे कबीरधर्मदाससंवादे बीरसिंहबोधवर्णनो

नाम तृतीयस्तरंगः ॥

ग्रन्थ बीरसिंहबोध समाप्त ।



इति श्रीबोधसागरान्तर्गत
ग्रन्थ बीरसिंहबोध समाप्त ।

